वार्षिक प्रत्यावेदन
वर्ष 2023–24

राज्य कृषि प्रबन्धन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान, उत्तराखण्ड (समेटी-उत्तराखण्ड)

प्रसार शिक्षा निदेशालय

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय

पंतनगर–263145, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड

राज्य कृषि प्रबन्धन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान, उत्तराखण्ड

(समेटी–उत्तराखण्ड)

वार्षिक प्रतिवेदन : वर्ष 2023–24

संरक्षक

डा0 मनमोहन सिंह चौहान

कुलपति

गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर (ऊधम सिंह नगर), उत्तराखण्ड

निर्देशन

डा0 जितेन्द्र क्वात्रा

निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड

गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर (ऊधम सिंह नगर), उत्तराखण्ड

सम्पादन

डा0 बी0 डी0 सिंह

प्राध्यापक (सस्य विज्ञान), प्रसार शिक्षा निदेशालय

गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर (ऊधम सिंह नगर), उत्तराखण्ड

डा0 जितेन्द्र क्वात्रा

निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड

गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर (ऊधम सिंह नगर), उत्तराखण्ड

एवं

कु0 ज्योति कनवाल

यंग प्रोफेशनल–द्वितीय, समेटी–उत्तराखण्ड

सितम्बर, 2024

उद्धरण : बी0डी0 सिंह एवं जितेन्द्र क्वात्रा, वार्षिक प्रतिवेदन (वर्ष 2023–24), राज्य कृषि प्रबन्धन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान, उत्तराखण्ड, (समेटी–उत्तराखण्ड), प्रसार शिक्षा निदेशालय, गो0ब0 पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर (ऊधम सिंह नगर), उत्तराखण्ड, कुल पृष्ठ–74

ISBN : 978-93-91 664-44-2

संकलन एवं आलेख : डा० बी०डी० सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान), प्रसार शिक्षा निदेशालय, गो. ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर (ऊधम सिंह नगर) एवं कु० ज्योति कनवाल, यंग प्रोफेशनल–द्वितीय (समेटी), प्रसार शिक्षा निदेशालय, गो. ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर (ऊधम सिंह नगर), उत्तराखण्ड

प्रकाशक : प्रसार शिक्षा निदेशालय, गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर (ऊधम सिंह नगर), उत्तराखण्ड

सम्पर्क सं. : 05944–233336, ई–मेल sametiuttarakhand@gmail.com

डॉ. एम.एस. चौहान
एफ.एन.ए., एफ.एन.ए.एससी., एफ.एन.ए.ए.एस., एफ.एन.ए.डी.एस.
कुलपति
Dr. M. S. Chauhan
FNA, FNASc, FNAAS, FNADS
Vice-Chancellor

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय,
पंतनगर–263145, जिला–ऊधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड) भारत
G.B. Pant University of Agriculture & Technology,
Pantnagar-263145, Dist.-U.S. Nagar (Uttarakhand) India

प्राक्कथन

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर हरित क्रांति के जनक के रूप में विख्यात है। कृषि एवं सम्बन्धित तकनीकों को कृषकों के बीच लोकप्रिय बनाने हेतु विश्वविद्यालय द्वारा वर्ष में दो बार किसान मेला, कृषकों का विभिन्न शोध केन्द्रों पर भ्रमण सहित समय–समय पर अनेक कृषकोपयोगी प्रशिक्षण व प्रसार कार्यक्रम सम्पादित किये जाते रहते हैं। परम्परागत कृषि अभी भी उत्तराखण्ड विशेष रूप से पर्वतीय जनपदों में कृषकों के आजीविका का प्रमुख आधार है। उत्तराखण्ड के भौगोलिक परिदृश्य पर यदि नजर डालें तो यहां का एक बड़ा हिस्सा पर्वतीय क्षेत्र है, जहां की कृषि वर्षा आधारित, सीढ़ीनुमा व अल्प खेती योग्य भूमि, छोटे एवं सीमान्त जोत, स्थानीय फसलों की खेती आदि जैसी अनेक विचारणीय विषय है। यहां विभिन्न कृषि निवेश जैसे उर्वरक, कीट–रोग एवं खरपतवारनाशी रसायन का प्रयोग लगभग नगण्य होता है, जिसके कारण प्रति इकाई क्षेत्रफल से उपज भी बहुत कम मिलती है। अतः पर्वतीय क्षेत्रों में कृषि की विकसित तकनीक को कृषकों तक पहुँचाना वास्तविक चुनौती है। परन्तु आज के समय में लघु एवं मध्यम कृषकों के लिए कृषि आधारित व्यवसाय के अनेक विकल्प हैं, जिससे वे अपना जीवन स्तर बेहतर बना सकते हैं। विश्वविद्यालय उत्तराखण्ड के विभिन्न जनपदों में स्थित कृषि विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से विकसित तकनीकों को प्रदेश के दूरस्थ क्षेत्र के अन्तिम पायदान पर बैठे कृषकों तक पहुंचाने हेतु प्रतिबद्ध है।

समेटी–उत्तराखण्ड द्वारा रेखीय विभागों के अधिकारियों, प्रसार कार्यकर्ताओं तथा प्रगतिशील कृषकों के लिए स्वरोजगारपरक अनेक प्रशिक्षण कार्यक्रमों यथा पौधशाला प्रबन्धन, बाजार आधारित प्रसार, फल और सब्जियों का विपणन एवं प्रसंस्करण, औषधीय एवं सगन्ध पौध उत्पादन, बकरी पालन, मुर्गी पालन, मधुमक्खी पालन, मशरूम की खेती, कुक्कुट पालन, प्राकृतिक खेती व दुग्ध उत्पादन आदि आयोजित किये जाते हैं। वर्तमान में, इन प्रशिक्षणों से अनेक लाभार्थी स्वरोजगार सृजन करते हुए समाज में न सिर्फ प्रतिष्ठित कृषक अपितु कृषि के ज्ञान केन्द्र के रूप में अपनी पहचान बना रहे हैं।

हर्ष का विषय है कि राज्य कृषि प्रबन्धन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान (समेटी–उत्तराखण्ड), प्रसार शिक्षा निदेशालय, गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर समेटी का वार्षिक प्रतिवेदन : वर्ष 2023–24 सफल प्रकाशन किया जा रहा है। मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि यह रिपोर्ट कृषि, उद्यान, पशुपालन, मत्स्य एवं रेशम उत्पादन सम्बन्धी अधिकारी, प्रसार कर्मी व कृषकों हेतु लाभकारी होगी। इस प्रयास के लिए मैं रिपोर्ट के प्रकाशकों डा0 जितेन्द्र क्वात्रा, निदेशक प्रसार शिक्षा एवं डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक को हार्दिक बधाई देता हूँ।

(मनमोहन सिंह चौहान)

दूरभाष (कार्यालय) : 05944–233333, 7500122224, 9991652455 (मो0), फैक्स : 05944–233500 (कार्यालय)
E-mail : vcgbpuat@gmail.com, Website : www.gbpuat.ac.in

डा0 जितेन्द्र क्वात्रा
निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं
राज्य कृषि प्रबन्धन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान,
उत्तराखण्ड (समेटी–उत्तराखण्ड)

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय,
पंतनगर–263145, जिला–ऊधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड) भारत
G.B. Pant University of Agriculture & Technology,
Pantnagar-263145, Dist.-U.S. Nagar (Uttarakhand) India
दूरभाष (कार्यालय): 05944–233336
E-mail: dirextedugbp@gmail.com

आमुख

देश की लगभग 58 प्रतिशत आबादी के लिए कृषि, एक आजीविका का प्रधान स्रोत है और इसका सकल मूल्यवर्धन में लगभग 17 प्रतिशत का योगदान है। भारतीय खाद्य उद्योग मूल्यवर्धन की अपार संभावनाओं के साथ साल दर साल विश्व खाद्य व्यापार में अपना योगदान बढ़ा रहा है। देश में कृषि की नियोजित वृद्धि और सतत् विकास के लिए कृषि अनुसंधान और विकास अतिमहत्वपूर्ण कार्य हैं। विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिशद क्षेत्र आधारित शोध, शिक्षा, विस्तार और कृषि में नयी तकनीक के उपयोग को गति प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जहाँ तक पर्वतीय क्षेत्रों की बात है, वहां अभी भी पारम्परिक खेती की जाती है और कृषक आधुनिक कृषि तकनीक से अछूते हैं। यद्यपि पर्वतीय क्षेत्रों के अनेक कृषक विकसित कृषि तकनीक का प्रयोग करते हुए न सिर्फ अपने और अपने परिवार की आजीविका संवर्धन कर रहे हैं बल्कि समाज में अन्य कृषकों हेतु रोल मॉडल बनकर उभर रहे हैं। वास्तव में ये किसान ''कृषक से कृषक प्रसार'' के अद्भुत नमूने हैं, जिनके माध्यम से विकसित तकनीक का क्षैतिज विस्तार करते हुए कृषकों की आय में कई गुना वृद्धि किया जा सकता है। विशेषकर पर्वतीय कृषि उत्पादों का बड़े शहरों में निरन्तर मांग बढ़ रही है क्योंकि यहाँ के उत्पाद अपनी शुद्धता और गुणवत्ता के लिए पूरे देश में प्रख्यात हैं।

प्रदेश के प्रत्येक जनपद में स्थित कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों के कंधों पर इन कृषकों के विकास की बड़ी चुनौती है। निश्चित रूप से ये केन्द्र किसानों के आशाओं के अनुरूप विकसित तकनीक का निरन्तर प्रचार–प्रसार करते हुए इनके आजीविका संवर्धन हेतु सतत् प्रयत्नशील हैं। इन केन्द्रों द्वारा विकसित तकनीक का प्रयोग करते हुए अनेक कृषक आज मशरूम उत्पादन, प्राकृतिक एवं जैविक खेती, कुक्कुट पालन, मौन पालन, मत्स्य पालन, दलहन एवं तिलहन की खेती, प्राकृतिक संसाधनों का नियोजित प्रयोग आदि स्वरोजगारपरक कार्यक्रमों द्वारा लाभान्वित हो रहे हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि उन्नत तकनीक, केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा कृषकोपयोगी योजनाओं का गठजोड़ करते हुए कृषक अपनी आय बढ़ायें। विश्वविद्यालय एवं कृषि विज्ञान केन्द्र प्रदेश के दूरस्थ क्षेत्रों के अन्तिम पायदान पर बैठे कृषक के उत्थान हेतु कटिबद्ध है।

समेटी–उत्तराखण्ड इस दिशा में अनेक स्वरोजगारपरक एवं आय वृद्धि आधारित प्रशिक्षणों का आयोजन करती है। संस्थान इन प्रशिक्षणों द्वारा सम्पूर्ण उत्तराखण्ड के कृषकों के आजीविका सुधार एवं स्वरोजगार हेतु प्रेरित कर रही है। संस्थान द्वारा वार्षिक प्रतिवेदन : वर्ष 2023–24 का प्रकाशन किया जा रहा है। मुझे विश्वास है कि यह रिपोर्ट विभागीय अधिकारी, प्रसार कर्मी व कृषकों हेतु उपयोगी सिद्ध होगी। मैं इस रिपोर्ट के लेखक डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) एवं समन्वयक समेटी को उनके इस विशिश्ट प्रयास हेतु साधुवाद देता हूँ।

(जितेन्द्र क्वात्रा)

दूरभाष (कार्यालय): 05944-233336, E-mail: dirextedugbp@gmail.com

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	समेटी उत्तराखण्ड – परिचय	6
2.	समेटी उत्तराखण्ड : प्रगति सारांश (वर्ष 2023–24)	7
3.	प्रशिक्षणों की कार्ययोजना : वर्ष 2023–24	10
4.	आयोजित प्रशिक्षण में जनपदवार प्रतिभागियों की उपस्थिति	12
5.	आयोजित प्रशिक्षणों का संक्षिप्त विवरण	15
	अ. कार्ययोजनानुसार प्रशिक्षण	
5.1	उन्नत खरीफ फसलोत्पादन तकनीक	15
5.2	आय वृद्धि हेतु कुक्कुट पालन	16
5.3	उन्नत बकरी पालन	18
5.4	उन्नत पशुपालन एवं दुधारू पशुओं का प्रबन्धन	19
5.5	प्राकृतिक खेती	21
5.6	जैविक फसल एवं सब्जी उत्पादन तकनीक	23
5.7	ग्रामीण युवाओं हेतु स्वरोजगारपरक कुटीर उद्योग	25
5.8	फल एवं सब्जी प्रसंस्करण– एक लाभकारी व्यवसाय	27
5.9	औषधीय तथा सगन्ध पौध उत्पादन तकनीक एवं मूल्यवर्धन	29
5.10	रबी फसलोत्पादन उन्नत तकनीक	30
5.11	बाजार आधारित प्रसार	32
5.12	मौन पालनः स्वरोजगार का अतिरिक्त माध्यम	33
5.13	उन्नत मत्स्य पालन तकनीक	35
5.14	प्राकृतिक खेती	37
5.15	संरक्षित सब्जी उत्पादन	39
5.16	व्यावसायिक मशरूम उत्पादन	40
5.17	कृषि में इलेक्ट्रानिकी, सूचना एवं संचार क्रान्ति का उपयोग	42
5.18	पौधशाला प्रबन्धन	44
	ब. वित्त पोषित प्रशिक्षण	
5.19	महिला उद्यमिता विकास	46
5.20	प्रसार की विधियां एवं सोशल मीडिया का कृषि तकनीक हस्तांतरण में भूमिका	48
5.21	जैविक एवं प्राकृतिक खेती	50
5.22	डेयरी प्रबन्धन	51
6.	विभिन्न प्रशिक्षणों के दौरान कृषकों की प्रतिक्रिया/फीडबैक	56
	स. सफलता की कहानियाँ	
7.	कृषकों के आर्थिक समृद्धि में अहम भूमिका निभाती समेटी–उत्तराखण्ड	58
7.1	पशुपालन से आय अर्जन	58
7.2	आधुनिक कृषि से सफलता की राह	60
7.3	ड्रैगन फ्रूट लायी खुशहाली	62
7.4	उन्नत कृषि से खुशियों की उड़ान	64
7.5	जीरो से हीरो बनने का सफर	66
	द. विविध	
8.	डिप्लोमा कोर्स–डेसी (डिप्लोमा इन एग्रीकल्चरल एक्सटेंसन सर्विसेज फॉर इनपुट डीलर्स)	68
9.	प्रकाशित लेख	70
9.1	मैनेज पत्रिका–डेसी समाचार में प्रकाशित सफलता की कहानी	70
9.2	ई–बुक प्रकाशन	70
9.3	किसानों के लिए उपयोगी कृषि एडवायजरी	71
10.	कार्ययोजना : वर्ष 2024–25	72

1. राज्य कृषि प्रबन्धन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान (समेटी–उत्तराखण्ड)

प्रसार शिक्षा निदेशालय

गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर

1	संस्था का नाम व पता	:	राज्य कृषि प्रबन्धन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान, (समेटी–उत्तराखण्ड), प्रसार शिक्षा निदेशालय, गो0ब0 पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर–263145, जिला ऊधम सिंह नगर
2	परिचय	:	समेटी–उत्तराखण्ड की स्थापना सितम्बर 2005 में भारत सरकार के वित्तीय सहयोग से विस्तार सुधार कार्यक्रम के अर्न्तगत की गयी थी। राज्य स्तरीय यह स्वायत्त् संस्था सोसायटी अधिनियम 1860 के अन्तर्गत पंजीकृत है, जो निदेशक प्रसार शिक्षा, गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय के नेतृत्व में प्रसार शिक्षा निदेशालय पंतनगर विश्वविद्यालय से संचालित होती है। यह संस्थान कृषि की गतिविधियों को मजबूती प्रदान करने, प्रबन्धन संचार और सूचना प्रौद्योगिकी के संदर्भ में सभी कृषि आधारित रेखीय विभागों की मानव संसाधन जरूरतों को पूरा करता है। संस्थान राज्य के कृषि आधारित विभागों के मध्य एवं जमीनी स्तर से जुड़े कर्मचारियों/अधिकारियों के क्षमता निर्माण/विकास हेतु प्रशिक्षण आयोजित करता है.। प्रशिक्षण कार्यक्रम के विषय मुख्यतः नवीनतम कृषि प्रौद्योगिकी, प्रसार प्रबन्धन, प्रसार सुधार और सूचना प्रौद्योगिकी होते हैं। संस्थान राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबन्धन संस्थान (मैनेज) हैदराबाद के तकनीकी मार्गदर्शन में कार्य करता है।
3	सम्पर्क सूत्र	:	05944–233336, ई–मेल : direxтedugbp@gmail.com, sametiuttarakhand@gmail.com
4	संस्था का कार्यक्षेत्र	:	सम्पूर्ण उत्तराखण्ड
5	संस्था के उद्देष्य	:	(1) राज्य स्तर पर कृषि विस्तार प्रबन्धन संस्थान के रूप में कार्य करना (2) परियोजना नियोजन, आंकलन एवं संचालन के क्षेत्र में परामर्ष प्रदान करना (3) राज्य के कृषि एवं सम्बद्ध विभाग के मध्यम एवं जमीनी स्तर के प्रसार अधिकारियों एवं कृषक समुदाय के लिए आवश्यकता आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना। (4) सार्वजनिक एवं नीजी क्षेत्र के प्रसार अधिकारियों को प्रसार प्रबन्धन सम्बन्धी क्षेत्र में क्षमता विकास/निर्माण में मदद करना (5) मानव संसाधन के बेहतर प्रबन्धन के माध्यम से कृषि प्रसार सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार हेतु प्रबन्धन विधियों का विकास एवं इनके प्रयोग को प्रोत्साहन देना। (6) प्रशिक्षण कार्यक्रमों के संचालन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर कृषि प्रबन्धन, संचार एवं भागीदारी विधियों इत्यादि पर प्रबन्धन इकाई का विकास।
6	संस्था का कार्याधिकारी	:	डा0 जितेन्द्र क्वात्रा निदेशक, राज्य कृषि प्रबन्धन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान, उत्तराखण्ड एवं निदेशक प्रसार शिक्षा, गो0 ब0 पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर।
7	समन्वयक	:	डा. बी.डी. सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) प्रसार शिक्षा निदेशालय

2. समेटी–उत्तराखण्ड : प्रगति सारांश (वर्ष 2023–24)

पर्वतीय क्षेत्र की विशम भौगोलिक परिस्थितियों के कारण यहाँ का रहन सहन अत्यन्त कठिन होता है। छोटे–छोटे सीढ़ीनुमा विखरे खेत, छोटी जोत, वर्षा आधारित कृषि, उन्नत कृषि निवेशों पर सीमित व्यय, मौसम की मार, परम्परागत विधि से खेती, अधसड़े गोबर की खाद का प्रयोग, खरपतवार एवं कीट रोग का प्रकोप इत्यादि प्रायः खेती को अलाभकारी बना देती है। विगत कुछ वर्षो से जंगली जानवरों का प्रकोप से भी कृषक खेती से विमुख होते जा रहे है। दूसरी तरफ उन्नत कृषि तकनीक का प्रयोग कर अनेक काश्तकार खेती को लाभकारी बनाने के साथ–साथ समाज में अपना उत्कृष्ट स्थान भी बना रहे हैं। ऐसे कृषकों को सरकार किसान श्री, किसान भूषण एवं किसान रत्न जैसे सम्मानों से विभूषित भी कर रही है। वर्तमान में उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्र के किसी भी गांव में जाने पर अनेक ऐसे कृषक मिल जायेंगे, जिनमें से कोई मशरूम उत्पादन, मत्स्य पालन, मौन पालन, बेमौसमी सब्जी उत्पादन, जैविक खेती, कुक्कुट पालन, दुग्ध उत्पादन जैसे तकनीक को अपनाकर अपनी आय में कई गुना बढ़ोत्तरी कर रहे हैं। ऐसे सभी कृषक कहीं न कहीं जैसे कृषि विज्ञान केन्द्र, विभाग अथवा शोध केन्द्र से प्रशिक्षण प्राप्त कर स्वरोजगार अपना रहे हैं।

समेटी द्वारा कृषि एवं सम्बन्धित विभागों के अधिकारियों हेतु कृषकों के आय संवर्धन, कृषि आधारित स्वरोजगार को दृष्टिगत रखते हुए कृषि निदेशालय, देहरादून एवं विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों से विचार–विमर्श करते हुए कुल 18 प्रशिक्षणों का प्रस्ताव स्वीकृत कराया गया। मुख्यतः प्रशिक्षण के विषय उन्नत खरीफ फसलोत्पादन, कुक्कुट पालन, बकरी पालन, पशुपालन, प्राकृतिक खेती, सब्जी उत्पादन, औशधीय तथा सगन्ध पौध उत्पादन तकनीक, बाजार आधारित प्रसार, मौन पालन, मत्स्य पालन, व्यावसायिक मशरूम उत्पादन एवं पौधशाला प्रबन्धन इत्यादि समावेशित थे। स्वीकृत कार्ययोजना के 18 प्रशिक्षणों के सापेक्ष सभी प्रशिक्षण आयोजित किये गये, जिससे कुल 386 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। संस्थान द्वारा मैनेज, हैदराबाद के सहयोग से वर्चुअल मोड में 'महिला उद्यमिता विकास' एवं 'डेयरी प्रबन्धन' विषयक प्रशिक्षणों का आयोजन क्रमशः मई 16–19, 2023 एवं फरवरी 26–28, 2024 को किया गया, जिससे 81 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। प्रसार प्रशिक्षण संस्थान, नीलोखेड़ी, हरियाणा के वित्तीय सहयोग से प्रशिक्षण प्रसार की विधियाँ एवं सोशल मीडिया का कृषि तकनीक हस्तांतरण में भूमिका विषयक प्रशिक्षण अगस्त 22–25, 2023 को किया गया, जिसमें प्रदेश के विभिन्न जनपदों से 50 कृषि प्रसार अधिकारियों ने प्रतिभाग किया। संस्थान एवं राष्ट्रीय जैविक एवं प्राकृतिक खेती केन्द्र, गाजियाबाद के संयुक्त तत्वाधान में प्रसार अधिकारियों एवं कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों हेतु 'जैविक एवं प्राकृतिक खेती' पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन सितम्बर 25–26, 2023 तक किया गया, जिसमें विभिन्न जनपदों के उप परियोजना निदेशक, ब्लाक तकनीकी प्रबन्धक तथा कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों सहित कुल 21 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस प्रकार वर्ष 2023–24 में समेटी व वित्त पोशित प्रशिक्षणों से कुल 538 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। इन प्रशिक्षणों में उत्तराखण्ड के समस्त जनपदों से कृषि, उद्यान, पशुपालन, मत्स्य विभाग के प्रसार कार्यकर्ता, आतमा के पदाधिकारी एवं प्रगतिशील कृषकों द्वारा प्रतिभाग किया गया। प्रत्येक प्रशिक्षण में प्रतिभागियों को कक्षा में पढ़ाई के साथ–साथ व्यावहारिक क्षमता विकास हेतु विषय से सम्बन्धित प्रायोगिक कक्षाएं एवं विश्वविद्यालय के विभिन्न शोध केन्द्रों का भ्रमण भी कराया गया। विभिन्न प्रशिक्षणोपरान्त फीड बैक में प्रतिभागियों ने बताया कि यहाँ से सीखे उन्नत कृषि विधाओं को वे कृषकों के बीच ले जायेंगे, तकनीक का प्रचार प्रसार एवं क्षेत्रफल विस्तार कराने का भरपूर प्रयास करेंगे, जिससे कृषक के आय वृद्धि एवं समृद्धि का सपना साकार हो सके।

प्रकाशन के अन्तर्गत ''मैनेज'' हैदराबाद से प्रकाशित पत्रिका डेसी समाचार Issue-II, Vol.-III (मार्च–अप्रैल, 2023) में ऊधम सिंह नगर के इनपुट डीलर श्री राजकुमार हुरिया जी की सफलता की कहानी "DAESI – A path finder for Input Dealers" प्रकाशित हुई। समेटी एवं मैनेज, हैदराबाद द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित प्रशिक्षण सम्बन्धी ई–बुक "Dairy Management for Livelihood Support of Farmers" ISBN No. 978-81-19663-41-5 प्रकाशित की गयी। प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा त्रैमासिक पत्रिका ''पंत प्रसार संदेश'' एवं समेटी वार्षिक प्रशिक्षण कार्यक्रम (2024–25) के फोल्डर प्रकाशित किये गये। दो कृषि सम्बन्धित लेख ''समेटी–उत्तराखण्ड : कृषक उत्थान में एक हितकारी स्तंभ'' एवं ''कृषि निवेश वितरकों हेतु मील का पत्थर साबित होता डिप्लोमा कोर्स–डेसी'' प्रकाशन हेतु प्रेषित किये गये हैं। कृषकों हेतु उपयोगी 'समसामयिक कृषि कार्य' सम्बन्धी 10 कृषि समाचार स्थानीय अखबार में प्रकाशित किये गये। पी.जी.डी.ए.ई. एम. का 16वाँ बैच सफलतापूर्वक सम्पन्न किया गया।

Executive Summary

The limitations of hill agriculture are small and scattered land holdings, rainfed agriculture, terrace farming, less investment in agriculture, unpredictable weather conditions, traditional farming, least use of improved farm implements, use of undecomposed FYM, heavy infestation of weeds and insect pest. Wild animals are emerging as one of the major enemy of hill agriculture leading to turning of farmers in other occupation. However, apart from above, many farmers are using improved cultivation practices of farming and are becoming role model for other farmers. Government is also honouring these farmers by the awards like Kisan Shree, Kisan Bhushan and Kisan Ratna etc. for their moral boost up. Such many farmers can be seen in Kumaon and Garhwal regions who are increasing their income many folds by the adoption of agricultural enterprises like mushroom production, fish farming, bee keeping, protected cultivation, organic farming, poultry and dairy farming etc.

Capacity building is one of the important factor in improving the livelihood support of farmers. Realising this, SAMETI used to organize need based and income generating trainings. With the consent of Directorate of Agriculture/State Nodal Officer-ATMA, Dehradun and other agricultural scientists, SAMETI-Uttarakhand has taken the approval for 18 need-based trainings through various agricultural department i.e. livestock production, fisheries, goat farming, organic farming, poultry, commercial mushroom cultivation, medicinal and aromatic plants production, market led extension, bee keeping, protected cultivation, commercial floriculture and nursery management. Out of total 18 approved trainings, all were organized through which 386 trainees benefitted.

The institute had organized online training on 'Women Entrepreneurship' and 'Dairy Management' during May 16-19, 2023 and February 26-28, 2024 respectively by which 81 trainees were benefited. Training on 'Extension Methodology and Social Media Skills in Transfer of Technology' was organized by SAMETI-Uttarakhand in collaboration with Extension Education Institute, Nilokheri, Haryana during August 22-25, 2023. A total of 50 Deputy Project Directors, ATMA and Block Technical Managers from different block of different districts had attended the training. Training on 'Organic and Natural Farming' was organized by SAMETI-Uttarakhand in collaboration with NCONF, Ghaziabad during September 25-26, 2023. A total of 21 Deputy Project Directors, ATMA, Block Technical Managers and Scientists from KVKs of Uttarakhand had participated. So, including sponsored trainings, total 538 extension officers, agriculture scientists and progressive farmers were benefitted. In each training, all the trainees had visited different research centres of university for gaining practical knowledge (hands on skill) along with the theoretical knowledge. Feedback is very important aspect after training. In this regard, many trainees told that the knowledge and skill experienced here will be the boon for transferring technologies and area expansion and finally livelihood support of farming community.

As far as publication is concerned success story "DAESI – A path finder for Input Dealers" of input dealer Sri Rajkumar Huria was published in DAESI Samachar, Issue II, Vol. III published from MANAGE, Hyderabad. An e-book "Dairy Management for Livelihood Support of Farmers" was jointly published by SAMETI-Uttarakhand and MANAGE, Hyderabad with ISBN No. 978-81-19663-41-5. Quarterly hindi magazine "Pant Prasar Sandesh" published by Directorate of Extension Education, G.B. Pant University of Agriculture & Technology, Pantnagar and pamphlet consisting of SAMETI Annual Training Calendar 2024-25 were also published. Two popular articles ''समेटी–उत्तराखण्ड : कृषक उत्थान में एक हितकारी स्तंभ'' and ''कृषि निवेश वितरकों हेतु मील का पत्थर साबित होता डिप्लोमा कोर्स ''डेसी'''' has been communicated for publication. "Sixteenth Batch of PGDAEM" 2022-23 has been successfully completed.

समेटी–संगठनात्मक संरचना

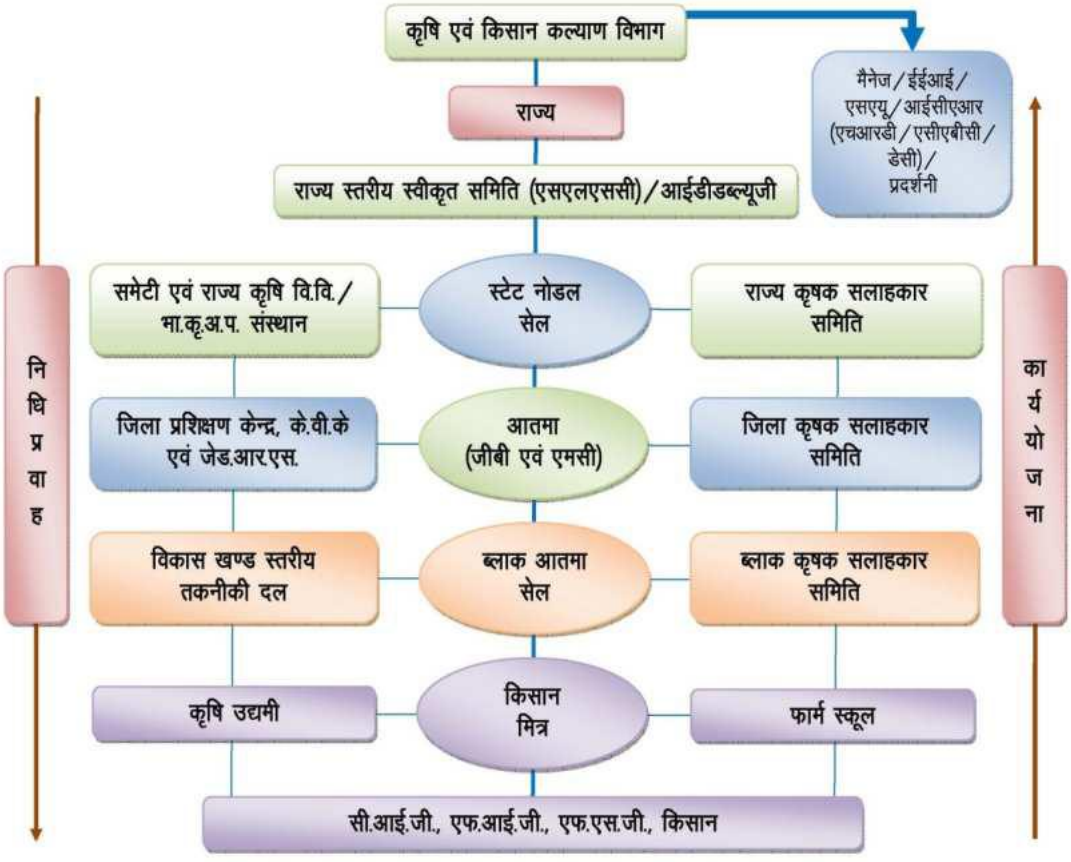

समेटी का विभागों के साथ समन्वयन

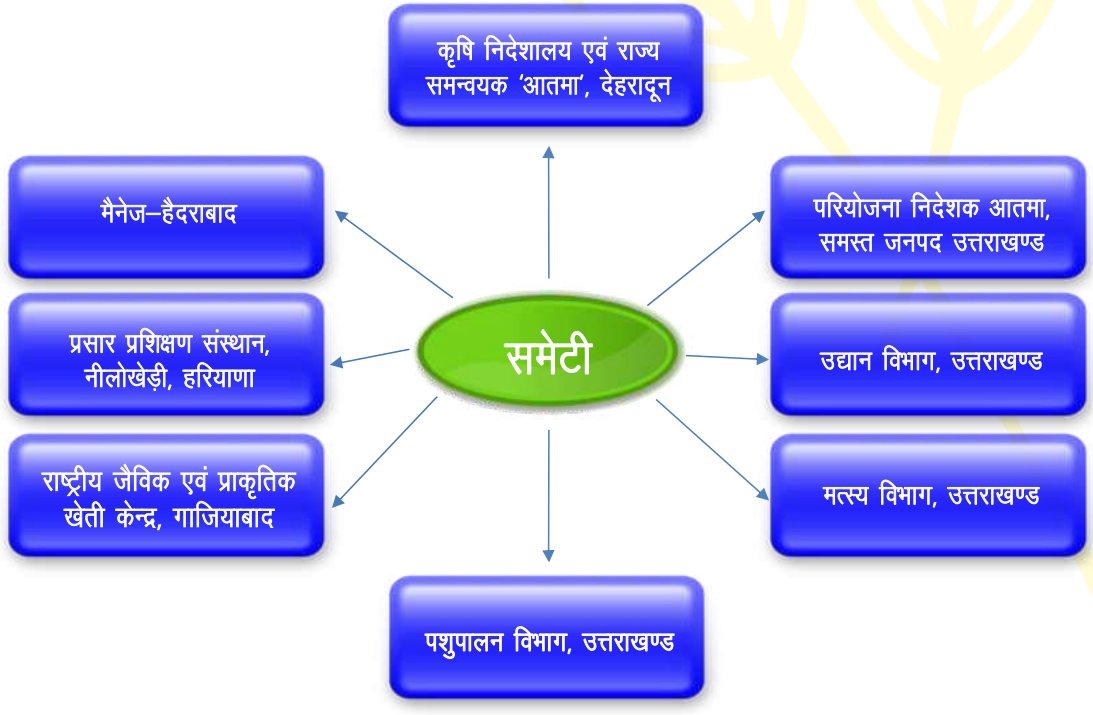

3. प्रशिक्षणों की कार्ययोजना : वर्ष 2023–24

क्र. सं.	विषय	दिनांक/अवधि	विभाग	प्रतिभागियों की संख्या	प्रतिभागी
अप्रैल, 2023					
1.	उन्नत खरीफ फसलोत्पादन तकनीक	अप्रैल 27–29, 2023 (तीन दिन)	कृषि विभाग	30	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 अधिकारी/प्रसार कार्यकर्ता/प्रगतिशील कृषक
मई, 2023					
2.	आय वृद्धि हेतु कुक्कुट पालन	मई 10–13, 2023 (चार दिन)	पशुपालन विभाग	30	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 कुक्कुट फार्म स्कूलों के संचालक, पशुधन प्रसार अधिकारी, बी.टी.एम., कुक्कुट पालक
3.	उन्नत बकरी पालन	मई 25–27, 2023 (तीन दिन)	कृषि/उद्यान/पशुपालन विभाग	30	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 प्रगतिशील कृषक एवं विभागीय अधिकारी
जून, 2023					
4.	उन्नत पशुपालन एवं दुधारू पशुओं का प्रबन्धन	जून 07–10, 2023 (चार दिन)	पशुपालन/दुग्ध विकास विभाग	30	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 प्रगतिशील पशुपालक, आतमा/पशुपालन विभाग के अधिकारी
5.	प्राकृतिक खेती	जून 21–23, 2023 (तीन दिन)	उद्यान विभाग	30	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 प्रगतिशील कृषक एवं विभागीय अधिकारी
जुलाई, 2023					
6.	जैविक फसल एवं सब्जी उत्पादन तकनीक	जुलाई 05–08, 2023 (चार दिन)	कृषि/उद्यान विभाग	30	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 विभागीय अधिकारी, आतमा के अधिकारी एवं प्रगतिशील कृषक आदि
7.	ग्रामीण युवाओं हेतु स्वरोजगारपरक कुटीर उद्योग	जुलाई 19–22, 2023 (चार दिन)	कृषि/उद्यान/सहकारी विभाग	30	कृषि/उद्यान/सहकारी विभाग के अधिकारी/आतमा एवं प्रगतिशील कृषक
अगस्त, 2023					
8.	फल एवं सब्जी प्रसंस्करण–एक लाभकारी व्यवसाय	अगस्त 09–12, 2023 (चार दिन)	उद्यान विभाग	30	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 सब्जी/फल उत्पादक कृषक एवं उद्यान विभाग/आतमा के अधिकारी
सितम्बर, 2023					
9.	औषधीय तथा सगन्ध पौध उत्पादन तकनीक एवं मूल्यवर्धन	सितम्बर 13–16, 2023 (चार दिन)	उद्यान विभाग	30	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 नर्सरी पालक, आतमा के अधिकारी, उद्यान/कृषि विभाग के अधिकारी एवं प्रगतिशील कृषक

क्र. सं.	विषय	दिनांक/अवधि	विभाग	प्रतिभागियों की संख्या	प्रतिभागी
10.	रबी फसलोत्पादन उन्नत तकनीक	सितम्बर 21–23, 2023 (तीन दिन)	कृषि/उद्यान विभाग	30	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 कृषि विभाग/आतमा के अधिकारी एवं प्रगतिशील कृषक
अक्टूबर, 2023					
11.	बाजार आधारित प्रसार	अक्टूबर 19–21, 2023 (तीन दिन)	कृषि/उद्यान विभाग	30	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 प्रगतिशील कृषक/उद्यान/कृषि/आतमा के अधिकारी
नवम्बर, 2023					
12.	मौन पालनः स्वरोजगार का अतिरिक्त माध्यम	नवम्बर 01–04, 2023 (चार दिन)	कृषि/उद्यान विभाग	30	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 मधुमक्खी पालक/उद्यान/कृषि/आतमा के अधिकारी
दिसम्बर, 2023					
13.	उन्नत मत्स्य पालन तकनीक	दिसम्बर 06–09, 2023 (चार दिन)	मत्स्य पालन विभाग	30	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 प्रगतिशील मत्स्य पालक/विभागीय अधिकारी
14.	प्राकृतिक खेती	दिसम्बर 21–23, 2023 (तीन दिन)	उद्यान विभाग	30	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 सब्जी/फल उत्पादक कृषक, आतमा/उद्यान विभाग के अधिकारी एवं प्रगतिशील कृषक
जनवरी, 2024					
15.	संरक्षित सब्जी उत्पादन	जनवरी 10–13, 2024 (चार दिन)	उद्यान विभाग	30	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 सब्जी उत्पादक, प्रगतिशील कृषक, सब्जी के फार्म स्कूल संचालक/उद्यान /आतमा के अधिकारी
16.	व्यावसायिक मशरूम उत्पादन	जनवरी 17–20, 2024 (चार दिन)	कृषि/उद्यान विभाग	30	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 मशरूम उत्पादक, उद्यान, आतमा के अधिकारी एवं प्रगतिशील कृषक आदि
फरवरी, 2024					
17.	कृषि में इलेक्ट्रानिकी, सूचना एवं संचार क्रान्ति का उपयोग	फरवरी 21–23, 2024 (तीन दिन)	कृषि विभाग	30	बागेश्वर, चम्पावत, रूद्रप्रयाग से 2–2 एवं शेष जनपदों से 3–3 कृषि विभाग के अधिकारी, प्रगतिशील कृषक आदि
मार्च, 2024					
18.	पौधशाला प्रबन्धन	मार्च 20–22, 2024 (तीन दिन)	समस्त रेखीय विभाग	30	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 नर्सरी पालक एवं विभागीय अधिकारी

4. प्रशिक्षणों में जनपदवार प्रतिभागियों की उपस्थिति

क्र.सं.	प्रशिक्षण विषय	प्रशिक्षण अवधि	जनपदवार प्रशिक्षणार्थियों की उपस्थिति													योग (प्रशिक्षणार्थी)
			नैनीताल	देहरादून	हरिद्वार	ऊ.सिं.नगर	अल्मोड़ा	उत्तरकाशी	पौड़ी गढ़वाल	टिहरी गढ़वाल	चम्पावत	पिथौरागढ़	चमोली	रूद्रप्रयाग	बागेश्वर	
1	उन्नत खरीफ फसलोत्पादन तकनीक	अप्रैल 27–29, 2023	-	-	-	13	-	-	-	-	-	-	-	-	-	13
2	आय वृद्धि हेतु कुक्कुट पालन	मई 10–13, 2023	10	1	4	11	4	-	-	-	-	-	-	-	-	30
3	उन्नत बकरी पालन	मई 25–27, 2023	17	2	5	32	3	-	-	-	-	-	-	-	-	59
4	उन्नत पशुपालन एवं दुधारू पशुओं का प्रबन्धन	जून 07–10, 2023	5	1	6	16	4	-	-	-	-	-	-	-	-	32
5	प्राकृतिक खेती	जून 21–23, 2023	-	-	-	6	7	-	-	-	-	-	-	-	-	13
6	जैविक फसल एवं सब्जी उत्पादन तकनीक	जुलाई 05–08, 2023	3	-	-	4	3	1	1	-	-	-	3	-	-	15
7	ग्रामीण युवाओं हेतु स्वरोजगारपरक कुटीर उद्योग	जुलाई 19–22, 2023	7	-	-	6	5	-	4	-	-	-	-	-	-	22
8	फल एवं सब्जी प्रसंस्करण– एक लाभकारी व्यवसाय	अगस्त 09–12, 2023	7	-	-	7	4	-	-	-	2	-	2	9	-	31
9	औषधीय तथा सगन्ध पौध उत्पादन तकनीक एवं मूल्यवर्धन	सितम्बर 13–16, 2023	-	-	-	2	-	-	6	-	-	-	-	-	-	08
10	रबी फसलोत्पादन उन्नत तकनीक	सितम्बर 21–23, 2023	1	-	-	10	3	-	1	-	-	-	-	2	-	17
11	बाजार आधारित प्रसार	अक्टूबर 19–21, 2023	4	-	-	3	4	-	-	-	-	1	-	-	-	12
12	मौन पालनः स्वरोजगार का अतिरिक्त माध्यम	नवम्बर 01–04, 2023	3	-	-	2	5	-	4	-	-	-	2	-	-	16
13	उन्नत मत्स्य पालन तकनीक	दिसम्बर 06–09, 2023	2	2	3	8	3	-	2	-	2	-	-	1	-	23
14	प्राकृतिक खेती	दिसम्बर 21–23, 2023	1	-	-	8	2	-	3	-	-	2	-	-	-	16
15	संरक्षित सब्जी उत्पादन	जनवरी 10–13, 2024	3	-	-	1	4	-	-	-	-	-	-	-	-	08
16	व्यावसायिक मशरूम उत्पादन	जनवरी 17–20, 2024	2	-	4	14	3	-	-	1	-	-	-	-	1	25
17	कृषि में इलेक्ट्रानिकी, सूचना एवं संचार क्रांति का उपयोग	फरवरी 21–23, 2024	2	-	-	8	3	-	-	-	3	-	-	8	-	24
18	पौधशाला प्रबन्धन	मार्च 04–06, 2024	3	-	2	4	3	-	8	-	-	-	2	-	-	22
		कुल योग	70	06	24	155	60	01	29	01	07	03	09	20	01	386

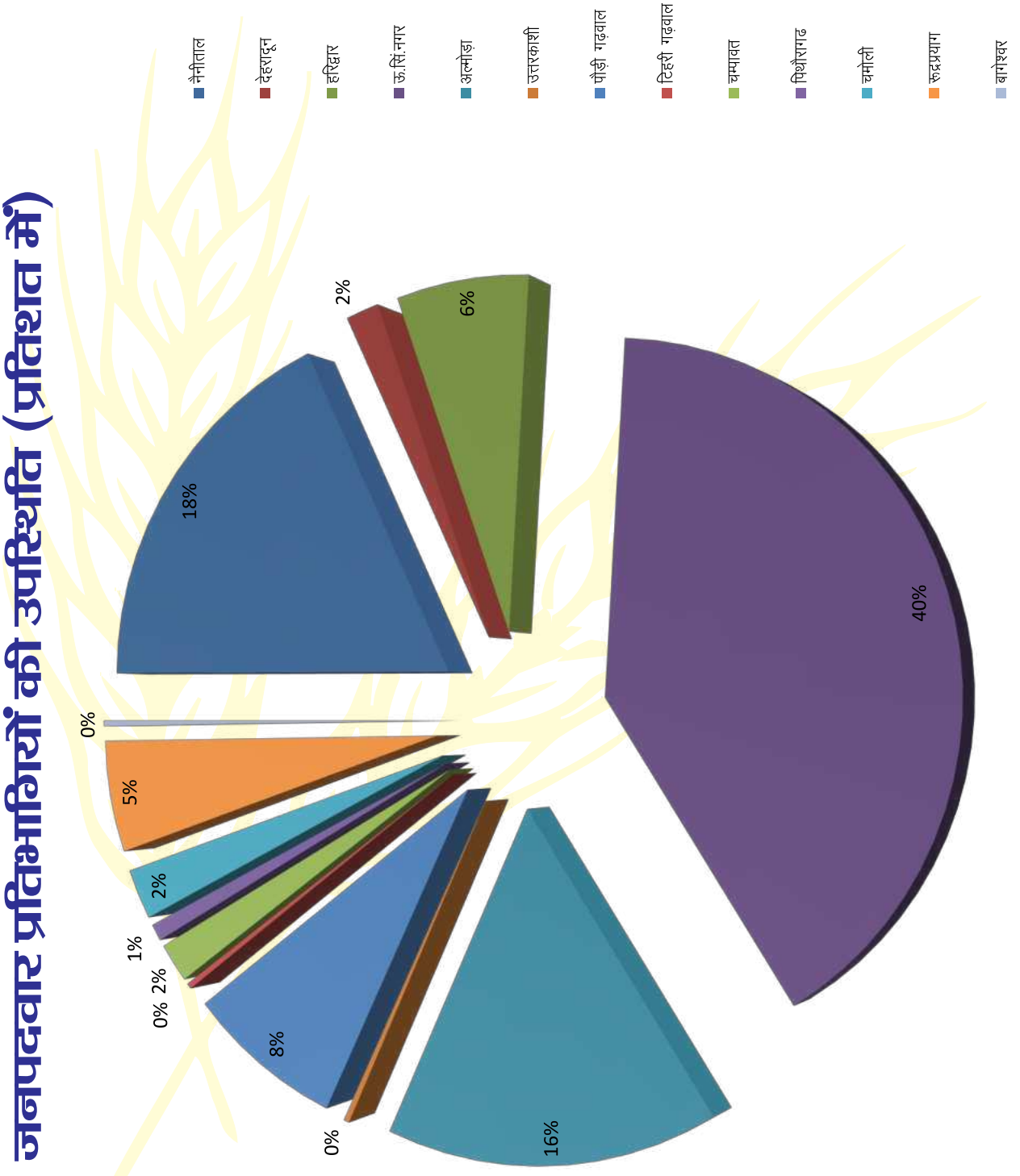
जनपदवार प्रतिभागियों की उपस्थिति (प्रतिशत में)
नैनीताल
देहरादून
हरिद्वार
ऊ.सि.नगर
अल्मोड़ा
उत्तरकाशी
पौड़ी गढ़वाल
टिहरी गढ़वाल
चम्पावत
पिथौरागढ
चमोली
रुद्रप्रयाग
बागेश्वर
18%
2%
6%
40%
16%
0%
8%
0% 2%
1%
2%
5%
0%

प्रशिक्षण में गढ़वाल मंडल के प्रतिभागियों की उपस्थिति

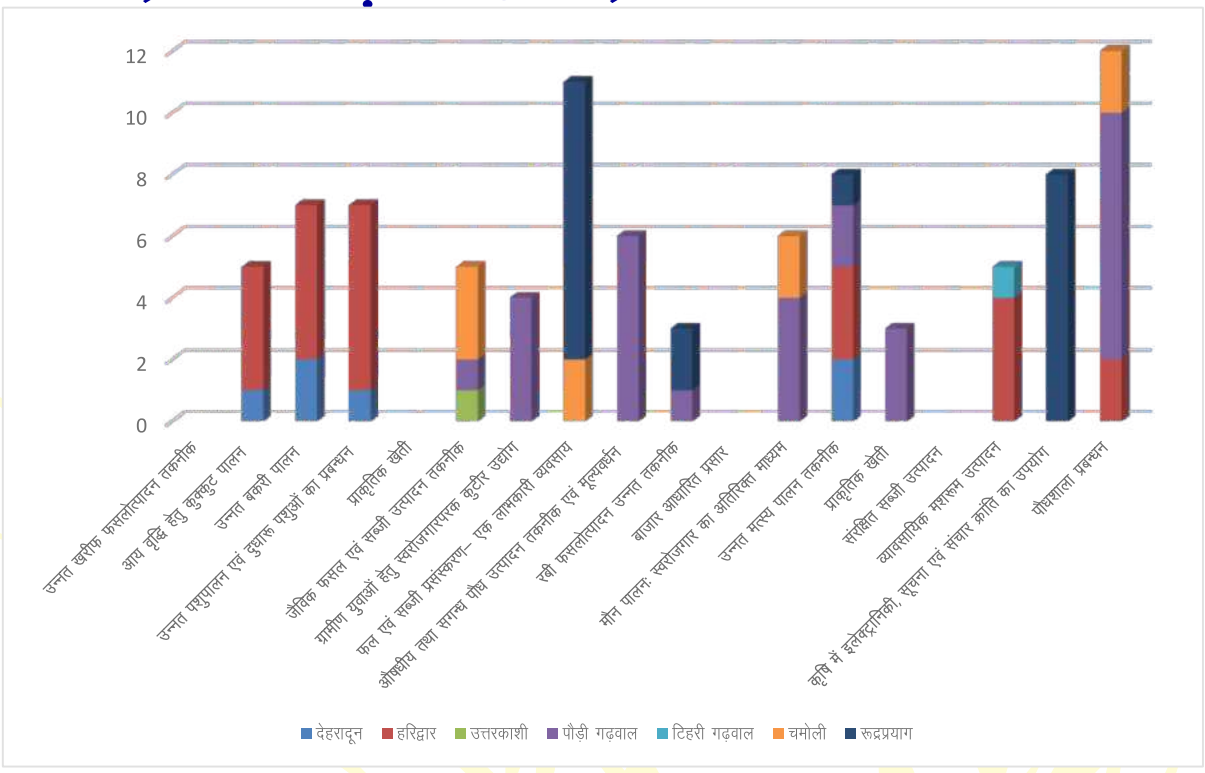

प्रशिक्षण में कुमाऊँ मंडल के प्रतिभागियों की उपस्थिति

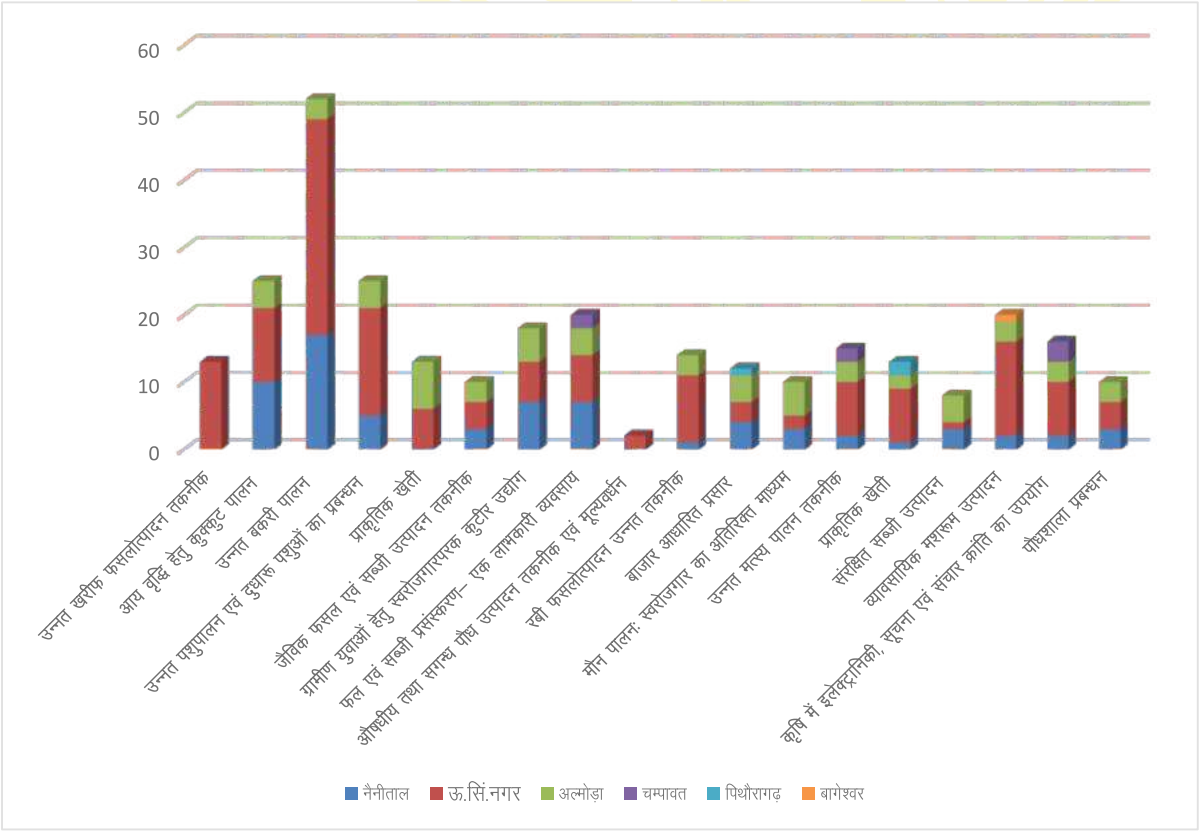

5. आयोजित प्रशिक्षणों का संक्षिप्त विवरण

अ. कार्ययोजनानुसार प्रशिक्षण

5.1 उन्नत खरीफ फसलोत्पादन तकनीक

कृषि विभाग के अधिकारी एवं प्रगतिशील कृषकों हेतु 'उन्नत खरीफ फसलोत्पादन तकनीक' विषयक प्रशिक्षण अप्रैल 27–29, 2023 को आयोजित किया गया। प्रशिक्षण के उद्घाटन अवसर पर निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड ने कहा कि उन्नत प्रजातियों एवं सस्य विधियों को अपनाकर किसान पैदावार में पर्याप्त वृद्धि एवं आय में बढ़ोत्तरी कर सकते हैं। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत धान उत्पादन हेतु उन्नत सस्य विधियाँ, खरीफ दलहन उत्पादन की उन्नत तकनीकी, खरीफ फसलों में समन्वित पोषक तत्व प्रबन्धन, मक्का उत्पादन तकनीक, खरीफ तिलहन उत्पादन की उन्नत तकनीकी, मोटे अनाजों के उत्पादन की उन्नत तकनीकी, जैविक खरीफ फसलोत्पादन तकनीक, खरीफ फसलों के प्रमुख खरपतवार एवं उनका प्रबन्धन, खरीफ फसलों के प्रमुख रोग एवं उनका समन्वित प्रबन्धन, खरीफ फसलों

प्रक्षेत्र भ्रमण करते प्रशिक्षणार्थी

के प्रमुख कीट एवं उनका समन्वित प्रबन्धन एवं प्रमुख पर्वतीय खरीफ फसलें एवं उनके उत्पादन तकनीक इत्यादि विषयों पर व्याख्यान दिये गये। प्रतिभागियों के प्रायोगिक क्षमता विकास के उद्देश्य से इनका फसल अनुसंधान केन्द्र के भ्रमण के साथ–साथ ट्रीट इकाई का भी भ्रमण कराया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 13 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

समय	विवरण	वार्ताकार	मोबाइल नं0
अप्रैल 27, 2023			
9.30–9.40	पंजीकरण	यंग प्रोफेशनल–द्वितीय	
9.40–10.00	उद्घाटन कार्यक्रम	डा0 अनिल कुमार शर्मा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड	7500241561
10.00–11.15	धान उत्पादन हेतु उन्नत सस्य विधियाँ	डा0 जितेन्द्र क्वात्रा, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) एवं प्रभारी अधिकारी, कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर	9760226518 7500241509
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	खरीफ दलहन उत्पादन की उन्नत तकनीकी	डा0 बी0एस0 कार्की, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान), प्रसार शिक्षा निदेशालय	7579174120
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–16.00	खरीफ फसलों में समन्वित पोषक तत्व प्रबन्धन	डा0 अरविन्द त्यागी, सह प्राध्यापक मृदा विज्ञान विभाग	9412801873
16.00–16.15	चाय		
16.15–17.30	मक्का उत्पादन तकनीक	डा0 आर0पी0 सिंह, प्राध्यापक पादप रोग विज्ञान विभाग	7500941100
अप्रैल 28, 2023			
10.00–11.15	खरीफ तिलहन उत्पादन की उन्नत तकनीकी	डा0 अजय श्रीवास्तव, सहा0 प्राध्यापक सस्य विज्ञान विभाग	9412925737
11 15–11 30	चाय		

11.30–13.00	मोटे अनाजों के उत्पादन की उन्नत तकनीकी	डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान), प्रसार शिक्षा निदेशालय	9412952034
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–16.00	जैविक खरीफ फसलोत्पादन तकनीक (स्थलः जैविक प्रक्षेत्र, फसल अनुसंधान केन्द्र)	डा0 डी0के0 सिंह, प्राध्यापक सब्जी विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय	9411320066
16.00–16.15	चाय		
16.15–17.30	ट्रीट इकाई का भ्रमण	डा0 आर0के0 शर्मा/डा0 निर्मला भट्ट प्रसार शिक्षा निदेशालय	
अप्रैल 29, 2023			
10.00–11.15	खरीफ फसलों के प्रमुख खरपतवार एवं उनका प्रबन्धन	डा0 अजय प्रभाकर, विशेषज्ञ (सस्य विज्ञान), कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर	9897523180
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	खरीफ फसलों के प्रमुख रोग एवं उनका समन्वित प्रबन्धन	डा0 निर्मला भट्ट, सह निदेशक प्रसार शिक्षा निदेशालय	9412044788
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–16.00	खरीफ फसलों के प्रमुख कीट एवं उनका समन्वित प्रबन्धन	डा0 जे0पी0 पुरवार, सहा0 प्राध्यापक कीट विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय	9411324356
16.00–17.00	प्रमुख पर्वतीय खरीफ फसलें एवं उनके उत्पादन तकनीक	डा0 आर0के0 शर्मा, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान), प्रसार शिक्षा निदेशालय	9412995904
17.00–17.30	प्रमाण–पत्र वितरण एवं समापन	डा0 अनिल कुमार शर्मा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड	

5.2 आय वृद्धि हेतु कुक्कुट पालन

लघु एवं सीमान्त कृषकों के त्वरित आय अर्जन हेतु कुक्कुट पालन उद्यम महत्वपूर्ण होता है। वर्तमान में सरकार द्वारा कुक्कुट पालन ईकाई की स्थापना हेतु अनुदान भी दिया जा रहा है। काई भी कृषक अथवा उद्यमी प्रशिक्षण प्राप्त कर कुक्कुट पालन कर सकता है। संस्थान द्वारा फार्म स्कूलों के संचालक, पशुधन प्रसार अधिकारी, बी0टी0एम0 एवं कुक्कुट पालक हेतु 'आय वृद्धि हेतु कुक्कुट पालन' विषयक प्रशिक्षण मई 10–13, 2023 को आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण के उद्घाटन अवसर पर निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड ने पर्वतीय क्षेत्र की भौगोलिक परिस्थिति का उल्लेख करते हुए कहा कि छोटी जोत के कृषक मुर्गी पालन कर अपनी आय में दोगुनी से भी ज्यादा वृद्धि कर सकते हैं।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में वैज्ञानिकों ने कुक्कुटों की विभिन्न प्रजातियां एवं प्रबन्धन, अण्डा और मांस देने वाले कुक्कुटों में आहार प्रबन्धन एवं गुणवत्ता नियंत्रण, बैकयार्ड पोल्ट्री फार्मिंग, मुर्गियों का आवास प्रबन्धन, गिनी मुर्गी पालन प्रबन्धन, चूजो एवं पठोर की प्रबन्धन व्यवस्था, बदलते मौसम में कुक्कुटों का प्रबन्धन व

आय वृद्धि हेतु कुक्कुट पालन प्रशिक्षण

परजीवी रोग, कुक्कुटों में रोग प्रबन्धन व टीकाकरण, कृषक स्तर पर मुर्गी पालन : समस्या एवं समाधान, कुक्कुट पालन प्रबन्धन तकनीक एवं आर्थिक विवरण, कुक्कुट उत्पादों का प्रसंस्करण एवं मूल्य संर्वधन एवं कृषकोपयोगी प्रमुख स्वरोजगारपरक कृषि कार्यक्रम इत्यादि विषयों पर व्याख्यान दिये गये। प्रतिभागियों के प्रायोगिक क्षमता विकास हेतु इनका शैक्षणिक कुक्कुट फार्म एवं ट्रीट इकाई का भ्रमण व वैज्ञानिक से परिचर्चा भी करायी गयी। प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 30 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया।

समय	विवरण	वार्ताकार	मोबाइल नं0
मई 10, 2023			
9.30–9.40	पंजीकरण	यंग प्रोफेशनल–द्वितीय	
9.40–10.00	उद्घाटन कार्यक्रम	डा0 अनिल कुमार शर्मा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड	7500241561
10.00–11.15	कुक्कुटों की विभिन्न प्रजातियां एवं प्रबन्धन	डा0 आर0के0 शर्मा, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, पशुधन उत्पादन प्रबन्धन विभाग, पशुचिकित्सा महाविद्यालय	9412121081 9837637244
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	अण्डा और मांस देने वाले कुक्कुटों में आहार प्रबन्धन एवं गुणवत्ता नियंत्रण	डा0 ज्योति पलोड, प्राध्यापक पशुधन उत्पादन प्रबन्धन विभाग	9412125050
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–16.00	बैकयार्ड पोल्ट्री फार्मिंग	डा0 शिव कुमार, प्राध्यापक पशुधन उत्पादन प्रबन्धन विभाग	9412557576 7500941220
16.00–16.15	चाय		
16.15–17.30	मुर्गियों का आवास प्रबन्धन	डा0 संजय चौधरी, प्राध्यापक (पशुपालन) प्रसार शिक्षा निदेशालय	9412162673
मई 11, 2023			
10.00–11.15	गिनी मुर्गी पालन प्रबन्धन	डा0 ब्रजेश सिंह, प्राध्यापक पशुधन उत्पादन प्रबन्धन विभाग पशुचिकित्सा महाविद्यालय	9411160035
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	चूजो एवं पठोर की प्रबन्धन व्यवस्था	डा0 अनिल कुमार, प्राध्यापक पशुधन उत्पादन प्रबन्धन विभाग पशुचिकित्सा महाविद्यालय	9412120959
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–16.00	बदलते मौसम में कुक्कुटों का प्रबन्धन व परजीवी रोग	डा0 विद्यासागर, सह प्राध्यापक पशु परजीवी विभाग, पशुचिकित्सा महाविद्यालय	9410168987
16.00–16.15	चाय		
16.15–17.30	कुक्कुटों में रोग प्रबन्धन व टीकाकरण	डा0 राजीव रंजन, सह प्राध्यापक पशु परजीवी विभाग, पशुचिकित्सा महाविद्यालय	9457166680
मई 12, 2023			
10.00–11.15	कृषक स्तर पर मुर्गी पालन : समस्या एवं समाधान	डा0 अनिल सैनी, प्राध्यापक (पशुपालन), कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर	9837022636
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	कुक्कुट पालन प्रबन्धन तकनीक एवं आर्थिक विवरण	डा0 आर0के0 शर्मा, प्राध्यापक व विभागाध्यक्ष, पशुधन उत्पादन प्रबन्धन विभाग	9412121081
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–16.00	कुक्कुट फार्म का भ्रमण एवं कुक्कुट पालन सम्बन्धी व्यावहारिक जानकारियाँ (स्थल–शैक्षणिक कुक्कुट फार्म, नगला)	डा0 एस0के0 सिंह, संयुक्त निदेशक शैक्षणिक डेयरी व कुक्कुट फार्म	9411320143
16.00–17.30	कृषकों की आय में वृद्धि हेतु कुक्कुट पालन, कुक्कुट पालन सम्बन्धी समस्याएं एवं निदान (स्थल–शैक्षणिक कुक्कुट फार्म, नगला)	डा0 रिपुसूदन कुमार, सह निदेशक शैक्षणिक कुक्कुट फार्म, नगला	9412017906

मई 13, 2023			
10.00–11.15	कुक्कुट उत्पादों का प्रसंस्करण एवं मूल्य संर्वधन	डा0 अनीता, सह प्राध्यापक पशुचिकित्सा उत्पादन प्रौद्योगिकी पशुचिकित्सा महाविद्यालय	9411159836
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	कृषकोपयोगी प्रमुख स्वरोजगारपरक कृषि कार्यक्रम	डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) प्रसार शिक्षा निदेशालय	9412952034
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–16.00	ट्रीट इकाई का भ्रमण		
16.00–17.30	प्रमाण–पत्र वितरण एवं समापन	डा0 अनिल कुमार शर्मा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड	

5.3 उन्नत बकरी पालन

संस्थान द्वारा 'उन्नत बकरी पालन' प्रशिक्षण का आयोजन मई 25–27, 2023 तक किया गया। इस प्रशिक्षण में विश्वविद्यालय के विभिन्न वैज्ञानिकों द्वारा बकरियों की प्रजातियां, आहार एवं आवास प्रबन्धन, प्रजनन प्रबन्धन, बकरियों के प्रमुख रोग, नियंत्रण एवं टीकाकरण, परजीवी रोग, बकरी उत्पादों का प्रसंस्करण एवं मूल्य संर्वधन आदि विषयों पर व्याख्यान दिया गया। प्रतिभागियों के व्यावहारिक कार्यकुशलता में वृद्धि लाने के उद्देश्य से इन्हें पशुधन उत्पादन प्रबन्धन के बकरी यूनिट का भ्रमण कराया गया। प्रशिक्षण के समापन अवसर पर निदेशक प्रसार शिक्षा एवं समेटी, डा0 अनिल कुमार शर्मा ने प्रतिभागियों से प्रशिक्षण में सीखें गये विषयों को अपनाकर आय संवर्धन की अपील की। आपने विशेष रूप से कहा कि बकरी पालन एक ऐसा व्यवसाय है, जो पर्वतीय एवं मैदानी क्षेत्र के लघु एवं सीमान्त कृषकों द्वारा आसानी से किया जा सकता है। कृषक इसके उत्पादों का मूल्यवर्धन कर अपने आय में कई गुना इजाफा कर सकते हैं। पशुधन उत्पादन प्रबन्धन विभाग के विभागाध्यक्ष डा0 आर0के0 शर्मा ने वैज्ञानिक विधि अपनाते हुए यह व्यवसाय करने का सलाह दिया। आपने अपने सम्बोधन में आगे कहा कि लघु स्तर पर बकरी पालन व्यवसाय से कृषक कम लागत से अपनी आजीविका में कई गुना सुधार कर सकते हैं। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 59 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया।

उन्नत बकरी पालन प्रशिक्षण का आयोजन

समय	विवरण	वार्ताकार	मोबाइल नं0
मई 25, 2023			
9.30–9.40	पंजीकरण	कु0 ज्योति कनवाल यंग प्रोफेशनल–द्वितीय	
9.40–10.00	उद्घाटन कार्यक्रम	डा0 अनिल कुमार शर्मा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड	
10.00–11.15	बकरियों की विभिन्न प्रजातियाँ एवं प्रबन्धन	डा0 आर0के0 शर्मा, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, पशुधन उत्पादन प्रबन्धन विभाग, पशुचिकित्सा महाविद्यालय	9412121081 9837637244
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	बकरियों में आहार प्रबन्धन	डा0 एस0के0 सिंह, प्राध्यापक पशुधन उत्पादन प्रबन्धन विभाग पशुचिकित्सा महाविद्यालय	9411320143
13.00–14.30	भोजनावकाश		

14.30–16.00	बकरियों में आवास प्रबन्धन	डा0 संजय चौधरी, प्राध्यापक (पशुपालन) प्रसार शिक्षा निदेशालय	9412162673
16.00–16.15	चाय		
16.15–17.30	बकरी इकाई का भ्रमण (पशुधन उत्पादन प्रबन्धन विभाग)	डा0 आर0के0 शर्मा, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, पशुधन उत्पादन प्रबन्धन विभाग, पशुचिकित्सा महाविद्यालय	9412121081 9837637244
मई 26, 2023			
10.00–11.15	बकरियों में प्रजनन प्रबन्धन	डा0 सुनील कुमार, सहा0 प्राध्यापक पशु प्रजनन विभाग, पशुचिकित्सा महाविद्यालय	9412941999
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	बकरी उत्पादों का प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन	डा0 अनीता, सह प्राध्यापक पशुचिकित्सा उत्पादन प्रौद्योगिकी पशुचिकित्सा महाविद्यालय	9411159836
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–15.30	मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती	डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) प्रसार शिक्षा निदेशालय	9412952034
15.30–17.30	ट्रीट एवं अन्य इकाईयों का भ्रमण	डा0 आर0के0 शर्मा, प्राध्यापक प्रसार शिक्षा निदेशालय	9412995904
मई 27, 2023			
10.00–11.15	बकरियों के प्रमुख रोग	डा0 जे0एल0 सिंह, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, पशुचिकित्सा औषधि विभाग, पशुचिकित्सा महाविद्यालय	9410119561
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	बकरियों में परजीवी रोग	डा0 विद्यासागर, सह प्राध्यापक पशु परजीवी विभाग, पशुचिकित्सा महाविद्यालय	9410168987
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–16.00	बकरियों में रोग नियंत्रण एवं टीकाकरण	डा0 निधि अरोरा, प्राध्यापक पशु औषधि विभाग, पशुचिकित्सा महाविद्यालय	8449226891
16.00–17.00	प्रमाण–पत्र वितरण एवं समापन	डा0 अनिल कुमार शर्मा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड	

5.4 उन्नत पशुपालन एवं दुधारू पशुओं का प्रबन्धन

शुद्ध एवं गुणवत्तायुक्त दूध उपलब्धता आज सभी के प्राथमिकताओं में शामिल है। वर्तमान में शुद्ध दूध के लिए कोई भी अच्छी से अच्छी दर पर क्रय करने हेतु तैयार होता है। बड़े–बड़े शहरों में ए–2 दूध के लिए भी लगभग यही स्थिति होती है। अतः ग्रामीण युवाओं हेतु यह उद्यम स्वरोजगार अथवा स्टार्टअप का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। उक्त के दृष्टिगत संस्थान द्वारा प्रगतिशील पशुपालक, पशुपालन विभाग के कर्मचारी एवं अधिकारियों हेतु 'उन्नत पशुपालन एवं दुधारू पशुओं का प्रबन्धन' विषयक प्रशिक्षण जून 07–10, 2023 को आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण के उद्घाटन

शैक्षणिक डेयरी फार्म का भ्रमण करते प्रशिक्षणार्थी

अवसर पर निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड ने पर्वतीय क्षेत्र की भौगोलिक

परिस्थिति का उल्लेख करते हुए कहा कि खाली पड़ी जमीन का सदुपयोग करते हुये छोटी जोत के कृषक एक या दो अच्छे नस्ल के पशु द्वारा उन्नत पशुपालन कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त मूल्यवर्धन कर पनीर, खोया, घी, चीज इत्यादि के माध्यम से भी कृषक अच्छी खासी आमदनी कर सकते हैं। आपने वर्तमान परिवेश में गोमूत्र को भी आय का एक प्रमुख आधार बताया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत नये डेयरी की शुरूआत कैसे करें, पशुओं की आवास एवं अन्य व्यवस्थाए, पशुओं हेतु संतुलित आहार प्रबन्धन, पशुओं के प्रमुख रोग एवं प्रबन्धन, गुणवत्तायुक्त स्वच्छ दुग्ध उत्पादन एवं उसके विभिन्न उत्पाद, पशुओं में नस्ल सुधार एवं प्रजनन विधियाँ, पशुओं में नियमित प्रजनन की आवश्यकता एवं प्रजनन विकार, पशुओं के विभिन्न संक्रामक रोग एवं बचाव हेतु टीकाकरण/प्रबन्धन विषयों पर व्याख्यान दिये गये। प्रतिभागियों के प्रायोगिक क्षमता विकास के उद्देश्य से इनका शैक्षणिक डेयरी उत्पादन केन्द्र के भ्रमण के साथ–साथ अन्य शोध केन्द्रों का भी भ्रमण कराया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 32 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया।

समय	विवरण	वार्ताकार	मोबाइल नं0
जून 07, 2023			
9.30–9.40	पंजीकरण	यंग प्रोफेशनल–द्वितीय	
9.40–10.00	उद्घाटन कार्यक्रम	डा0 अनिल कुमार शर्मा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड	
10.00–11.15	नये डेयरी की शुरूआत कैसे करें एवं ध्यान रखने योग्य बातें	डा0 आर0के0 शर्मा, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, पशुधन उत्पादन प्रबन्धन विभाग, पशुचिकित्सा महाविद्यालय	9837637244 9412121081
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	पशुओं की आवास एवं अन्य व्यवस्थाएं	डा0 एस0के0 सिंह, प्राध्यापक पशुधन उत्पादन प्रबन्धन विभाग पशुचिकित्सा महाविद्यालय	9411320143
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–16.00	पशुओं हेतु संतुलित आहार प्रबन्धन	डा0 अंशु रहल, सहा0 प्राध्यापक पशु पोषण विभाग, पशुचिकित्सा महाविद्यालय	9412088975
16.00–16.15	चाय		
16.15–17.30	पशुओं में नस्ल सुधार एवं प्रजनन विधियाँ	डा0 बी0एन0 शाही, सह प्राध्यापक पशु आनुवांशिकी एवं प्रजनन विभाग, पशुचिकित्सा महाविद्यालय	9410587169
जून 08, 2023			
10.00–11.15	पशुओं में नियमित प्रजनन की आवश्यकता एवं प्रजनन विकार	डा0 सुनील कुमार, सह प्राध्यापक पशु प्रजनन विभाग, पशुचिकित्सा महाविद्यालय	9412941999
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	गर्भित एवं नवजात पशु प्रबन्धन	डा0 संजय चौधरी, प्राध्यापक प्रसार शिक्षा निदेशालय	9412162673
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–16.00	डेयरी उत्पादन का आर्थिक विवरण	डा0 आर0के0 शर्मा, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, पशुधन उत्पादन प्रबन्धन विभाग, पशुचिकित्सा महाविद्यालय	9837637244
16.00–16.15	चाय		

16.15–17.30	पशुओं के प्रमुख रोग एवं प्रबन्धन	डा0 अमित प्रसाद, सह प्राध्यापक पशुचिकित्सा औषधि विभाग, पशुचिकित्सा महाविद्यालय	9601355075
जून 09, 2023			
10.00–11.15	गुणवत्तायुक्त स्वच्छ दुग्ध उत्पादन एवं उसके विभिन्न उत्पाद	डा0 अनीता, सह प्राध्यापक पशुचिकित्सा उत्पादन प्रौद्योगिकी पशुचिकित्सा महाविद्यालय	9411159836
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	पशुओं के विभिन्न संक्रामक रोग एवं बचाव हेतु टीकाकरण/प्रबन्धन	डा0 निधि अरोरा, प्राध्यापक पशु औषधि विभाग, पशुचिकित्सा महाविद्यालय	8449226891
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–17.00	ट्रीट एवं अन्य इकाईयों का भ्रमण	डा0 आर0के0 शर्मा, प्राध्यापक प्रसार शिक्षा निदेशालय	9412995904
जून 10, 2023			
10.00–11.15	पशु परजीवी रोग एवं पशुपालन से सम्बन्धित चर्चा (समस्या एवं निदान)	डा0 राजीव रंजन, सह प्राध्यापक पशुचिकित्सा महाविद्यालय	9457166680
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती	डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) प्रसार शिक्षा निदेशालय	9412952034
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–16.00	डेयरी उत्पादों का विपणन प्रबन्धन	डा0 स्नेहा दोहरे, सहा0 प्राध्यापक कृषि व्यवसाय प्रबन्धन महाविद्यालय	7535988994
16.00–17.30	प्रमाण–पत्र वितरण एवं समापन	डा0 अनिल कुमार शर्मा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड	

5.5 प्राकृतिक खेती

संस्थान द्वारा 'प्राकृतिक खेती' विषयक प्रशिक्षण का आयोजन जून 21–23, 2023 तक किया गया। प्रशिक्षण के उद्घाटन अवसर पर निदेशक प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड, डा0 अनिल कुमार शर्मा ने प्रतिभागियों से कहा कि कृषि की वर्तमान परिस्थिति को देखते हुए प्राकृतिक खेती वरदान साबित हो सकता है। कृषि में कृषि रक्षा रसायन एवं रासायनिक उर्वरकों के अनियोजित प्रयोग के कारण मृदा की उर्वरा शक्ति वर्ष दर वर्ष क्षीण होती जा रही है। इसके दुष्परिणाम से मानव के साथ–साथ पशु एवं अन्य जीवधारी भी प्रभावित हो रहे हैं। निश्चित रूप से इसका विकल्प प्राकृतिक खेती हो सकता है। आपने यह भी कहा कि माननीय प्रधानमंत्री भी इस विधा को पूरे देश में विस्तारित करने का आह्वान करते रहते हैं। डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) एवं समेटी समन्वयक ने प्रशिक्षण के उद्घाटन अवसर पर निदेशक समेटी तथा उपस्थित प्रतिभागियों का स्वागत करने के साथ–साथ समेटी द्वारा

प्राकृतिक खेती शोध एवं प्रशिक्षण केन्द्र का भ्रमण

सम्पादित किये जाने वाले विभिन्न कार्यक्रम, विभिन्न प्रशिक्षणों की रूपरेखा इत्यादि के बारे में विस्तार से चर्चा किये। आपने बताया कि प्रशिक्षण के दौरान विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा प्राकृतिक खेती– परिचय एवं महत्व, प्राकृतिक खेती– समस्याएं एवं समाधान, प्राकृतिक खेती में मृदा स्वास्थ्य एवं फसल

सुरक्षा, बदलते पर्यावरण के परिवेश में प्राकृतिक खेती का महत्व, प्राकृतिक खेती में फसल सुरक्षा हेतु प्रयुक्त होने वाले आदानों के बनाने की विधियों का प्रदर्शन, प्राकृतिक खेती में मृदा स्वास्थ्य हेतु प्रयुक्त होने वाले आदानों के बनाने की विधियों का प्रदर्शन, प्राकृतिक खेती के अन्तर्गत आदानों के विभिन्न फसलों में प्रयोग की विधियाँ, प्राकृतिक खेती में गौधन प्रबन्धन, प्राकृतिक खेती के बारे में उत्तराखण्ड से आये प्रतिभागियों से परिचर्चा एवं समाधान, परम्परागत कृषि तकनीक एवं प्राकृतिक कृषि तथा मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती इत्यादि के बारे में व्याख्यान दिया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 13 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया।

समय	विवरण	वार्ताकार	मोबाइल नं0
जून 21, 2023			
9 30–9 40	पंजीकरण	यंग प्रोफेशनल–द्वितीय	
9.40–10.00	उद्घाटन कार्यक्रम	डा0 अनिल कुमार शर्मा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड	
10.00–11.15	प्राकृतिक खेती– परिचय एवं महत्व	डा0 सुनीता टी0 पाण्डेय, प्राध्यापक सस्य एवं कार्यकारी सचिव, एशियन एग्री हिस्ट्री फाउण्डेशन, पंतनगर	9412120735
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	प्राकृतिक खेती– समस्याएं एवं समाधान	डा0 एस0पी0एस0 बेनीवाल, पूर्व प्राध्यापक एवं अध्यक्ष, एशियन एग्री हिस्ट्री फाउण्डेशन, पंतनगर	8937005550
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–16.00	बदलते पर्यावरण के परिवेश में प्राकृतिक खेती का महत्व	डा0 वीर सिंह, एमेरेट्स वैज्ञानिक पर्यावरणीय विज्ञान विभाग, विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय	7500241416
16.00–16.15	चाय		
16.15–17.30	प्राकृतिक खेती में मृदा स्वास्थ्य एवं फसल सुरक्षा	डा0 एस0पी0एस0 बेनीवाल, पूर्व प्राध्यापक एवं अध्यक्ष, एशियन एग्री हिस्ट्री फाउण्डेशन, पंतनगर	8937005550
जून 22, 2023			
10.00–11.15	प्राकृतिक खेती में मृदा स्वास्थ्य हेतु प्रयुक्त होने वाले आदानों के बनाने की विधियों का प्रदर्शन (प्रायोगिक– फसल अनुसंधान केन्द्र)	डा0 सुनीता टी0 पाण्डेय, प्राध्यापक सस्य एवं कार्यकारी सचिव, एशियन एग्री हिस्ट्री फाउण्डेशन, पंतनगर	9412120735
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	प्राकृतिक खेती में फसल सुरक्षा हेतु प्रयुक्त होने वाले आदानों के बनाने की विधियों का प्रदर्शन (प्रायोगिक– फसल अनुसंधान केन्द्र)	डा0 सुनीता टी0 पाण्डेय, प्राध्यापक सस्य एवं कार्यकारी सचिव, एशियन एग्री हिस्ट्री फाउण्डेशन, पंतनगर	9412120735
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–15.30	प्राकृतिक खेती के अन्तर्गत आदानों के विभिन्न फसलों में प्रयोग की विधियाँ (प्रायोगिक– फसल अनुसंधान केन्द्र)	डा0 सुनीता टी0 पाण्डेय, प्राध्यापक सस्य एवं कार्यकारी सचिव, एशियन एग्री हिस्ट्री फाउण्डेशन, पंतनगर	9412120735
15.30–17.30	प्राकृतिक खेती शोध केन्द्र का भ्रमण (फसल अनुसंधान केन्द्र)	डा0 सुनीता टी0 पाण्डेय, प्राध्यापक सस्य एवं कार्यकारी सचिव, एशियन एग्री हिस्ट्री फाउण्डेशन, पंतनगर	9412120735

जून 23, 2023			
10.00–11.15	प्राकृतिक खेती में गौधन प्रबन्धन	डा0 आर0एस0 चौहान, विभागाध्यक्ष पशु रोग विज्ञान, पशुचिकित्सा महाविद्यालय	9711585882
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	प्राकृतिक खेती के बारे में उत्तराखण्ड से आये प्रतिभागियों से परिचर्चा एवं समाधान	डा0 सुनीता टी0 पाण्डेय, प्राध्यापक सस्य एवं कार्यकारी सचिव, एशियन एग्री हिस्ट्री फाउण्डेशन, पंतनगर	9412120735
13.00–14.00	भोजनावकाश		
14.00–15.00	परम्परागत कृषि तकनीक एवं प्राकृतिक कृषि	डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) प्रसार शिक्षा निदेशालय	9412952034
15.00–16.00	मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती	डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) प्रसार शिक्षा निदेशालय	9412952034
16.00–17.00	प्रमाण–पत्र वितरण एवं समापन	डा0 अनिल कुमार शर्मा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड	

5.6 जैविक फसल एवं सब्जी उत्पादन तकनीक

संस्थान द्वारा 'जैविक फसल एवं सब्जी उत्पादन तकनीक' प्रशिक्षण का आयोजन जुलाई 05–08, 2023 तक किया गया। समेटी समन्वयक डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) ने प्रतिभागियों का स्वागत करने के साथ–साथ समेटी द्वारा सम्पादित किये जाने वाले विभिन्न कार्यक्रम, विभिन्न प्रशिक्षणों की रूपरेखा इत्यादि के बारे में विस्तार से चर्चा किये। प्रशिक्षण में विश्वविद्यालय के जैविक कृषि से सम्बन्धित वैज्ञानिकों द्वारा जैविक खेती– परिचय, सिद्धान्त एवं उत्तराखण्ड में जैविक कृषि की सम्भावनाएं, सब्जियों की जैविक विधि से खेती विशेशतः पॉलीहाउस में टमाटर, शिमला मिर्च एवं खीरा उत्पादन तकनीक, जैविक फसल उत्पादन तकनीक, पॉलीहाउस की संरचना एवं सूक्ष्म सिंचाई तकनीक का प्रयोग, विभिन्न जैविक उर्वरक एवं उनकी प्रयोग विधियाँ, जैविक सब्जी उत्पादन हेतु न्यूनतम साझा कार्यक्रम, जैविक फसलों के प्रमाणीकरण की विधियाँ, फसल एवं सब्जियों में जैविक रोग तथा कीट प्रबन्धन, मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती एवं जैविक खेती सम्बन्धी सरकार के योजनाओं इत्यादि के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। प्रदर्शन एवं प्रयोगात्मक शिक्षण हेतु प्रतिभागियों का भ्रमण डा0 नार्मन ई बोरलॉग फसल अनुसंधान केन्द्र के जैविक खेती प्रक्षेत्र में कराया गया जहाँ उन्हें जैविक खेती सम्बन्धी नवीनतम विकसित तकनीक और अन्य विधायें सिखाई गयी। प्रशिक्षण के समापन अवसर पर निदेशक प्रसार शिक्षा डा0 जे0पी0 जायसवाल ने प्रतिभागियों से प्रशिक्षण में सीखे गये विषयों को अपनाने एवं अन्य कृषकों को भी जानकारी साझा करने की अपील की। आपने विशेष रूप से पर्वतीय क्षेत्र के कृषकों से कहा कि आप लोग जैविक खेती अपनाकर पर्यावरण संरक्षण के साथ–साथ उच्च गुणवत्ता के उत्पाद बाजार में लाकर अपने आय में कई गुना वृद्धि कर सकते हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 15 प्रतिभागियों द्वारा प्रतिभाग किया गया।

प्रमाण–पत्र वितरण कार्यक्रम

समय	विवरण	वार्ताकार	मोबाइल नं0
जुलाई 05, 2023			
9.30–9.40	पंजीकरण	यंग प्रोफेशनल–द्वितीय	
9.40–10.00	उद्घाटन कार्यक्रम	डा0 अनिल कुमार शर्मा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड	

10.00–11.15	जैविक खेती– परिचय, सिद्धान्त, उत्तराखण्ड में जैविक कृषि की सम्भावनाएं एवं लाभ	डा0 धनंजय कुमार सिंह, प्राध्यापक सस्य विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय	9411320066
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	सब्जियों की जैविक विधि से खेती विशेषतः पॉली हाउस में जैविक टमाटर, शिमला मिर्च एवं खीरा उत्पादन तकनीक	डा0 एस0के0 मौर्य, सह प्राध्यापक सब्जी विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय	9411159800
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–16.00	जैविक कृषि के अन्तर्गत पोषक तत्व प्रबन्धन	डा0 अरविन्द कुमार त्यागी, सह प्राध्यापक मृदा विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय	9412801873
16.00–16.15	चाय		
16.15–17.30	पॉली हाउस की संरचना एवं सूक्ष्म सिंचाई तकनीक का प्रयोग	डा0 पी0के0 सिंह, प्राध्यापक सिंचाई एवं जल निकास, प्रौद्योगिकी महाविद्यालय	9690012757
जुलाई 06, 2023			
10.00–11.15	जैविक फसल उत्पादन तकनीक	डा0 धनंजय कुमार सिंह, प्राध्यापक सस्य विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय	9411320066
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	रोगाणु (माइक्रोब्स) का जैविक कृषि में महत्व	डा0 अनिल कुमार शर्मा, प्राध्यापक जीव विज्ञान एवं निदेशक प्रसार शिक्षा	7500241561
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–16.00	जैविक सब्जी उत्पादन हेतु न्यूनतम साझा कार्यक्रम	डा0 रूपाली शर्मा, प्राध्यापक पादप रोग विभाग, कृषि महाविद्यालय	7830355250
16.00–16.15	चाय		
16.15–17.30	जैविक उर्वरकों की प्रयोग विधियाँ एवं	डा0 अजय वीर सिंह, प्राध्यापक, सूक्ष्म जीव	9719019798
	प्रयोग के समय बरते जाने वाली सावधानियाँ	विज्ञान, विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय	
जुलाई 07, 2023			
10.00–11.15	जैविक फसलों के प्रमाणीकरण की विधियाँ एवं प्रमाणीकरण से होने वाले लाभ	डा0 एस0के0 यादव, सह प्राध्यापक सस्य विज्ञान विभाग	9412088399
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती	डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) प्रसार शिक्षा निदेशालय	9412952034
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–17.00	जैविक उत्पादन प्रखण्ड एवं अन्य शोध केन्द्रों का भ्रमण	डा0 एस0के0 यादव, सह प्राध्यापक सस्य विज्ञान विभाग	9412088399
जुलाई 08, 2023			
10.00–11.15	फसल एवं सब्जियों में जैविक रोग नियंत्रण	डा0 रूपाली शर्मा, प्राध्यापक पादप रोग विभाग, कृषि महाविद्यालय	7830355250
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	फसल एवं सब्जियों में जैविक कीट नियंत्रण	डा0 आर0पी0 मौर्या, सह प्राध्यापक कीट विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय	9639750151
13.00–14.30	भोजनावकाश		

14.30–16.00	ट्रीट एवं अन्य इकाईयों का भ्रमण	डा0 आर0के0 शर्मा, प्राध्यापक प्रसार शिक्षा निदेशालय	9412995904
16.00–17.30	प्रमाण–पत्र वितरण एवं समापन	डा0 अनिल कुमार शर्मा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड	

5.7 ग्रामीण युवाओं हेतु स्वरोजगारपरक कुटीर उद्योग

संस्थान द्वारा 'ग्रामीण युवाओं हेतु स्वरोजगारपरक कुटीर उद्योग' प्रशिक्षण का आयोजन जुलाई 19–22, 2023 तक किया गया। प्रशिक्षण के उद्घाटन अवसर पर निदेशक प्रसार शिक्षा डा0 जे0पी0 जायसवाल ने प्रतिभागियों से कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में कुटीर उद्योग अपनाकर ग्रामीण युवा अपने आय में कई गुना वृद्धि कर सकते हैं। आपने कहा कि हस्तशिल्प, दुग्ध उत्पाद, सोयाबीन प्रसंस्करण, मोटे अनाजों का मूल्यवर्धन, मोमबत्ती बनाना इत्यादि कुछ ऐसे उद्यम है, जिसे ग्रामीण युवा लघु स्तर पर प्रारम्भ कर स्वरोजगार की राह चुन सकते हैं। आपने विशेष रूप से प्रशिक्षण में सीखे गये विषयों को अपनाने एवं अन्य कृषकों को भी जानकारी साझा करने की अपील की। डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) एवं समेटी समन्वयक ने प्रतिभागियों का स्वागत करने के साथ–साथ समेटी द्वारा सम्पादित किये जाने वाले विभिन्न कार्यक्रम, विभिन्न प्रशिक्षणों की रूपरेखा इत्यादि के बारे में विस्तार से चर्चा किये। पूरे प्रशिक्षण के दौरान विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा कुटीर उद्योग– परिचय एवं खाद्य परिरक्षणः स्वरोजगार हेतु प्रभावी विकल्प, औद्यानिकी के क्षेत्र में कुटीर उद्योग के लिए प्रसंस्करण तकनीक, एपण कला एवं कुटीर स्तर पर मोमबत्ती बनाने की विधियाँ, हस्तशिल्प द्वारा रोजगार एवं सतत् विकास की राह, महिलाओं के लिए उपयोगी कृषि यंत्र, मुर्गे का अचार–

मंडुवा के उत्पादों का प्रदर्शन

एक लाभकारी व्यवसाय एवं अन्य दुग्ध उत्पादों का मूल्यवर्धन, मत्स्य पालन– परिचय एवं मत्स्य प्रसंस्करण से आय संवर्धन, मोटे अनाजो का महत्व/मूल्यवर्धन, प्रयोग एवं बेकरी उत्पाद, सोयाबीन प्रसंस्करण तकनीक, सोया पनीर, ओकारा एवं सोयाबीन के पौष्टिक एवं स्वादिष्ट व्यंजन, अल्प लागत से औद्यानिक फसलों की कटाई के उपरान्त प्रबन्धन, कुटीर उद्योग– विपणन प्रबन्धन एवं मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती इत्यादि के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। प्रशिक्षण के तृतीय दिवस प्रायोगिक कक्षा लगाकर प्रतिभागियों को मंडुवा के बिस्किट, नमकीन एवं सोयाबीन का हलुवा, सोयामिल्क, सोयाबीन के नमकपारे बनाने की विधि का प्रदर्शन कर सिखाया गया। इसी क्रम में सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय में मिर्च, करेला के अचार एवं टमाटर की प्यूरी, चटनी इत्यादि बनाने का प्रदर्शन कर सिखाया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 22 प्रतिभागियों द्वारा प्रतिभाग किया गया।

समय	विवरण	वार्ताकार	मोबाइल नं0
जुलाई 19, 2023			
9.30–9.40	पंजीकरण	यंग प्रोफेशनल–द्वितीय	
9.40–10.00	उद्घाटन कार्यक्रम	डा0 जे0पी0 जायसवाल निदेशक प्रसार शिक्षा	
10.00–11.15	कुटीर उद्योग– परिचय एवं खाद्य परिरक्षणः स्वरोजगार हेतु प्रभावी विकल्प	डा0 नीतू डोभाल, सह प्राध्यापक गृह विज्ञान महाविद्यालय	9411146409
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	औद्यानिकी के क्षेत्र में कुटीर उद्योग के लिए प्रसंस्करण तकनीक	डा0 श्वेता राय, सह प्राध्यापक खाद्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, कृषि महाविद्यालय	9258058716 7060286230
13.00–14.30	भोजनावकाश		

14.30–16.00	एपण कला एवं कुटीर स्तर पर मोमबत्ती बनाने की विधियाँ (प्रयोगात्मक सहित)	डा0 सुधा जुकारिया, प्राध्यापक (गृह विज्ञान) कृषि विज्ञान केन्द्र, ज्योलीकोट	6395535609
16.00–16.15	चाय		
16.15–17.30	हस्तशिल्प द्वारा रोजगार एवं सतत् विकास की राह (प्रयोगात्मक सहित)	डा0 शैफाली मैसी, सह प्राध्यापक टेक्सटाइल एवं परिधान डिजाईनिंग विभाग, गृह विज्ञान महाविद्यालय	8938943870
जुलाई 20, 2023			
10.00–11.15	महिलाओं के लिए उपयोगी कृषि यंत्र एवं उनसे अतिरिक्त आय सृजन के अवसर (कस्टम हॉयरिंग सेन्टर)	डा0 टी0पी0 सिंह, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष कृषि यंत्र एवं शक्ति अभियंत्रण विभाग, प्रौद्योगिकी महाविद्यालय	7818005647
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती	डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) प्रसार शिक्षा निदेशालय	9412952034
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–16.00	मुर्गे का अचार– एक लाभकारी व्यवसाय एवं अन्य दुग्ध उत्पादों का मूल्यवर्धन	डा0 अनीता, सह प्राध्यापक पशुचिकित्सा उत्पादन प्रौद्योगिकी पशुचिकित्सा महाविद्यालय	9411159836
16.00–16.15	चाय		
16.15–17.30	मत्स्य पालन– परिचय एवं मत्स्य प्रसंस्करण से आय संवर्धन	डा0 एस0के0 शर्मा, सहा0 प्राध्यापक कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर	9412926530
जुलाई 21, 2023			
10.00–11.15	मोटे अनाजो का महत्व/मूल्यवर्धन, प्रयोग एवं बेकरी उत्पाद (प्रयोगात्मक सहित)	डा0 प्रतिभा सिंह, प्राध्यापक गृह विज्ञान कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर	7983700135
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	सोयाबीन प्रसंस्करण तकनीक, सोया पनीर, ओकारा एवं सोयाबीन के पौष्टिक एवं स्वादिष्ट व्यंजन (प्रयोगात्मक सहित)	डा0 प्रतिभा सिंह, प्राध्यापक गृह विज्ञान कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर	7983700135
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–16.00	परिरक्षण/प्रसंस्करण सम्बन्धी प्रदर्शन– गृह विज्ञान महाविद्यालय	डा0 अनुराधा दत्ता, प्राध्यापक खाद्य एवं पोषण, गृह विज्ञान महाविद्यालय	9759731044
16.00–17.30	परिरक्षण/प्रसंस्करण सम्बन्धी प्रदर्शन– गृह विज्ञान महाविद्यालय	डा0 अर्चना कुशवाहा, प्राध्यापक खाद्य एवं पोषण, गृह विज्ञान महाविद्यालय	9411321631
जुलाई 22, 2023			
10.00–11.15	अल्प लागत से औद्यानिक फसलों की कटाई के उपरान्त प्रबन्धन	डा0 पी0के0 ओमरे, प्राध्यापक पोस्ट हार्वेस्ट, प्रोसेस एण्ड फूड इंजीनियरिंग विभाग, प्रौद्योगिकी महाविद्यालय	9412951150
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	कुटीर उद्योग– विपणन प्रबन्धन	डा0 स्नेहा दोहरे, सहा0 प्राध्यापक कृषि व्यवसाय प्रबन्धन महाविद्यालय	7535988994
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–16.00	ट्रीट इकाई का भ्रमण		
16.00–17.30	प्रमाण–पत्र वितरण एवं समापन	डा0 जे0पी0 जायसवाल निदेशक प्रसार शिक्षा	

5.8 फल एवं सब्जी प्रसंस्करण– एक लाभकारी व्यवसाय

संस्थान द्वारा 'फल एवं सब्जी प्रसंस्करण– एक लाभकारी व्यवसाय' प्रशिक्षण का आयोजन अगस्त 09–12, 2023 तक किया गया। प्रशिक्षण के समापन अवसर पर निदेशक प्रसार शिक्षा डा0 जे0पी0 जायसवाल ने प्रतिभागियों से कहा कि किसी भी फल या सब्जी का सीजन में अत्यधिक उत्पादन होने पर कृषक को उसका उचित दर नहीं मिलता है। ऐसे परिस्थिति में इनका बेमौसमी उत्पादन अथवा प्रसंस्करण कर किसान अपने आय में कई गुना बढ़ोत्तरी कर सकते हैं। आपने कहा कि टमाटर, आलू, नीबू, माल्टा, नाशपाती, प्लम, खुबानी इत्यादि का प्रसंस्करण कर ग्रामीण युवा लघु स्तर पर स्वरोजगार की राह चुन सकते हैं। आपने विशेष रूप से प्रशिक्षण में सीखे गये विषयों को अपनाने एवं अन्य कृषकों को भी जानकारी साझा करने की अपील की। निदेशक प्रसार शिक्षा एवं समेटी द्वारा यह भी अवगत कराया गया कि संस्थान द्वारा एक वर्षीय डिप्लोमा कोर्स– पोस्ट ग्रजुऐट डिप्लोमा इन एग्रीकल्चरल एक्सटेंशन मैनेजमेन्ट (पी.जी.डी.ए.ई.एम.) भी संचालित किया जा रहा है। इस कोर्स का कॉन्टेक्ट क्लास वर्तमान में निदेशालय के सभागार में आयोजित किया जा रहा है। डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) एवं समेटी समन्वयक ने प्रतिभागियों का स्वागत करने के साथ–साथ समेटी द्वारा सम्पादित किये जाने वाले विभिन्न कार्यक्रम, विभिन्न प्रशिक्षणों की रूपरेखा इत्यादि के बारे में विस्तार से चर्चा किये। आपने विशेष

प्रसंस्कृत उत्पाद बनाना सिखाते वैज्ञानिक

रूप से अन्तर्राष्ट्रीय मोटे अनाज वर्ष 2023 के उपलक्ष्य में श्रीअन्न उत्पादन तकनीक के बारे में विस्तार से प्रकाश डाला। पूरे प्रशिक्षण के दौरान विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा व्यावसायिक परिरक्षण सम्बन्धी जानकारी–कब, कैसे और कहां शुरू करें, फल एवं सब्जियों का लम्बे समय तक रखरखाव, डिब्बा बंद खाद्य पदार्थों की जानकारी, फलों से मुरब्बे और टॉफी बनाने की विधियां, बाजार में उपलब्ध विभिन्न प्रकार के फलों से पेय पदार्थ बनाने की तकनीक, सब्जियों का मूल्यवर्धन, जैम, स्कवैश, चटनी एवं कैचप बनाने की विधि, प्रभावी विपणन द्वारा आय संवर्धन जैसे व्याख्यान दिये गये। प्रशिक्षण के तृतीय दिवस प्रायोगिक कक्षा लगाकर प्रतिभागियों को टमाटर की चटनी, सेब का जैम तथा माल्टा का स्कवैश बनाने की विधियों का प्रदर्शन कर सिखाया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 31 कृषक एवं प्रसार कार्यकर्ता द्वारा भाग लिया गया।

समय	विवरण	वाताकार	माबाइल न0
अगस्त 09, 2023			
9.30–9.40	पंजीकरण	यंग प्रोफेशनल–II	
9.40–10.00	उद्घाटन कार्यक्रम	डा0 जय प्रकाश जायसवाल निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड	
10.00–11.15	फल सब्जी प्रसंस्करण–परिचय, उपयुक्त उपकरण एवं प्रयोग विधि	डा0 श्वेता राय, सह प्राध्यापक खाद्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, कृषि महाविद्यालय	9258058716 7060286230
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	फल एवं सब्जियों का मानव आहार में महत्व	डा0 नीतू डोभाल, सह प्राध्यापक गृह विज्ञान महाविद्यालय	9411146409
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–16.00	फल एवं सब्जियों का लम्बे समय तक रखरखावः डिब्बाबंद खाद्य पदार्थों की जानकारी	डा0 सिमरन कौर अरोरा, सह प्राध्यापक खाद्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, कृषि महाविद्यालय	8884965321
16.00–16.15	चाय		

16.15–17.30	फलों से मुरब्बे एवं टॉफी बनाने की विधियाँ	डा0 अर्चना कुशवाहा, प्राध्यापक खाद्य एवं पोषण, गृह विज्ञान महाविद्यालय	9411321631
अगस्त 10, 2023			
10.00–11.15	फल एवं सब्जी प्रसंस्करण: व्यावसायिक परिक्षण सम्बन्धी जानकारी– कब, कैसे और कहाँ शुरू करें?	डा0 पी0के0 ओमरे, प्राध्यापक पोस्ट हार्वेस्ट, प्रोसेस एण्ड फूड इंजीनियरिंग विभाग, प्रौद्योगिकी महाविद्यालय	9412951150
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	फल रस बनाने की तकनीकी जानकारी, उपयुक्त विधियाँ एवं उपयोग में आने वाले उपकरण	डा0 सब्बू संगीता, सहा0 प्राध्यापक खाद्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, कृषि महाविद्यालय	9359566639
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–16.00	प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ आधारित कुटीर उद्योगों की स्थापना हेतु सहायक महत्वपूर्ण सरकारी योजनाएं	डा0 पी0के0 ओमरे, प्राध्यापक पोस्ट हार्वेस्ट, प्रोसेस एण्ड फूड इंजीनियरिंग विभाग, प्रौद्योगिकी महाविद्यालय	9412951150
16.00–16.15	चाय		
16.15–17.30	बाजार में उपलब्ध विभिन्न प्रकार के फलों से बने पेय पदार्थों को बनाने की विधियाँ	डा0 श्वेता राय, सह प्राध्यापक खाद्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, कृषि महाविद्यालय	9258058716 7060286230
अगस्त 11, 2023			
10.00–11.15	विभिन्न सब्जियों के मूल्यवर्धन से आय वृद्धि की सम्भावनाएं	डा0 सुधा जुकारिया, सह निदेशक (गृह विज्ञान), कृषि विज्ञान केन्द्र, नैनीताल	6395535609
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	विभिन्न फलों के मूल्यवर्धन से आय वृद्धि की सम्भावनाएं	डा0 सुधा जुकारिया, सह निदेशक (गृह विज्ञान), कृषि विज्ञान केन्द्र, नैनीताल	6395535609
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–16.00	विभिन्न फलों से जैम एवं स्क्वैश बनाने की विधियाँ	डा0 प्रतिभा सिंह, सह निदेशक (गृह विज्ञान), कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर	7983700135
16.00–17.30	फल एवं सब्जी से चटनी एवं कैचप/सॉस बनाने की विधियाँ	डा0 प्रतिभा सिंह, सह निदेशक (गृह विज्ञान), कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर	7983700135
अगस्त 12, 2023			
10.00–11.15	मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती	डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) प्रसार शिक्षा निदेशालय	9412952034
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	फल एवं सब्जी प्रसंस्करण : प्रभावी विपणन द्वारा आय संवर्धन	डा0 स्नेहा दोहरे, सहा0 प्राध्यापक कृषि व्यवसाय प्रबन्धन महाविद्यालय	7535988994
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–16.00	ट्रीट इकाई का भ्रमण		
16.00–17.30	प्रमाण–पत्र वितरण एवं समापन	डा0 जय प्रकाश जायसवाल निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड	

5.9 औषधीय तथा सगन्ध पौध उत्पादन तकनीक एवं मूल्यवर्धन

औषधीय एवं सगन्ध पौध उत्पादन द्वारा ग्रामीण युवा स्वरोजगार अथवा स्टार्टअप खोल सकते हैं। प्रायः ये पादप कहीं भी, कम उपजाऊ भूमि, कम उर्वरक प्रयोग द्वारा भी भरपूर उपज देने में सक्षम होते हैं। सबसे बड़ी बात है कि इनको बन्दर भी क्षति नहीं पहुँचाते हैं। अतः संस्थान द्वारा नर्सरी पालक, आतमा के अधिकारी, उद्यान/कृषि विभाग के अधिकारी एवं प्रगतिशील कृषकों हेतु 'औषधीय तथा सगन्ध पौध उत्पादन तकनीक एवं मूल्यवर्धन' विषयक प्रशिक्षण सितम्बर 13–16, 2023 को आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत उत्तराखण्ड कृषि में प्रमुख औषधीय एवं सगन्ध पादपों की महत्व एवं उपयोगिता, उत्तराखण्ड की जलवायु अनूकूल प्रमुख औषधीय पौधों की वैज्ञानिक खेती, उत्तराखण्ड की जलवायु अनूकूल प्रमुख सगन्ध पौधों की वैज्ञानिक खेती, औषधीय एवं सगन्ध पादप हेतु नर्सरी प्रबन्धन, उत्तराखण्ड के प्रमुख औषधीय वृक्ष एवं उनका कृषिकरण, औषधीय एवं सगन्ध पौधों की कटाई उपरान्त प्रबन्धन एवं मूल्य संवर्धन, औषधीय एवं सगन्ध

सगंध पौध अनुसंधान केन्द्र का भ्रमण

पौधों के प्रमुख कीट एवं उनका नियंत्रण, औषधीय एवं सगन्ध पौधों की मुख्य बीमारियां एवं निवारण, औषधीय एवं सगन्ध पौधों का विपणन प्रबन्धन, औषधीय एवं सगन्ध पौधों पर आधारित उद्योग तथा मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती इत्यादि विषयों पर व्याख्यान दिये गये। प्रतिभागियों के व्यावहारिक कार्य कुशलता में वृद्धि हेतु इनका औषधीय एवं सगंध पौध अनुसंधान केन्द्र का भ्रमण कराते हुए कुछ प्रायोगिक कार्य इनसे करवाया गया, जिससे भविष्य में ये कार्य स्वयं कर सकें। चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 08 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया।

समय	विवरण	वाताकार	माबाइल न0
सितम्बर 13, 2023			
9.30–9.40	पंजीकरण	यंग प्रोफेशनल–II	
9.40–10.00	उद्घाटन कार्यक्रम	डा0 जय प्रकाश जायसवाल निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड	
10.00–11.15	उत्तराखण्ड कृषि में प्रमुख औषधीय एवं सगन्ध पादपों की महत्व एवं उपयोगिता	डा0 वी0पी0 सिंह, प्राध्यापक एवं संयुक्त निदेशक, औषधीय एवं सगन्ध पौध शोध केन्द्र	9536102111
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	उत्तराखण्ड की जलवायु अनूकूल प्रमुख औषधीय पौधों की वैज्ञानिक खेती	डा0 एम0एस0 नेगी, प्राध्यापक, सस्य विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय	9412370194
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–16.00	उत्तराखण्ड की जलवायु अनूकूल प्रमुख सगन्ध पौधों की वैज्ञानिक खेती	डा0 अजय कुमार, सहा0 प्राध्यापक सस्य विज्ञान	9412925737
16.00–16.15	चाय		
16.15–17.30	उत्तराखण्ड के प्रमुख औषधीय वृक्ष एवं उनका कृषिकरण	डा0 वी0पी0 सिंह, प्राध्यापक एवं संयुक्त निदेशक, औषधीय एवं सगन्ध पौध शोध केन्द्र	9536102111
सितम्बर 14, 2023			
10.00–11.15	औषधीय एवं सगन्ध पौधों पर आधारित उद्योग	डा0 सुनीता टी0 पाण्डेय, प्राध्यापक सस्य विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय	9412120735
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	औषधीय एवं सगन्ध पौधों के प्रमुख कीट	डा0 आर0पी0 मौर्य, सहा0 प्राध्यापक	9639750151

	एवं उनका नियंत्रण	कीट विज्ञान विभाग	
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–16.00	औषधीय एवं सगन्ध पौधों की मुख्य बीमारियां एवं निवारण	डा0 निर्मला भट्ट, सह निदेशक प्रसार शिक्षा निदेशालय	9412044788
16.00–16.15	चाय		
16.15–17.30	औषधीय एवं सगन्ध पौधों की कटाई उपरान्त प्रबन्धन एवं मूल्य संवर्धन	डा0 एम0एस0 नेगी, प्राध्यापक, सस्य विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय	9412370194
सितम्बर 15, 2023			
10.00–11.15	सगन्ध पौधों से आसवन विधि द्वारा तेल उत्पादन की प्रयोगात्मक विधि (प्रशिक्षण स्थल–औषधीय पौध अनुसंधान एवं विकास केन्द्र)	डा0 अजय कुमार, सहा0 प्राध्यापक सस्य विज्ञान	9412925737
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	औषधीय एवं सगन्ध पौधों की प्रक्षेत्र पर पहचान एवं तकनीकी विचार विमर्श (प्रशिक्षण स्थल–औषधीय पौध अनुसंधान एवं विकास केन्द्र)	डा0 एम0एस0 नेगी, प्राध्यापक, सस्य विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय	9412370194
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–16.00	औषधीय एवं सगन्ध पादप हेतु नर्सरी प्रबन्धन (प्रशिक्षण स्थल–औषधीय पौध अनुसंधान एवं विकास केन्द्र)	डा0 वी0पी0 सिंह, प्राध्यापक एवं संयुक्त निदेशक औषधीय एवं सगन्ध पौध शोध केन्द्र	9536102111
16.00–17.30	सब्जी शोध केन्द्र का भ्रमण (प्रशिक्षण स्थल–सब्जी शोध केन्द्र)	डा0 ललित भट्ट, सह निदेशक सब्जी अनुसंधान केन्द्र	9412986485
सितम्बर 16, 2023			
10.00–11.15	औषधीय एवं सगन्ध पौधों का विपणन प्रबन्धन	डा0 अजीत कुमार, प्राध्यापक उद्यान विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय	9412451262
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती	डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) प्रसार शिक्षा निदेशालय	9412952034
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–16.00	ट्रीट इकाई का भ्रमण		
16.00–17.30	प्रमाण–पत्र वितरण एवं समापन	डा0 जय प्रकाश जायसवाल निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड	

5.10 रबी फसलोत्पादन उन्नत तकनीक

संस्थान द्वारा 'रबी फसलोत्पादन उन्नत तकनीक' विषयक प्रशिक्षण का आयोजन सितम्बर 21–23, 2023 तक किया गया। प्रशिक्षण के समापन अवसर पर निदेशक प्रसार शिक्षा डा0 जे0पी0 जायसवाल ने प्रतिभागियों से कहा कि कृषक फसलों के नवीनतम प्रजातियों और उन्नत सस्य तकनीक अपनाकर अपने फसलों से भरपूर उपज एवं परिणामस्वरूप अपने आय में बढ़ोत्तरी कर सकते हैं। आपने कहा कि हरित क्रांति की जननी पंत विश्वविद्यालय कृषकों के सहयोग एवं उत्थान हेतु कृत संकल्प है। आपने कृषकों से अपील किया कि आगामी

प्रशिक्षणार्थियों को सम्बोधित करते निदेशक प्रसार शिक्षा

पंतनगर किसान मेला अक्टूबर 13–16, 2023 को आयोजित किया जा रहा है, इसमें आप सभी बढ़–चढ़

कर भाग लें। डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) एवं समेटी समन्वयक ने प्रशिक्षण के उद्घाटन अवसर पर प्रतिभागियों का स्वागत करने के साथ–साथ समेटी द्वारा सम्पादित किये जाने वाले विभिन्न कार्यक्रम, विभिन्न प्रशिक्षणों की रूपरेखा इत्यादि के बारे में विस्तार से चर्चा किये। आपने बताया कि प्रशिक्षण के दौरान विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा रबी धान्य फसलों की वैज्ञानिक खेती, रबी फसलों की उन्नत प्रजातियाँ एवं उनके गुण, रबी दलहन एवं तिलहनी फसलों की उन्नत खेती, समन्वित उर्वरक प्रबन्धन, सिंचाई प्रबन्धन, खरपतवार प्रबन्धन, पर्वतीय क्षेत्रों हेतु विकसित सस्य तकनीक, मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती, रबी फसलों के प्रमुख कीट रोग प्रबन्धन इत्यादि के बारे में व्याख्यान दिया गया। प्रतिभागियों द्वारा व्यावहारिक जानकारी प्राप्त करने हेतु फसल उत्पादन केन्द्र का भ्रमण भी किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 17 विभागीय अधिकारी एवं प्रगतिशील कृषकों द्वारा भाग लिया गया।

समय	विवर ा	वाताकार	माबाइल
सितम्बर 21, 2023			
9.30–9.40	पंजीकरण	यंग प्रोफेशनल–II	
9.40–10.00	उद्घाटन कार्यक्रम	डा0 जय प्रकाश जायसवाल निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड	
10.00–11.15	रबी धान्य फसलों की वैज्ञानिक खेती	डा0 जितेन्द्र क्वात्रा, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) एवं प्रभारी अधिकारी, कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर	7500241509
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	गेहूँ व अन्य रबी फसलों की उन्नत प्रजातियाँ– किसानों हेतु वरदान	डा0 जय प्रकाश जायसवाल प्राध्यापक (पादप प्रजनन) निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड	
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–16.00	रबी दलहनी फसलों की उन्नत खेती	डा0 बी0एस0 कार्की, सेवानिवृत्त प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) प्रसार शिक्षा निदेशालय	7579174120
16.00–16.15	चाय		
16.15–17.30	रबी तिलहनी फसलों की उन्नत खेती	डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) प्रसार शिक्षा निदेशालय	9412952034
सितम्बर 22, 2023			
10.00–11.15	रबी फसलों में समन्वित उर्वरक प्रबन्धन	डा0 अरविन्द कुमार त्यागी, सह प्राध्यापक, मृदा विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय	9412801873
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	रबी फसलों में सिंचाई प्रबन्धन	डा0 गुरविन्दर सिंह, प्राध्यापक सस्य विज्ञान, कृषि महाविद्यालय	9456067551
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–16.00	रबी फसलों में खरपतवार प्रबन्धन	डा0 सी0 तिवारी, प्राध्यापक एवं प्रभारी अधिकारी, कृषि विज्ञान केन्द्र, ज्योलीकोट	9412655395
16.00–16.15	चाय		
16.15–17.30	पर्वतीय क्षेत्रों में रबी फसलों की वैज्ञानिक खेती	डा0 आर0के0 शर्मा, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान), प्रसार शिक्षा निदेशालय	9412995904
सितम्बर 23, 2023			
10.00–11.15	रबी फसलों के प्रमुख रोग एवं प्रबन्धन	डा0 निर्मला भट्ट, प्राध्यापक प्रसार शिक्षा निदेशालय	9412044788
11.15–11.30	चाय		

11.30–13.00	रबी फसलों के प्रमुख कीट एवं प्रबन्धन	डा0 जे0पी0 पुरवार, सह प्राध्यापक कीट विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय	9411324356
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–16.00	मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती	डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) प्रसार शिक्षा निदेशालय	9412952034
16.00–17.30	प्रमाण–पत्र वितरण एवं समापन	डा0 जय प्रकाश जायसवाल निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड	

5.11 बाजार आधारित प्रसार

संस्थान द्वारा 'बाजार आधारित प्रसार' विषयक प्रशिक्षण का आयोजन अक्टूबर 19–21, 2023 तक किया गया। प्रशिक्षण के समापन अवसर पर निदेशक प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड, डा0 जय प्रकाश जायसवाल ने प्रतिभागियों से कहा कि प्रायः कृषक विभिन्न फसल और सब्जियों के उत्पाद तैयार कर लेते हैं परन्तु समुचित विपणन के अभाव में उन्हें उचित लाभ नहीं मिल पाता है। आपने कहा कि इस प्रशिक्षण के दौरान विषय विशेषज्ञों द्वारा बताये गये विपणन सम्बन्धी तकनीक का पालन कर कृषक अपने उत्पादों का प्रभावी विपणन करते हुए अपने आर्थिकी में कई गुना बढोत्तरी कर सकेंगे। आपने विशेष रूप से कहा कि पर्वतीय क्षेत्रों की विशिष्ट फसलें जैसे मंडुवा, मादिरा, गहत, रामदाना, उगल, गडेरी, माल्टा, कीवी, सेब इत्यादि के विपणन हेतु ऑनलाइन प्लेटफार्म का प्रयोग करते हुए भरपूर लाभ लिया जा सकता है। डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) एवं समेटी समन्वयक ने प्रशिक्षण के उद्घाटन अवसर पर निदेशक समेटी तथा उपस्थित प्रतिभागियों का स्वागत करने के साथ–साथ समेटी द्वारा सम्पादित किये जाने वाले विभिन्न कार्यक्रम, विभिन्न प्रशिक्षणों की रूपरेखा इत्यादि के बारे में विस्तार से चर्चा किये। आपने बताया कि प्रशिक्षण के दौरान विश्वविद्यालय के

प्रमाण–पत्र वितरित करते हुए वैज्ञानिक

वैज्ञानिकों द्वारा बाजार आधारित प्रसार–परिचय एवं वर्तमान परिदृश्य में महत्व, बाजार सूचना तंत्र एवं उत्पाद विपणन, कृषि विपणन– समस्या एवं समाधान, कुक्कुट पालन में बाजार आधारित प्रसार का महत्व, दुग्ध उत्पादों में बाजार आधारित मूल्यवर्धन, हस्तशिल्प उत्पादों का बढ़ता बाजार, कृषि विपणन में एगमार्क एवं ई–नाम की भूमिका एवं मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती इत्यादि के बारे में व्याख्यान दिया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 12 प्रशिक्षणार्थियों द्वारा भाग लिया गया।

समय	विवरण	वार्ताकार	मोबाइल नं0
अक्टूबर 19, 2023			
9.30–9.40	पंजीकरण	यंग प्रोफेशनल–II	
9.40–10.00	उद्घाटन कार्यक्रम	डा0 जय प्रकाश जायसवाल निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड	
10.00–11.15	बाजार आधारित प्रसार–परिचय एवं वर्तमान परिदृश्य में महत्व	डा0 अर्पिता शर्मा काण्डपाल, सह प्राध्यापक, कृषि संचार विभाग, कृषि महाविद्यालय	9639617853
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	बाजार सूचना तंत्र एवं उत्पाद विपणन	डा0 स्नेहा दौहरे, सहा0 प्राध्यापक कृषि व्यवसाय प्रबन्धन महाविद्यालय	7535988994
13.00–14.30	भोजनावकाश		

14.30–16.00	बेमौसमी सब्जी उत्पादन में बाजार आधारित प्रसार का महत्व	डा0 एस0के0 मौर्या, सहायक प्राध्यापक सब्जी विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय	9411159800
16.00–16.15	चाय		
16.15–17.30	कृषि विपणन– समस्या एवं समाधान	डा0 रूचि गंगवार, सहा0 प्राध्यापक कृषि अर्थशास्त्र विभाग, कृषि महाविद्यालय	9997044336
अक्टूबर 20, 2023			
10.00–11.15	फलों में तुड़ाई पूर्व एवं तुड़ाई उपरान्त मूल्यवर्धन हेतु बाजार आधारित प्रबन्धन	डा0 प्रतिभा सिंह, सह प्राध्यापक उद्यान विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय	7055016142
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	कुक्कुट पालन में बाजार आधारित प्रसार का महत्व	डा0 रिपुसूदन कुमार, सह निदेशक शैक्षणिक कुक्कुट फार्म, नगला	9412017906
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–16.00	दुग्ध उत्पादों में बाजार आधारित मूल्यवर्धन	डा0 अनीता, सह प्राध्यापक पशुचिकित्सा उत्पादन प्रौद्योगिकी पशुचिकित्सा महाविद्यालय	9411159836
16.00–16.15	चाय		
16.15–17.30	हस्तशिल्प उत्पादों का बढ़ता बाजार	श्रीमती अमरेश सिरोही, विशेषज्ञ (गृह विज्ञान) एवं प्रभारी अधिकारी कृषि विज्ञान केन्द्र, लोहाघाट	9412088082
अक्टूबर 21, 2023			
10.00–11.15	बकरी पालन एवं बाजार प्रबन्धन	डा0 आर0के0 शर्मा, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, पशुधन उत्पादन प्रबन्धन विभाग, पशुचिकित्सा महाविद्यालय	9412121081 9837637244
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	कृषि विपणन में एगमार्क एवं ई–नाम की भूमिका	डा0 चन्द्रदेव, सह प्राध्यापक कृषि अर्थशास्त्र विभाग, कृषि महाविद्यालय	9412420903
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–16.00	मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती	डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) प्रसार शिक्षा निदेशालय	9412952034
16.00–17.30	प्रमाण–पत्र वितरण एवं समापन	डा0 जय प्रकाश जायसवाल निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड	

5.12 मौन पालनः स्वरोजगार का अतिरिक्त माध्यम

मधुमक्खी पालन कृषि का एक उभरता हुआ उद्यम है, जिसे कृषक निरन्तर आय सृजन का माध्यम बना सकते हैं। विषय की महत्ता को दृष्टिगत रखते हुए संस्थान ने मधुमक्खी पालक, उद्यान निरीक्षक, कृषि/आतमा के अधिकारियों हेतु 'मौन पालनः स्वरोजगार का अतिरिक्त माध्यम' विषयक प्रशिक्षण नवम्बर 01–04, 2023 को आयोजित किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्घाटन के अवसर पर निदेशक प्रसार शिक्षा, समेटी–उत्तराखण्ड, ने प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए कहा कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मधुमक्खी

मधुमक्खी शोध एवं प्रशिक्षण केन्द्र पर भ्रमण

पालन काश्तकारों हेतु वरदान साबित हो सकता है। पर्वतीय क्षेत्रों में जहाँ बन्दर फसलों को क्षति पहुँचाते हैं वहां यह और भी सुलभ हो सकती है। चार दिवसीय इस

प्रशिक्षण में आधुनिक मौन पालन एवं भविष्य में विकास की सम्भावनाएं, मधुमक्खियों का जीवन चक्र, फसलों में परागण एवं उनका महत्व, जैविक मौन पालन प्रबन्धन, मौनचर एवं मौनालय स्थानान्तरण एवं प्रबन्धन, मौन पालन विविधीकरण, मौन वाटिका एवं रानी की ऋतुवार देखभाल, पर्वतीय क्षेत्रों में परम्परागत ढंग से पल रही (Apis cerena indica) मौनों का संर्वधन, मधुमक्खियों में लगने वाली प्रमुख बीमारियों एवं शत्रुओं का प्रबन्धन, मधुमक्खी पालन के प्रमुख उत्पाद एवं उपयोग, मधुमक्खी पालन व्यवसाय की आर्थिक विवेचना एवं मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती जैसे विषयों पर वार्ता का आयोजन किया गया। मधुमक्खी शोध केन्द्र पर व्यावसायिक मौन वाटिका प्रबन्धन एवं मौन पालन में प्रयुक्त होने वाले उपकरण एवं उपयोग जैसे विषयों की प्रायोगिक जानकारी दी गयी। प्रतिभागियों द्वारा पूछे गये प्रश्नों का भी वैज्ञानिकों ने जवाब दिया। प्रशिक्षणार्थियों के प्रायोगिक कार्य कुशलता में वृद्धि हेतु इनको मौन पालन शोध एवं प्रसार केन्द्र एवं विश्वविद्यालय के अन्य शोध केन्द्रों का भ्रमण कराया गया। चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 16 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग

समय	विवरण	वार्ताकार	मोबाइल नं0
नवम्बर 01, 2023			
9.30–9.40	पंजीकरण	यंग प्रोफेशनल–II	
9.40–10.00	उद्घाटन कार्यक्रम	डा0 जय प्रकाश जायसवाल निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड	
10.00–11.15	आधुनिक मौन पालन एवं भविष्य में विकास की सम्भावनाएं	डा0 प्रमोद मल्ल, प्राध्यापक कीट विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय	9456345516
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	मधुमक्खियों का जीवन चक्र	डा0 रेनू पाण्डे, सहायक प्राध्यापक कीट विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय	8954722026
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–16.00	मौन पालन विविधीकरण	डा0 रूचिरा तिवारी, प्राध्यापक कीट विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय	9411006092
16.00–16.15	चाय		
16.15–17.30	फसलों में परागण एवं उनका महत्व	डा0 जे0पी0 पुरवार, प्राध्यापक कीट विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय	9411324356
नवम्बर 02, 2023			
10.00–11.15	मौनचर एवं मौनालय स्थानान्तरण एवं प्रबन्धन	डा0 प्रमोद मल्ल, प्राध्यापक कीट विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय	9456345516
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	जैविक मौन पालन प्रबन्धन	डा0 रूचिरा तिवारी, प्राध्यापक कीट विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय	9411006092
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–16.00	पर्वतीय क्षेत्रों में परम्परागत ढंग से पल रही (*Apis Cerena Indica*) मौनों का संर्वधन	डा0 रेनू पाण्डे, सहायक प्राध्यापक कीट विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय	8954722026
16.00–16.15	चाय		
16.15–17.30	मधुमक्खी पालन के प्रमुख उत्पाद एवं उपयोग	डा0 रेनू पाण्डे, सहायक प्राध्यापक कीट विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय	8954722026
नवम्बर 03, 2023			
10.00–11.15	मौन वाटिका एवं रानी की ऋतुवार देखभाल	डा0 प्रमोद मल्ल, प्राध्यापक कीट विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय	9456345516

11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	मधुमक्खियों में लगने वाली प्रमुख बीमारियों एवं शत्रुओं का प्रबन्धन	डा0 जे0पी0 पुरवार, प्राध्यापक कीट विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय	9411324356
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–17.30	मौन पालन में प्रयुक्त होने वाले विभिन्न उपकरण एवं उनका उपयोग (प्रक्षेत्र पर) एवं विश्वविद्यालय की अन्य शोध इकाईयों का भ्रमण	डा0 वीर पाल गिरी, परियोजना सहायक कीट विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय	6396083158
नवम्बर 04, 2023			
10.00–11.15	मधुमक्खी पालन व्यवसाय की आर्थिक विवेचना	डा0 रेनू पाण्डे, सहायक प्राध्यापक कीट विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय	8954722026
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती	डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) प्रसार शिक्षा निदेशालय	9412952034
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–16.00	ट्रीट इकाई का भ्रमण		
16.00–17.30	प्रमाण–पत्र वितरण एवं समापन	डा0 जय प्रकाश जायसवाल निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड	

किया।

5.13 उन्नत मत्स्य पालन तकनीक

संस्थान द्वारा 'उन्नत मत्स्य पालन तकनीक' विषयक प्रशिक्षण का आयोजन दिसम्बर 06–09, 2023 तक किया गया। प्रशिक्षण के उद्घाटन अवसर पर निदेशक प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड, डा0 जय प्रकाश जायसवाल ने प्रतिभागियों से कहा कि कृषक अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार लघु अथवा वृहद स्तर पर मत्स्य पालन तकनीक अपनाकर अपनी आय में पर्याप्त बढ़ोत्तरी कर सकते हैं। कुछ विशिष्ट मछलियों की प्रजाति जैसे ट्राउट का उत्पादन कर आर्थिकी में कई गुना वृद्धि सम्भव हो सकती है। विश्वविद्यालय तकनीकी जानकारी प्रदान करने हेतु सदैव कृषकों के साथ खड़ा रहेगा। डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) एवं समेटी समन्वयक ने प्रशिक्षण के उद्घाटन अवसर पर निदेशक समेटी तथा उपस्थित प्रतिभागियों का स्वागत करने के साथ–साथ समेटी द्वारा सम्पादित किये जाने वाले विभिन्न कार्यक्रम, विभिन्न प्रशिक्षणों की रूपरेखा इत्यादि के बारे में विस्तार से चर्चा किये। आपने बताया कि प्रशिक्षण के दौरान विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा मत्स्य पालन : एक लाभकारी व्यवसाय, ठण्डे जल में मछली पालन, मत्स्य बीज उत्पादन एवं संचय, मत्स्य पालन में प्राकृतिक एवं कृत्रिम आहार व्यवस्था, तालाबों की जलीय गुणवत्ता, मत्स्य रोग एवं निदान, पालने योग्य

उन्नत मत्स्य पालन तकनीक पर प्रशिक्षण

मछलियां एवं उनकी पहचान, मत्स्य तालाब का निर्माण एवं देखरेख, मत्स्य पालन में विभिन्न प्रकार के जालों का प्रयोग, मत्स्य निकासी एवं विपणन, एक्वेरियम निर्माण एवं रंगीन मछली पालन, समन्वित मत्स्य पालनः लघु कृषकों हेतु आय का साधन, मत्स्य पालन की अभिनव तकनीकें, मत्स्य प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन तथा मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती इत्यादि के बारे में व्याख्यान दिया गया। प्रशिक्षण के समापन सत्र में कार्यवाहक निदेशक प्रसार शिक्षा, डा0 आर0के0 शर्मा, संयुक्त निदेशक प्रसार, डा0 संजय चौधरी ने प्रशिक्षण सम्बन्धी बहुमूल्य विचार रखें। वक्ताओं ने मत्स्य पालन विधा कृषकों के आजीविका का आधार बताते हुए इसको प्रोत्साहन देने की बात कही। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 23 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया।

समय	विवरण	वार्ताकार	मोबाइल
दिसम्बर 06, 2023			
9.30–9.40	पंजीकरण	यंग प्रोफेशनल–II	
9.40–10.00	उद्घाटन कार्यक्रम	डा0 जय प्रकाश जायसवाल निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड	
10.00–11.15	मत्स्य पालन : एक लाभकारी व्यवसाय	डा0 आशुतोष मिश्रा, प्राध्यापक जलीय पर्यावरण प्रबन्धन विभाग मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय	9410120651
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	ठण्डे जल में मछली पालन	डा0 राजेश कुमार, प्राध्यापक जल जीव पालन विभाग मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय	9412327100
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–16.00	मत्स्य बीज उत्पादन एवं संचय	डा0 एस0के0 शर्मा, प्राध्यापक (मत्स्य पालन) कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर (ऊधमसिंहनगर)	9412926530
16.00–16.15	चाय		
16.15–17.30	मत्स्य पालन में प्राकृतिक एवं कृत्रिम आहार व्यवस्था	डा0 मालविका दास त्रकरू, अधिष्ठाता एवं प्राध्यापक, जलीय पर्यावरण प्रबन्धन विभाग मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय	9411784020
दिसम्बर 07, 2023			
10.00–11.15	तालाबों की जलीय गुणवत्ता	डा0 आशुतोष मिश्रा, प्राध्यापक जलीय पर्यावरण प्रबन्धन विभाग मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय	9410120651
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	मत्स्य रोग एवं निदान	डा0 अवधेश कुमार, प्राध्यापक जल जीव पालन विभाग	9411160102
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–16.00	पालने योग्य मछलियां एवं उनकी पहचान (प्रायोगिक–मत्स्य प्रक्षेत्र पर)	डा0 आकांक्षा खाती, सहा0 प्राध्यापक जल जीव पालन विभाग मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय	8650602200
16.00–16.15	चाय		
16.15–17.30	मत्स्य तालाब का निर्माण एवं देखरेख (प्रायोगिक–मत्स्य प्रक्षेत्र पर)	डा0 अनूप कुमार, प्राध्यापक मत्स्य प्रग्रहण एवं परिसंस्करण विभाग	9411122943 8475008886
दिसम्बर 08, 2023			
10.00–11.15	मत्स्य पालन में विभिन्न प्रकार के जालों का प्रयोग, मत्स्य निकासी एवं विपणन	डा0 अनूप कुमार, प्राध्यापक मत्स्य प्रग्रहण एवं परिसंस्करण विभाग	9411122943 8475008886
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	एक्वेरियम निर्माण एवं रंगीन मछली पालन	डा0 राजेश कुमार, प्राध्यापक जल जीव पालन विभाग मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय	9412327100
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–16.00	समन्वित मत्स्य पालनः लघु कृषकों हेतु आय का साधन	डा0 वी0के0 सिंह, प्राध्यापक (मत्स्य पालन) कृषि विज्ञान केन्द्र, ज्योलीकोट (नैनीताल)	9411539862

16.00–16.15	चाय		
16.15–17.30	मत्स्य पालन की अभिनव तकनीकें	डा0 वी0के0 सिंह, प्राध्यापक (मत्स्य पालन) कृषि विज्ञान केन्द्र, ज्योलीकोट (नैनीताल)	9411539862
दिसम्बर 09, 2023			
10.00–11.15	मत्स्य प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन	डा0 विपुल गुप्ता, प्राध्यापक मत्स्य प्रग्रहण एवं परिसंस्करण विभाग	7500241558
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती	डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) प्रसार शिक्षा निदेशालय	9412952034
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–16.00	ट्रीट इकाई का भ्रमण		
16.00–17.30	प्रमाण–पत्र वितरण एवं समापन	डा0 जय प्रकाश जायसवाल निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड	

5.14 प्राकृतिक खेती

संस्थान द्वारा 'प्राकृतिक खेती' विषयक प्रशिक्षण का आयोजन दिसम्बर 21–23, 2023 तक किया गया। प्रशिक्षण के उद्घाटन अवसर पर निदेशक प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड, डा0 जितेन्द्र क्वात्रा ने प्रतिभागियों से कहा कि कृषि की वर्तमान परिस्थिति को देखते हुए प्राकृतिक खेती वरदान साबित हो सकता है। कृषि में कृषि रक्षा रसायन एवं रासायनिक उर्वरकों के अनियोजित प्रयोग के कारण मृदा की उर्वरा शक्ति वर्ष दर वर्ष क्षीण होती जा रही है। इसके दुष्परिणाम से मानव के साथ–साथ पशु एवं अन्य जीवधारी भी प्रभावित हो रहे हैं। निश्चित रूप से इसका विकल्प प्राकृतिक खेती हो सकता है। आपने यह भी कहा कि माननीय प्रधानमंत्री भी इस विधा को पूरे देश में विस्तारित करने का आह्वान करते रहते हैं। डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) एवं समेटी समन्वयक ने प्रशिक्षण के उद्घाटन अवसर पर निदेशक समेटी तथा उपस्थित प्रतिभागियों का स्वागत करने के साथ–साथ समेटी द्वारा सम्पादित किये जाने वाले विभिन्न कार्यक्रम, विभिन्न प्रशिक्षणों की रूपरेखा इत्यादि के बारे में विस्तार से चर्चा किये। आपने बताया कि प्रशिक्षण के दौरान विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा प्राकृतिक खेती– परिचय एवं महत्व, प्राकृतिक खेती– समस्याएं एवं समाधान, बदलते पर्यावरण के परिवेश में प्राकृतिक खेती का महत्व, प्राकृतिक खेती में मृदा स्वास्थ्य एवं फसल सुरक्षा, प्राकृतिक खेती में मृदा स्वास्थ्य हेतु प्रयुक्त होने वाले आदानों के बनाने की विधियों का प्रदर्शन, प्राकृतिक

प्राकृतिक खेती प्रशिक्षण का आयोजन

खेती में फसल सुरक्षा हेतु प्रयुक्त होने वाले आदानों के बनाने की विधियों का प्रदर्शन, प्राकृतिक खेती के अन्तर्गत आदानों के विभिन्न फसलों में प्रयोग की विधियाँ, विश्वविद्यालय में प्राकृतिक खेती पर चल रहे शोध कार्यों का प्रदर्शन, प्राकृतिक खेती में गौधन प्रबन्धन, प्राकृतिक खेती के बारे में उत्तराखण्ड से आये प्रतिभागियों से परिचर्चा एवं समाधान, परम्परागत कृषि तकनीक एवं प्राकृतिक कृषि तथा मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती इत्यादि के बारे में व्याख्यान दिया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में डा0 सुनीता टी0 पाण्डे, प्राध्यापक, डा0 एस0पी0एस0 बेनीवाल सहित अनेक विषय विशेषज्ञों ने व्याख्यान एवं प्रायोगिक प्रदर्शन सम्पन्न करवाये। प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 16 प्रतिभागियों द्वारा प्रतिभाग किया गया।

समय	विवरण	वार्ताकार	मोबाइल
दिसम्बर 21, 2023			
.30–9.40	पंजीकरण	यंग प्रोफेशनल–II	
.40–10.00	उद्घाटन कार्यक्रम	डा0 जितेन्द्र क्वात्रा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड	
10.00–11.15	प्राकृतिक खेती– परिचय एवं महत्व	डा0 सुनीता टी0 पाण्डेय, प्राध्यापक सस्य एवं कार्यकारी सचिव, एशियन एग्री हिस्ट्री फाउण्डेशन, पंतनगर	9412120735
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	प्राकृतिक खेती– समस्याएं एवं समाधान	डा0 एस0पी0एस0 बेनीवाल, पूर्व प्राध्यापक एवं अध्यक्ष, एशियन एग्री हिस्ट्री फाउण्डेशन, पंतनगर	8937005550
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–16.00	बदलते पर्यावरण के परिवेश में प्राकृतिक खेती का महत्व	डा0 वीर सिंह, एमेरेट्स वैज्ञानिक पर्यावरणीय विज्ञान विभाग, विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय	7500241416
16.00–16.15	चाय		
	प्राकृतिक खेती में मृदा स्वास्थ्य एवं फसल सुरक्षा	अध्यक्ष, एशियन एग्री हिस्ट्री फाउण्डेशन, पंतनगर	
दिसम्बर 22, 2023			
10.00–11.15	प्राकृतिक खेती में मृदा स्वास्थ्य हेतु प्रयुक्त होने वाले आदानों के बनाने की विधियों का प्रदर्शन (प्रायोगिक– फसल अनुसंधान केन्द्र)	डा0 सुनीता टी0 पाण्डेय, प्राध्यापक सस्य एवं कार्यकारी सचिव, एशियन एग्री हिस्ट्री फाउण्डेशन, पंतनगर	9412120735
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	प्राकृतिक खेती में फसल सुरक्षा हेतु प्रयुक्त होने वाले आदानों के बनाने की विधियों का प्रदर्शन (प्रायोगिक– फसल अनुसंधान केन्द्र)	डा0 सुनीता टी0 पाण्डेय, प्राध्यापक सस्य एवं कार्यकारी सचिव, एशियन एग्री हिस्ट्री फाउण्डेशन, पंतनगर	9412120735
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–16.00	प्राकृतिक खेती के अन्तर्गत आदानों के विभिन्न फसलों में प्रयोग की विधियाँ (प्रायोगिक– फसल अनुसंधान केन्द्र)	डा0 सुनीता टी0 पाण्डेय, प्राध्यापक सस्य एवं कार्यकारी सचिव, एशियन एग्री हिस्ट्री फाउण्डेशन, पंतनगर	9412120735
16.00–16.15	चाय		
16.15–17.30	विश्वविद्यालय में प्राकृतिक खेती पर चल रहे शोध कार्यों का प्रदर्शन	डा0 सुनीता टी0 पाण्डेय, प्राध्यापक सस्य एवं कार्यकारी सचिव, एशियन एग्री हिस्ट्री फाउण्डेशन, पंतनगर	9412120735
दिसम्बर 23, 2023			
10.00–11.15	प्राकृतिक खेती में गौधन प्रबन्धन	डा0 आर0एस0 चौहान, विभागाध्यक्ष पशु रोग विज्ञान, पशुचिकित्सा महाविद्यालय	9711585882
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	प्राकृतिक खेती के बारे में उत्तराखण्ड से आये प्रतिभागियों से परिचर्चा एवं समाधान	डा0 सुनीता टी0 पाण्डेय, प्राध्यापक सस्य एवं कार्यकारी सचिव, एशियन एग्री हिस्ट्री फाउण्डेशन, पंतनगर	9412120735
13.00–14.00	भोजनावकाश		

14.00–15.00	परम्परागत कृषि तकनीक एवं प्राकृतिक कृषि	डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) प्रसार शिक्षा निदेशालय	9412952034
15.00–16.00	मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती	डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) प्रसार शिक्षा निदेशालय	9412952034
16.00–17.30	प्रमाण–पत्र वितरण एवं समापन	डा0 जितेन्द्र क्वात्रा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड	

5.15 संरक्षित सब्जी उत्पादन

संस्थान द्वारा 'संरक्षित सब्जी उत्पादन' विषयक प्रशिक्षण का आयोजन जनवरी 10–13, 2024 तक किया गया। प्रशिक्षण के उद्घाटन अवसर पर डॉ० जितेन्द्र क्वात्रा, निदेशक प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड ने प्रतिभागियों से कहा कि संरक्षित सब्जी उत्पादन ऐसा विषय है, जो कृषकों की आय में तीन से चार गुना वृद्धि कर सकती है। इस अवसर पर आपने सब्जियों में रासायनिक उर्वरक एवं कृषि रक्षा रसायनों के नियोजित प्रयोग पर बल दिया। डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) एवं समेटी समन्वयक ने प्रशिक्षण के उद्घाटन अवसर पर निदेशक समेटी तथा उपस्थित प्रतिभागियों का स्वागत करने के साथ–साथ समेटी द्वारा सम्पादित किये जाने वाले विभिन्न कार्यक्रम, विभिन्न प्रशिक्षणों की रूपरेखा इत्यादि के बारे में विस्तार से चर्चा किये। आपने बताया कि प्रशिक्षण के दौरान विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा संरक्षित कृषि, पालीहाउस का उत्तराखण्ड के कृषि में महत्व, पर्वतीय क्षेत्रों के लिए उपयुक्त कम लागत वाली संरक्षित संरचनाओं के अन्तर्गत सब्जी उत्पादन, संरक्षित संरचनाओं के प्रकार, निर्माण एवं वातावरण नियंत्रण की विधियाँ, विभिन्न संरक्षित संरचनाओं में कद्दूवर्गीय

सूक्ष्म सिंचाई तकनीक सम्बन्धी यंत्रों पर परिचर्चा

सब्जियों की उत्पादन तकनीक, संरक्षित संरचनाओं में खीरा उत्पादन तकनीक, विभिन्न संरक्षित संरचनाओं में टमाटर की उत्पादन तकनीक, विभिन्न संरक्षित संरचनाओं में शिमला मिर्च उत्पादन तकनीक, संरक्षित खेती हेतु उपयुक्त सिंचाई पद्धतियाँ, विभिन्न संरक्षित संरचनाओं में पौध उत्पादन तकनीक, संरक्षित खेती में मल्च का महत्व एवं उपयोग, संरक्षित सब्जी उत्पादन में समन्वित कीट एवं रोग प्रबन्धन एवं मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती इत्यादि के बारे में व्याख्यान दिया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 08 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया।

समय	विवरण	वार्ताकार	मोबाइल नं0
जनवरी 10, 2024			
9.30–9.40	पंजीकरण	यंग प्रोफेशनल–II	
9.40–10.00	उद्घाटन कार्यक्रम	डा0 जितेन्द्र क्वात्रा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड	
10.00–11.15	संरक्षित कृषि, पालीहाउस का उत्तराखण्ड के कृषि में महत्व	डा0 वी0पी0 सिंह, प्राध्यापक उद्यान विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय	9536102111
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	पर्वतीय क्षेत्रों के लिए उपयुक्त कम लागत वाली संरक्षित संरचनाओं के अन्तर्गत सब्जी उत्पादन	डा0 ललित भट्ट, सह निदेशक सब्जी अनुसंधान केन्द्र	9412986485
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–16.00	संरक्षित संरचनाओं के प्रकार, निर्माण एवं वातावरण नियंत्रण की विधियाँ	डा0 पी0के0 सिंह, प्राध्यापक सिंचाई एवं जल निकास प्रौद्योगिकी, प्रौद्योगिकी महाविद्यालय	9411159535

16.00–16.15	चाय		
16.15–17.30	विभिन्न संरक्षित संरचनाओं में कद्दूवर्गीय सब्जियों की उत्पादन तकनीक	डा0 एस0के0 मौर्या, सह प्राध्यापक सब्जी विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय	9411159800
जनवरी 11, 2024			
10.00–11.15	संरक्षित संरचनाओं में खीरा उत्पादन तकनीक	डा0 डी0के0 सिंह, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष सब्जी विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय	7500241466
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	विभिन्न संरक्षित संरचनाओं में टमाटर की उत्पादन तकनीक	डा0 धीरेन्द्र सिंह, प्राध्यापक सब्जी विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय	9897865329
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–16.00	विभिन्न संरक्षित संरचनाओं में शिमला मिर्च उत्पादन तकनीक	डा0 धीरेन्द्र सिंह, प्राध्यापक सब्जी विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय	9897865329
16.00–16.15	चाय		
16.15–17.30	संरक्षित खेती हेतु उपयुक्त सिंचाई पद्धतियाँ	डा0 पी0के0 सिंह, प्राध्यापक सिंचाई एवं जल निकास प्रौद्योगिकी, प्रौद्योगिकी महाविद्यालय	9411159535
जनवरी 12, 2024			
10.00–11.15	विभिन्न संरक्षित संरचनाओं में पौध उत्पादन तकनीक (स्थल– सब्जी अनुसंधान केन्द्र)	डा0 एस0के0 मौर्या, सह प्राध्यापक सब्जी विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय	9411159800
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	संरक्षित खेती में मल्च का महत्व एवं उपयोग (स्थल– सब्जी अनुसंधान केन्द्र)	डा0 ललित भट्ट, सह निदेशक सब्जी अनुसंधान केन्द्र	9412986485
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–16.00	संरक्षित सब्जी उत्पादन में समन्वित रोग प्रबन्धन	डा0 निर्मला भट्ट, सह निदेशक प्रसार शिक्षा निदेशालय	9412044788
16.00–16.15	चाय		
16.15–17.30	ट्रीट एवं अन्य शोध इकाईयों का भ्रमण	डा0 आर0के0 शर्मा, प्राध्यापक एवं प्रभारी अधिकारी 'ट्रीट'	9412995904
जनवरी 13, 2024			
10.00–11.15	संरक्षित सब्जी उत्पादन में समन्वित कीट प्रबन्धन	डा0 जे0पी0 पुरवार, सहा0 प्राध्यापक कीट विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय	9411324356
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती	डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) प्रसार शिक्षा निदेशालय	9412952034
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–16.00	प्रमाण–पत्र वितरण एवं समापन	डा0 जितेन्द्र क्वात्रा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड	

5.16 व्यावसायिक मशरूम उत्पादन

संस्थान द्वारा 'व्यावसायिक मशरूम उत्पादन' विषयक प्रशिक्षण का आयोजन जनवरी 17–20, 2024 तक किया गया। प्रशिक्षण के उद्घाटन अवसर पर निदेशक प्रसार शिक्षा ने प्रतिभागियों से कहा कि मशरूम उत्पादन किसानों की आजीविका का सशक्त माध्यम हो सकता है। आपने यह भी कहा कि प्रशिक्षण के दौरान सीखे गये तकनीक को अपने तक ही न रखकर आसपास के कृषकों का भी ज्ञानवर्धन करें, जिससे अधिक से अधिक कृषक इस विधा से लाभान्वित हो सके। प्रशिक्षण के समापन अवसर पर निदेशक प्रसार शिक्षा एवं समेटी, डा0 जितेन्द्र क्वात्रा ने कृषकों से

आह्वान किया कि मशरूम उत्पादन तकनीक अपनाकर कृषक कम समय में अपनी आय में दो से चार गुना बढ़ोत्तरी कर सकते हैं। इस तकनीक में बहुत बड़े क्षेत्रफल की आवश्यकता नही होती है एवं कृषक इसको छोटे–छोटे कमरों में भी कम उत्पादन लागत से सम्पादित कर सकते हैं। पर्वतीय क्षेत्र में निरन्तर बढते बन्दरों की समस्या को दृष्टिगत रखते हुए यह तकनीक कृषकों हेतु वरदान हो सकती है। डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) एवं समेटी समन्वयक ने समेटी द्वारा सम्पादित किये जाने वाले विभिन्न कार्यक्रम, विभिन्न प्रशिक्षणों की रूपरेखा इत्यादि के बारे में विस्तार से चर्चा किये। आपने बताया कि प्रशिक्षण के दौरान विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा मशरूम की प्रमुख प्रजातियां तथा उत्पादन की स्थिति, मशरूम गृह का आकार–प्रकार एवं वायु संचार व्यवस्था, ढींगरी एवं दूधिया मशरूम की वैज्ञानिक खेती, माध्यम की तैयारी एवं रखरखाव, मशरूम कल्चर, मास्टर स्पान एवं व्यावसायिक स्पान, शुद्ध एवं संक्रमित स्पान की पहचान तथा स्पान क्रय एवं परिवहन में सावधानियाँ, खाद्य, अखाद्य तथा औषधीय मशरूम की पहचान एवं गुणवत्ता, बटन मशरूम के कम्पोस्ट एवं आवरण मृदा बनाने की विधियां एवं उपयोग, कम्पोस्ट एवं आवरण मृदा बनाना, ढिंगरी एवं दूधिया मशरूम का माध्यम तैयार करना, बीजाई एवं बैग तैयार करना, बटन मशरूम बीजाई एवं

मशरूम उत्पादन संबंधी प्रायोगिक कार्य

फसल उत्पादन प्रबन्धन, मशरूम में लगने वाले प्रमुख कीट, निमेटोड एवं रोगों की पहचान व रोकथाम, ऋशि मशरूम की खेती की विधि, मशरूम उत्पादन का आर्थिक विश्लेषण एवं विपणन व्यवस्था, मशरूम की चुनाई उपरान्त प्रौद्यौगिकी/मूल्यवर्धन, मानक, पैकिंग, भण्डारण एवं मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती इत्यादि के बारे में व्याख्यान दिया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में मशरूम शोध एवं प्रशिक्षण केन्द्र के संयुक्त निदेशक डा0 एस0के0 मिश्रा, अन्य वैज्ञानिक एवं पादप रोग विभाग के वैज्ञानिकों ने व्याख्यान एवं प्रायोगिक प्रदर्शन सम्पन्न करवाये। प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 25 प्रतिभागियों द्वारा भाग लिया गया।

समय	विवरण	वार्ताकार	मोबाइल नं0
जनवरी 17, 2024			
9.30–9.40	पंजीकरण	यंग प्रोफेशनल–II	
9.40–10.00	उद्घाटन कार्यक्रम	डा0 जितेन्द्र क्वात्रा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड	
10.00–11.15	मशरूम की प्रमुख प्रजातियां तथा उत्पादन की स्थिति	डा0 एस0के0 मिश्रा, संयुक्त निदेशक मशरूम अनुसंधान केन्द्र, पंतनगर	9410405616
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	मशरूम गृह का आकार–प्रकार एवं वायु संचार व्यवस्था	डा0 एस0के0 मिश्रा, संयुक्त निदेशक मशरूम अनुसंधान केन्द्र, पंतनगर	9410405616
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–16.00	ढींगरी एवं दूधिया मशरूम की वैज्ञानिक खेती, माध्यम की तैयारी एवं रखरखाव	डा0 के0पी0एस0 कुशवाहा, प्राध्यापक पादप रोग विज्ञान, कृषि महाविद्यालय	8475008884
16.00–16.15	चाय		
16.15–17.30	मशरूम कल्चर, मास्टर स्पान एवं व्यावसायिक स्पान, शुद्ध एवं संक्रमित स्पान की पहचान तथा स्पान क्रय एवं परिवहन में सावधानियाँ	डा0 शिल्पी रावत, सहायक प्राध्यापक पादप रोग विज्ञान, कृषि महाविद्यालय	9457555638

जनवरी 18, 2024			
10.00–11.15	खाद्य, अखाद्य तथा औषधीय मशरूम की पहचान एवं गुणवत्ता	डा0 शिल्पी रावत, सहायक प्राध्यापक पादप रोग विज्ञान, कृषि महाविद्यालय	9457555638
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	बटन मशरूम के कम्पोस्ट एवं आवरण मृदा बनाने की विधियां एवं उपयोग	डा0 एस0के0 मिश्रा, संयुक्त निदेशक मशरूम अनुसंधान केन्द्र, पंतनगर	9410405616
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–16.00	कम्पोस्ट एवं आवरण मृदा बनाना (प्रयोगात्मक कार्य–मशरूम अनुसंधान केन्द्र)	श्री सर्वेश कुमार, मशरूम अनुसंधान केन्द्र, पंतनगर	9411344540
16.00–16.15	चाय		
16.15–17.30	ढिंगरी एवं दूधिया मशरूम का माध्यम तैयार करना, बीजाई एवं बैग तैयार करना (प्रयोगात्मक कार्य–मशरूम अनुसंधान केन्द्र)	श्री सर्वेश कुमार, मशरूम अनुसंधान केन्द्र, पंतनगर	9411344540
जनवरी 19, 2024			
10.00–11.15	बटन मशरूम बीजाई एवं फसल उत्पादन प्रबन्धन	डा0 के0पी0एस0 कुशवाहा, प्राध्यापक पादप रोग विज्ञान, कृषि महाविद्यालय	8475008884
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	मशरूम में लगने वाले प्रमुख कीट, निमेटोड एवं रोगों की पहचान व रोकथाम	डा0 निर्मला भट्ट, प्राध्यापक, पादप रोग प्रसार शिक्षा निदेशालय, पंतनगर	9412044788
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–17.30	ऋषि मशरूम की खेती की विधि (व्याख्यान व प्रयोगात्मक)	डा0 निर्मला भट्ट, प्राध्यापक, पादप रोग प्रसार शिक्षा निदेशालय, पंतनगर	9412044788
जनवरी 20, 2024			
10.00–11.15	मशरूम उत्पादन का आर्थिक विश्लेषण एवं विपणन व्यवस्था	डा0 एस0के0 श्रीवास्तव, प्राध्यापक कृषि अर्थशास्त्र विभाग, कृषि महाविद्यालय	9411159836
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	मशरूम की चुनाई उपरान्त प्रौद्यौगिकी/मूल्यवर्धन, मानक, पैकिंग, भण्डारण	डा0 ओमवीर सिंह, प्राध्यापक उद्यान विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय	9411741267
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–16.00	मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती	डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) प्रसार शिक्षा निदेशालय	9412952034
16.00–17.30	प्रमाण–पत्र वितरण एवं समापन	डा0 जितेन्द्र क्वात्रा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड	

5.17 कृषि में इलेक्ट्रानिकी, सूचना एवं संचार क्रान्ति का उपयोग

कृषि में उत्पादकता बढ़ाने में नवीन सूचना तकनीक यथा् कम्प्यूटर/मोबाईल का उपयोग, संस्थानों द्वारा दिये जा रहे कृषि एडवाईजरी, उन्नत उपकरणों का प्रयोग, ड्रोन आदि का बहुत की महत्व है। कृषक इनका प्रयोग कर दक्षता में वृद्धि के साथ–साथ उपज में भी वृद्धि कर सकते हैं। संस्थान द्वारा कृषि विभाग के अधिकारी एवं प्रगतिशील कृषकों हेतु 'कृषि में इलेक्ट्रानिकी, सूचना एवं संचार क्रान्ति का उपयोग' विषयक प्रशिक्षण फरवरी 21–23, 2024 को आयोजित किया गया। प्रशिक्षण के उद्घाटन अवसर पर निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड, डा0 जितेन्द्र क्वात्रा ने कहा कि सूचना क्रान्ति के दौर में सूचना तकनीकी का प्रयोग प्रायः मानव जीवन के सभी क्षेत्रों जैसे बैंकिंग, कृषि, परिवहन, मनोरंजन, शिक्षा, व्यवसाय, आदि में किया जा रहा है। सूचना तकनीकों में रेडियो,

टेलीविजन, कम्प्यूटर, मोबाइल, वीडियो कांफ्रेन्सिंग, इन्टरनेट, पोर्टल, वेबपेज, कम्प्यूटर कियोस्क, टेली मेडिसिन आदि प्रमुख हैं।

इस प्रशिक्षण के अन्तर्गत विभिन्न मौसम पूर्वानुमान, सूचना एवं संचार तकनीक का कृषि में उपयोग, कृषि में इलेक्ट्रानिकी, सूचना एवं संचार तथा डिजिटल कृषि का उपयोग इलेक्ट्रानिकी, रिमोट सेंसिंग आधारित तकनीक का आधुनिक कृषि में उपयोग, उन्नत बागवानी में इलेक्ट्रानिकी, सूचना एवं संचार क्रांति की भूमिका, सेंसर्स एवं IOT (Internet of Things) के उपयोग द्वारा भूमि एवं वातावरण की जानकारी, सिंचाई तथा उर्वरक प्रयोग क्षमता वृद्धि हेतु परिशुद्ध कृषि (Precision Agriculture) तकनीक का प्रयोग, ड्रोन द्वारा उर्वरक एवं कीटनाशी रसायनों का छिड़काव, डेयरी/पोल्ट्री/बकरी पालन/सूकर पालन इत्यादि के विकास में सूचना एवं संचार क्रान्ति का महत्व, कृषि आधारित उत्पादों का मूल्यवर्धन एवं इनके विपणन में

प्रक्षेत्र पर ड्रोन का प्रदर्शन

इलेक्ट्रानिकी, सूचना तथा संचार क्रांति की भूमिका एवं मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती तथा औषधीय एवं सगन्ध पौध/विशेष फल/मशरूम/हाइड्रोपोनिक्स के विकास में सूचना एवं संचार क्रान्ति का महत्व आदि विषयों पर व्याख्यान दिये गये। तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 24 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया।

समय	विवरण	वार्ताकार	मोबाइल नं0
फरवरी 21, 2024			
9.30–9.40	पंजीकरण	यंग प्रोफेशनल–II	
9.40–10.00	उद्घाटन कार्यक्रम	डा0 जितेन्द्र क्वात्रा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड	
10.00–11.15	विभिन्न मौसम पूर्वानुमान, सूचना एवं संचार तकनीक का कृषि में उपयोग	डा0 राजीव रंजन, सहा0 प्राध्यापक कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय	9760824896
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	कृषि में इलेक्ट्रानिकी, सूचना एवं संचार तथा डिजिटल कृषि का उपयोग	डा0 अभिषेक तोमर, प्राध्यापक इलैक्ट्रानिक एवं संचार अभियांत्रिकी	9410356092
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–16.00	रिमोट सेंसिंग आधारित तकनीक का आधुनिक कृषि में उपयोग	डा0 राजीव रंजन, सहा0 प्राध्यापक कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय	9760824896
16.00–16.15	चाय		
16.15–17.30	उन्नत बागवानी में इलेक्ट्रानिकी, सूचना एवं संचार क्रांति की भूमिका	डा0 पी0के0 सिंह, प्राध्यापक सिंचाई एवं जल निकास प्रौद्योगिकी महाविद्यालय	9690012757
फरवरी 22, 2024			
10.00–11.15	सेंसर्स एवं IOT (Internet of Things) के उपयोग द्वारा भूमि एवं वातावरण की जानकारी	डा0 राजीव सिंह, प्राध्यापक कम्प्यूटर इंजीनियरिंग	7055621242
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	सिंचाई तथा उर्वरक प्रयोग क्षमता वृद्धि हेतु परिशुद्ध कृषि (Precision Agriculture) तकनीक का प्रयोग	डा0 राजीव कुमार, सह प्राध्यापक सस्य विज्ञान विभाग कृषि महाविद्यालय	9548795622
13 00–14 30	भोजनावकाश		

14.30–16.00	ड्रोन द्वारा उर्वरक एवं कीटनाशी रसायनों का छिड़काव (प्रायोगिक)	डा0 राजीव रंजन, सहा0 प्राध्यापक कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय	9760824896
16.00–16.15	चाय		
16.15–17.30	डिजिटल कृषि सम्बन्धी सरकारी योजनायें एवं कम्प्यूटर तकनीक के उपयोग से फसलों में लगने वाली बीमारियों की जानकारी एवं सलाह (आवश्यकतानुसार प्रायोगिक)	डा0 एस0डी0 सामंत्रे प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, कम्प्यूटर इंजीनियरिंग	9412987200
फरवरी 23, 2024			
10.00–11.15	डेयरी/पोल्ट्री/बकरी पालन/सूकर पालन इत्यादि के विकास में सूचना एवं संचार क्रान्ति का महत्व	डा0 आर0के0 शर्मा, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, पशुधन उत्पादन प्रबन्धन विभाग पशुचिकित्सा महाविद्यालय	9837637244
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	कृषि आधारित उत्पादों का मूल्यवर्धन एवं इनके विपणन में इलेक्ट्रानिकी, सूचना तथा संचार क्रांति की भूमिका	डा0 पी0के0 ओमरे, सेवानिवृत्त प्राध्यापक पोस्ट हार्वेस्ट, प्रोसेस एण्ड फूड इंजीनियरिंग विभाग, प्रौद्योगिकी महाविद्यालय	9412951150
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–16.00	मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती	डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) प्रसार शिक्षा निदेशालय	9412952034
16.00–17.30	प्रमाण–पत्र वितरण एवं समापन	डा0 जितेन्द्र क्वात्रा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड	

5.18 पौधशाला प्रबन्धन

संस्थान द्वारा 'पौधशाला प्रबन्धन' विषयक प्रशिक्षण का आयोजन मार्च 04–06, 2024 तक किया गया। प्रशिक्षण के उद्घाटन अवसर पर निदेशक प्रसार शिक्षा डा0 जितेन्द्र क्वात्रा ने प्रतिभागियों से कहा कि लघु एवं मध्यम स्तरीय कृषकों हेतु सब्जी, फल, औषधीय एवं सगन्ध पौधों के पौधशाला स्वरोजगार का सशक्त माध्यम हो सकता है। डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) एवं समेटी समन्वयक ने समेटी द्वारा सम्पादित किये जाने वाले विभिन्न कार्यक्रम, विभिन्न प्रशिक्षणों की रूपरेखा इत्यादि के बारे में विस्तार से चर्चा किये। आपने बताया कि प्रशिक्षण के दौरान विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा पौधशाला की स्थापना एवं अधिनियम, उच्च गुणवत्तायुक्त फल वृक्षों का पौधशाला प्रबन्धन, कम लागत वाले पादप प्रवर्धन के ढांचे तैयार करने की विधियाँ, औषधीय व सगन्ध पौधों की पौधशाला तैयार करना, वैज्ञानिक खेती एवं विपणन व्यवस्था, संरक्षित संरचनाओं में व्यावसायिक फल पौध

प्रतिभागियों का सब्जी षोध केन्द्र पर भ्रमण

उत्पादन, फलदार वृक्षों की प्रवर्धन विधियाँ, संरक्षित संरचनाओं में सब्जी पौध तैयार करने की विधि, सब्जियों का पौधशाला प्रबन्धन, पौधशाला में पादप रोग प्रबन्धन, पौधशाला में कीट रोग प्रबन्धन एवं मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती इत्यादि के बारे में व्याख्यान दिया गया। प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षणार्थियों को ट्रीट इकाई का भ्रमण भी करवाया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 22 प्रतिभागियों द्वारा प्रतिभाग किया गया।

समय	विवरण	वार्ताकार	मोबाइल नं0
मार्च 04, 2024			
9.30–9.40	पंजीकरण	यंग प्रोफेशनल–II	
9.40–10.00	उद्घाटन कार्यक्रम	डा0 जितेन्द्र क्वात्रा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड	
10.00–11.15	पौधशाला की स्थापना एवं अधिनियम	डा0 वी0के0 राव, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष उद्यान विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय	9411142806
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	उच्च गुणवत्तायुक्त फल वृक्षों का पौधशाला प्रबन्धन	डा0 रत्ना राय, प्राध्यापक उद्यान विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय	6307929129 9456123554
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–16.00	कम लागत वाले पादप प्रवर्धन के ढांचे तैयार करने की विधियाँ	डा0 ललित भट्ट, सहायक निदेशक उद्यान विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय	9412986485
16.00–16.15	चाय		
16.15–17.30	औषधीय व सगन्ध पौधों की पौधशाला तैयार करना, वैज्ञानिक खेती एवं विपणन व्यवस्था	डा0 अजीत कुमार, प्राध्यापक उद्यान विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय	9412451262
मार्च 05, 2024			
10.00–11.15	संरक्षित संरचनाओं में व्यावसायिक फल पौध उत्पादन (प्रयोगात्मकः उद्यान अनुसंधान केन्द्र, पत्थरचट्टा)	डा0 प्रतिभा सिंह, सह प्राध्यापक उद्यान विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय	7055016142
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	फलदार वृक्षों की प्रवर्धन विधियाँ (प्रयोगात्मकः उद्यान अनुसंधान केन्द्र, पत्थरचट्टा)	डा0 ए0के0 सिंह, प्राध्यापक उद्यान विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय	7900280111
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–16.00	संरक्षित संरचनाओं में सब्जी पौध तैयार करने की विधि (प्रयोगात्मकः सब्जी अनुसंधान केन्द्र)	डा0 ललित भट्ट, सह निदेशक सब्जी अनुसंधान केन्द्र, कृषि महाविद्यालय	9412986485
16.00–16.15	चाय		
16.15–17.30	सब्जियों का पौधशाला प्रबन्धन (प्रयोगात्मकः सब्जी अनुसंधान केन्द्र)	डा0 एस0के0 मौर्या, सहायक प्राध्यापक सब्जी विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय	9411159800
मार्च 06, 2024			
10.00–11.15	पौधशाला में पादप रोग प्रबन्धन	डा0 निर्मला भट्ट, प्राध्यापक प्रसार शिक्षा निदेशालय	9412044788
11.15–11.30	चाय		
11.30–13.00	पौधशाला में कीट रोग प्रबन्धन	डा0 जे0पी0 पुरवार, प्राध्यापक कीट विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय	9411324356
13.00–14.30	भोजनावकाश		
14.30–15.30	मोटे अनाजों की वैज्ञानिक खेती	डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) प्रसार शिक्षा निदेशालय	9412952034
15.30–16.30	ट्रीट इकाई का भ्रमण	डा0 आर0के0 शर्मा, प्राध्यापक प्रसार शिक्षा निदेशालय	9412995904
16.30–17.30	प्रमाण–पत्र वितरण एवं समापन	डा0 जितेन्द्र क्वात्रा निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड	

ब. वित्त पोषित प्रशिक्षण

5.19 महिला उद्यमिता विकास

समेटी–उत्तराखण्ड (प्रसार शिक्षा निदेशालय), गो0ब0 पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर एवं राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबन्ध संस्थान (मैनेज), हैदराबाद के संयुक्त तत्वाधान में ''महिला उद्यमिता विकास'' विषयक चार दिवसीय वर्चुअल प्रशिक्षण का आयोजन दिनांक मई 16–19, 2023 तक किया गया। वर्चुअल प्रशिक्षण के उद्घाटन सत्र में डा0 अल्का गोयल, अधिष्ठाता, सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय ने उद्यमिता विकास के अनेक बिन्दुओं के बारे में चर्चा करते हुए इनसे होने वाले लाभ के बारे में विस्तार से चर्चा किया। आपने विशेष रूप से स्वयं सहायता समूह अथवा क्लस्टर आधारित गतिविधियां संचालित करने पर विशेष बल दिया। डा0 अनुराधा दत्ता, कार्यवाहक निदेशक प्रसार शिक्षा ने कहा कि महिला सशक्तिकरण हेतु यह आवश्यक है कि वे टमाटर, नाशपाती व अन्य सब्जियों अथवा फलों का मूल्यवर्धन कर अपने आय में कई गुना वृद्धि कर सकती हैं। डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक सस्य विज्ञान प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा प्रशिक्षण के उद्देश्य, प्रमुख विषय एवं महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला गया। आपने बताया कि इस चार दिवसीय प्रशिक्षण में महिला सशक्तिकरण–परिचय, उद्यमी के गुण, ग्रामीण क्षेत्रों में उद्यमिता विकास के अवसर, कुटीर उद्योग, महिला उद्यमी द्वारा झेली जाने वाली समस्याएं एवं उनका समाधान, फल एवं सब्जी परिरक्षण, मिलेट्स के मूल्यवर्धित उत्पाद, पर्यावरण अनुकूल प्राकृतिक रेशा द्वारा महिला सशक्तिकरण, उद्यमिता विकास के क्षेत्र में

महिला उद्यमिता विकास पर ऑनलाइन प्रशिक्षण

सरकार द्वारा चलाये जा रहे विभिन्न कार्यक्रम एवं देय अनुदान, बाजार व्यवस्था जैसे विषयों का समावेश किया गया है। डा0 विनीता कुमारी, उपनिदेशक, मैनेज हैदराबाद ने संस्थान द्वारा चलाये जा रहे विभिन्न कृषि आधारित कार्यक्रमों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। आपने बताया कि विभिन्न राज्यों में स्थित समेटी के साथ मिलकर मैनेज प्रतिवर्श वर्चुअल प्रशिक्षण आयोजित करता है। इन प्रशिक्षणों में पूरे देश के सहायक प्राध्यापक, विषय वस्तु विशेषज्ञ, कृषि आधारित कम्पनियों एवं स्वयं सेवी संस्थाओं के प्रतिनिधिगण भाग ले कर अपना क्षमता विकास करते हैं। ऑनलाइन प्रशिक्षण में विभिन्न राज्यों जैसे उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, पश्चिम बंगाल, तेलंगाना, कर्नाटक, तमिलनाडू इत्यादि से सहायक प्राध्यापक, विषय वस्तु विशेषज्ञ, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, कृषि आधारित उद्यमी व विभागीय अधिकारियों सहित कुल 37 प्रतिभागियों द्वारा प्रतिभाग किया गया।

Sl. No.	Date	Time	Topic	Expert Speaker& Designation
Day 1: 16-05-2023				
1.	16-05-2023	10.30am-11.00am	**Inauguration**	
2.	16-05-2023	11AM-12 Noon	Women entrepreneurship-an overview	Dr. Neetu Dobhal, Asstt. Professor Food & Nutrition, GBPUA&T, Pantnagar Mob.: 9411146409
3.	16-05-2023	12 Noon-1PM	Possibilities of Entrepreneurship development in Rural areas	Dr. Kiran Pant GBPUA&T- KVK Dehradun Mob.: 7300648331
Lunch break				
4.	16-05-2023	2.30PM- 3.30PM	Constraints faced by the women entrepreneurs and their remedies	Prof. Neeta Bora Sharma Director, Women Studies Cell Kumaon University, Nainital Mob.: 8126697871, 9837418108
5.	16-05-2023	3.30PM- 4.30PM	Govt. Support to Promote Women Entrepreneurship	Dr. Veenita Kumari Dy. Director (Gender Studies), MANAGE, Hyderabad Mob.: 8709569112

Day 2: 17-05-2023				
6.	17-05-2023	11AM-12 Noon	Cottage industry for rural development	Dr Alka Pande (President, Khadi Gramodyog Board), Dehradun Mob.: 7534915317
7.	17-05-2023	12 Noon-1PM	Role of KVKs in Entrepreneurship Development	Dr Anil Kumar Sharma Professor, Biological Sciences & Director Extension Education Mob.: 7500241561
Lunch break				
8.	17-05-2023	2.30PM- 3.30PM	Entrepreneurship in Horticultural crops	Dr. A.K. Sharma, O/C GBPUA&T- KVK Dehradun Mob.: 8859109580
9.	17-05-2023	3.30PM- 4.30PM	Production Technology of Millets	Dr. B.D. Singh, Professor (Agronomy), Directorate of Extension Education, GBPUA&T, Pantnagar
Day 3: 18-05-2023				
10.	18-05-2023	11AM-12 Noon	Opportunities in value addition of Millets as an enterprise	Dr. Anuradha Dutta Prof. & Head, Food Nutrition GBPUA&T, Pantnagar Mob.: 9759731044
11.	18-05-2023	12 Noon-1PM	Types of employment (Self-employment, Wage employment)	Dr. Chandra Dev Professor (Agri. Eco.) GBPUA&T, Pantnagar Mob.: 9412420903
Lunch break				
12.	18-05-2023	2.30PM- 3.30PM	Entrepreneurship development through women self help groups and FPO	Dr. Sucheta Singh Assoc. Director (Home Sci.) GBPUA&T- KVK Haridwar Mob.: 8449546954
13.	18-05-2023	3.30PM- 4.30PM	Experiences of bee-keeping entrepreneurship	Mr. Ajay Kumar Saini (Jyoti Gramodhyog Sansthan) Bee-keeping Training Centre, Nanota Road, Gangoh, Saharanpur (U.P.) Mob.: 9412130552
Day 4: 19-05-2023				
14.	19-05-2023	11AM-12 Noon	How to prepare business plan	Dr. Ruchi Gangwar Asstt. Professor (Agri. Eco.) GBPUA&T, Pantnagar Mob.: 9997044336
15.	19-05-2023	12 Noon-1PM	Eco-friendly natural fibers for the empowerment of rural women	Dr. Amaresh Sirohi, O/C GBPUA&T- KVK Champawat Mob.: 9412088082
Lunch break				
16.	19-05-2023	2.30PM- 3.30PM	Women empowerment through value addition of food products	Dr. Pratibha Singh Assoc. Director (Home Sci.) GBPUA&T- KVK Kashipur Mob.: 7983700135
17.	19-05-2023	3.30PM- 4.30PM		Scientist from MANAGE
18.	19-05-2023	4.30PM- 5 PM	Post evaluation Test	
19.	19-05-2023	5 PM-5.30 PM	Concluding Remarks	

5.20 प्रसार की विधियां एवं सोशल मीडिया का कृषि तकनीक हस्तांतरण में भूमिका

समेटी–उत्तराखण्ड (प्रसार शिक्षा निदेशालय) एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान, नीलोखेड़ी, हरियाणा (भारत सरकार) के संयुक्त तत्वाधान में प्रसार अधिकारियों के क्षमता विकास हेतु ''प्रसार की विधियां एवं सोशल मीडिया का कृषि तकनीक हस्तांतरण में भूमिका'' विषयक प्रशिक्षण का आयोजन दिनांक अगस्त 22–25, 2023 तक किया गया। प्रशिक्षण के उद्घाटन अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति डा0 मनमोहन सिंह चौहान ने उपस्थित अधिकारियों से कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित तकनीक के प्रचार–प्रसार में आप सभी की महत्वपूर्ण भूमिका है। आपने सलाह दिया कि छोटे–छोटे उद्यम जैसे मोटे अनाजों की खेती, बैकयार्ड मुर्गी पालन, मौन पालन, मसालों का प्रसंस्करण अपनाकर किसानों के आय में पर्याप्त बढ़ोत्तरी की जा सकती है। विश्वविद्यालय सदैव आपके साथ सहयोग हेतु समर्पित है। प्रशिक्षण के समापन अवसर पर निदेशक प्रसार शिक्षा एवं समेटी, डा0 जय प्रकाश जायसवाल ने कहा कि कृषि के विकसित तकनीक के हस्तांतरण में सोशल मीडिया का बहुत बड़ा योगदान है। आज कृषक व्हाट्ऐप, फेसबुक, इंस्टाग्राम, टोल फ्री हैल्पलाइन जैसे साधनों का उपयोग कर अपने कृषि सम्बन्धी समस्याओं के समाधान के साथ–साथ अन्य कृषकों को भी तकनीक से अवगत कराते हैं। उन्होंने विभागीय अधिकारियों से अपील किया कि इस चार दिनी प्रशिक्षण में सीखे गये विषयों को अपनाकर अपने क्षेत्र में ज्यादा से ज्यादा प्रयोग करें तथा फसलों के पैदावार एवं कृषकों की आय बढ़ोत्तरी में सार्थक भूमिका निभायें। डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक एवं समन्वयक समेटी ने कहा कि चूंकि आप लोग सीधे कृषकों के सम्पर्क में रहते हैं, अतः विश्वविद्यालय द्वारा

उद्घाटन सत्र के दौरान कुलपति महोदय

विकसित तकनीक के प्रचार–प्रसार में आप महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। तकनीक हस्तांतरण हेतु विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक सदैव आपके सहयोग हेतु समर्पित रहेंगे। इस 4 दिनी प्रशिक्षण में अनेक विषय जैसे तकनीक हस्तांतरण में प्रसार रणनीति, प्रसार वार्ता की योजना तथा विधियां, प्रसार प्रबन्धन हेतु उन्नत तकनीक, सोशल मीडिया का कृषि में उपयोग, नेतृत्व विकास, तनाव प्रबन्धन, कृषि एवं पशुपालन द्वारा टिकाऊ विकास जैसे विषयों के बारे में विस्तार से चर्चा किया गया। प्रसार प्रशिक्षण संस्थान, नीलोखेड़ी हरियाणा के संकाय सदस्य डा0 सत्यकाम मलिक एवं डा0 जसविन्दर कौर ने प्रशिक्षण विषय सम्बन्धी तकनीकी जानकारी देने के साथ–साथ पंत विश्वविद्यालय के कुलपति, डा0 मनमोहन सिंह चौहान, निदेशक प्रसार शिक्षा, डा0 जय प्रकाश जायसवाल एवं समन्वयक समेटी, डा0 बी0डी0 सिंह का विशेष रूप से विश्वविद्यालय में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने हेतु धन्यवाद दिया। कार्यक्रम में उत्तराखण्ड के विभिन्न जनपदों से लगभग 50 कृषि विभाग के विस्तार अधिकारी भाग लिये।

Time	Date and Topic	Resource Person
22/08/2023 (Tuesday)		
9:00am-9.30 am	Registration of Participants	Team EEI Nilokheri and Internal coordinator
9:30 am-10:30 am	Address by: Dr. J.P. Jaiswal, Director, Extension Education & SAMETI-Uttarakhand	
10:30 am- 11:15 am	**Tea break**	
11:15 am-1:00 pm	Communication style for effective extension methodology	Dr. Jasvinder Kaur Faculty, EEI Nilokheri
01:00 pm- 02:00 pm	**Lunch**	
02:00 pm- 04:00 pm	Ethics and morality (with tea break at 3:30 pm to 3:40 pm)	Dr. Satyakaam Malik Faculty, EEI Nilokheri

Inaugural Session			
04:00 pm-05:00 pm	Inauguration of training program	Welcome & opening remarks	Dr. J.P. Jaiswal Director Extension Education, GBPUA&T, Pantnagar
		Remarks	Dr. Satyakaam Malik Dr. Jasvinder Kaur EEI Nilokheri
		Inaugural remarks	Chief Guest Dr. M.S. Chauhan Vice-Chancellor
23/08/2023 (Wednesday)			
9:30 am-10:00 am	Recall session	Dr. Satyakaam Malik EEI Nilokheri	
10:00 am-11:30 am	Role of social media in agriculture	Dr. Arpita Sharma Kandpal, Assistant Professor Agricultural Extension & Communication	
11:30 am-11:45 am	**Tea Break**		
11:45 am-01.00 pm	Inter-personnel communication	Dr. Satyakaam Malik Faculty, EEI Nilokheri	
01.00 pm-2:00 pm	**Lunch**		
2:00 pm-03:30 pm	Stress management	Dr. Seema Chauhan, Assistant Professor Deptt. of Yogic Science, Kumaon University, Nainital	
3:30 pm-3:40 pm	**Tea Break**		
3:40 pm-5:00 pm	Decision making and team building	Dr. Jasvinder kaur Faculty, EEI Nilokheri	
24/08/2023 (Thursday)			
9:30 am-10:00 am	Recall session	Dr. Jasvinder Kaur EEI Nilokheri	
10:00 am-11:30 am	Leadership development	Dr. J.P. Jaiswal, Director Extension Education & SAMETI-Uttarakhand	
11:30 am-11:45 am	**Tea Break**		
11:45 am-01:00 pm	Improved extension tools for sustainable production	Dr. B.D. Singh, Professor (Agronomy) Directorate of Extension Education	
01:00 pm-2:00 pm	**Lunch**		
02:00 pm-03:30 pm	Conflict Management	Dr. Satyakaam Malik Faculty, EEI Nilokheri	
3:30 pm-3:40 pm	**Tea Break**		
3:40 pm-5:00 pm	Participatory extension approaches	Dr. Jasvinder Kaur EEI Nilokheri	
25/08/2023 (Friday)			
9:30 am-10:00 am	Recall session	Dr. Satyakaam Malik Faculty, EEI Nilokheri	
10:00 am-11:30 am	Insect pest management in crop/vegetables	Dr. Nirmala Bhatt, Professor (Plant Pathology) Directorate of Extension Education	
11:30 am-11:45 am	**Tea Break**		
11:45 am-01:00 pm	Production technology of millets	Dr. B.D. Singh, Professor (Agronomy) Directorate of Extension Education	

01:00 pm-02:00 pm	**Lunch**	
02:00 pm-03:00 pm	Dairy management	Dr. Sanjay Chaudhary, Professor (Animal Husbandry), Directorate of Extension Education
03:00 pm-04:00 pm	TREAT Unit Visit and Spot Discussion	Dr. R.K. Sharma, Professor (Agronomy) Directorate of Extension Education
04:00 pm-04:30 pm	Post-test and course evaluation	Coordinators and participants
4:30 pm-5:00 pm	Valedictory function	Director Extension Education and EEI Nilokheri team

5.21 जैविक एवं प्राकृतिक खेती

समेटी–उत्तराखण्ड, प्रसार शिक्षा निदेशालय, गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर एवं राष्ट्रीय जैविक एवं प्राकृतिक खेती केन्द्र, गाजियाबाद के संयुक्त तत्वाधान में प्रसार अधिकारियों एवं कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों हेतु 'जैविक एवं प्राकृतिक खेती' पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन सितम्बर 25–26, 2023 तक किया गया। समेटी समन्वयक डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) ने राष्ट्रीय जैविक एवं प्राकृतिक खेती केन्द्र, गाजियाबाद के अधिकारी डा0 चन्द्रशेखर एवं प्रतिभागियों का स्वागत करने के साथ–साथ समेटी द्वारा सम्पादित किये जाने वाले विभिन्न कार्यक्रम, विभिन्न प्रशिक्षणों की रूपरेखा इत्यादि के बारे में विस्तार से चर्चा की। डा0 चन्द्रशेखर, कनिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी, राष्ट्रीय जैविक एवं प्राकृतिक खेती केन्द्र, गाजियाबाद ने सभागार में उपस्थित प्रतिभागियों से केन्द्र द्वारा सम्पादित किये जाने वाले कार्यक्रमों के बारे में विस्तार से बताया। प्रशिक्षण के समापन अवसर पर निदेशक प्रसार शिक्षा डा0 जे0पी0 जायसवाल ने प्रतिभागियों से कहा कि जैविक एवं प्राकृतिक खेती विधा अपनाकर मृदा के स्वास्थ्य में सुधार के साथ–साथ रसायनमुक्त उत्पादों का उत्पादन एवं अपने आय में कई गुना बढ़ोत्तरी कर सकते हैं। डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) एवं समेटी समन्वयक ने बताया कि प्रशिक्षण के दौरान विश्वविद्यालय एवं राष्ट्रीय जैविक एवं प्राकृतिक खेती केन्द्र, गाजियाबाद के वैज्ञानिकों द्वारा टिकाऊ कृषि, जैविक कृषि के सिद्धांत, विधियां एवं जैविक कृषि निवेशों से मृदा

प्रमाण–पत्र वितरित करते हुए निदेशक प्रसार शिक्षा

स्वास्थ्य में सुधार, प्राकृतिक खेती का वर्तमान परिदृश्य में महत्व, जैविक एवं प्राकृतिक खेती के संवर्धन हेतु विभिन्न सरकारी योजनाएं, किसानों की आय दोगुनी करने में कृषि के विभिन्न घटकों की भूमिका, जैविक एवं प्राकृतिक खेती सम्बन्धी फसल/सब्जियों/फलों का कटाई उपरान्त प्रबन्धन एवं मूल्यवर्धन इत्यादि के बारे में व्याख्यान दिया गया। प्रतिभागियों के प्रायोगिक क्षमता विकास हेतु समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल (फसल उत्पादन केन्द्र, पंतनगर) का भ्रमण भी कराया गया। डा0 सी0 तिवारी, प्राध्यापक एवं प्रभारी अधिकारी, कृषि विज्ञान केन्द्र, नैनीताल द्वारा भी प्राकृतिक खेती एवं किसानों की आय दोगुनी करने सम्बन्धी कारकों के बारे में विस्तार से जानकारी दी गयी। प्रशिक्षण कार्यक्रम में जनपद–उत्तरकाशी, नैनीताल, रूद्रप्रयाग, चमोली, बागेश्वर, टिहरी गढ़वाल, पिथौरागढ़, चम्पावत, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा के उप परियोजना निदेशक, ब्लाक तकनीकी प्रबन्धक तथा कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों सहित कुल 21 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

S.No.	Topic of Lecture	Name of the Expert & Designation	Date & Time
Day-01 (25.09.2023)			
1.	Registration of Participants	Officials of NCONF Ghaziabad	09:30 - 09:45 am
2.	Introduction & Course Brief	Co-coordinators NCONF & GBPUAT Pantnagar	09:45 - 10:00 am

3.	Inaugural Remarks by Chief Guest		10:00 - 10:15 am
4.	Vote of Thanks	Dr. B.D. Singh, Coordinator, SAMETI GBPUAT Pantnagar	10:15 - 10:20 am
Tea Break - 10:20 am to 10:30 am			
5.	Need for Sustainable Agriculture, Principles & Practices of Organic along with preparation of on farm inputs for maintaining and enhancing soil fertility	Dr. D.K. Singh, Professor (Agronomy) GBPUAT Pantnagar	10:30 - 12:00 Noon
6.	Visit to IFS Model developed by GBPUAT Pantanagar and hands on training on farm input	Coordinator, GBPUAT Pantnagar and Officers of NCONF Ghaziabad	12:00 Noon - 01:30 pm
	preparation		
Lunch Break 01:30 pm to 02:30 pm			
7.	Heritage and Practices of Natural Farming	Dr. Sunita T. Pandey, Professor (Agronomy) GBPUAT Pantnagar	02:30 - 05:00 pm
Tea Break - 05:00 pm to 05:10 pm			
Question & Answer session			
Day-02 (26.09.2023)			
8.	Current Government Schemes and Initiatives on promotion of Organic and Natural Farming in India	NCONF Officer	10:00 - 11:15 am
Tea Break - 11:15 am to 11:30 am			
9.	Role of agriculture allied sectors in doubling farmers income	Dr. C. Tiwari, Professor (Agronomy) and Officer Incharge, KVK Nainital	11:30 - 01:00 pm
Lunch Break 01:00 pm to 02:00 pm			
10.	Post Harvest Handling and value addition of organic and natural produce	Dr. P.K. Omare, Retd. Professor, Post Harvest Management and Food Engineering, GBPUAT Pantnagar	02:00 - 03:15 pm
Tea Break - 03:15 pm to 03:30 pm			
11.	Introduction and Technical Know-how of PGS India Certification and Jaivik Kheti Portal for marketing of Organic produce)	Officer of NCONF Ghaziabad	03:30 - 04:30 pm
***Question & Answer session* (04:30 pm to 04:45 pm)**			
12.	Valedictory Address & concluding remarks	Course Co-coordinator GBPUAT Pantnagar	04:45 - 05:00 pm
13.	Distribution of Certificates to participants	Dr. J.P. Jaiswal, Dir Extension Education GBPUAT Pantnagar	05.00 - 05:15 pm
14.	Vote of Thanks	NCONF, Ghaziabad Officers	05:15 - 05:30 pm

प्रशिक्षणार्थियों को सम्बोधित करते हुए वैज्ञानिक

5.22 डेयरी प्रबन्धन

समेटी–उत्तराखण्ड (प्रसार शिक्षा निदेशालय), गो0ब0 पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर एवं राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबन्ध संस्थान (मैनेज), हैदराबाद के संयुक्त तत्वाधान में ''डेयरी प्रबन्धन'' विषयक तीन दिवसीय वर्चुअल प्रशिक्षण दिनांक फरवरी 26–28, 2024 को आयोजित किया गया। वर्चुअल प्रशिक्षण के उद्घाटन सत्र में डा0 जितन्द्र क्वात्रा, निदेशक प्रसार शिक्षा एवं समेटी ने प्रशिक्षण के विषय पर प्रकाश डालते हुए इसकी महत्ता पर विस्तार से चर्चा किये। उन्होनें विशेष रूप से कहा कि दूध के मूल्यवर्धित उत्पाद जैसे खोया, पनीर, घी, मिठाई इत्यादि से कृषक अपने आय में कई गुना वृद्धि कर सकते हैं। आपने यह भी कहा कि प्रायः अखबार अथवा अन्य माध्यम से पता चलता है कि अनेक लोग कृत्रिम पदार्थों को दूध में मिलाकर दूध की गुणवत्ता को खराब कर देते हैं, जो कहीं न कहीं उपभोक्ता के स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालता है।

डा0 शाहजी सम्भाजी फंड, उपनिदेशक, एलॉयड एक्सटेंशन ने इस वर्चुअल प्रशिक्षण के बारे में विस्तार से चर्चा करते हुए मैनेज द्वारा संचालित होने वाले सभी प्रमुख कार्यक्रमों के बारे में विस्तार से प्रकाश डाला। डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक सस्य विज्ञान प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा प्रशिक्षण के उद्देश्य, महत्व एवं विश्वविद्यालय के विषय से सम्बन्धित संकाय सदस्यों द्वारा दिये जाने वाले व्याख्यानों पर विस्तार से चर्चा किया। आपने बताया कि इस तीन दिवसीय प्रशिक्षण में डेयरी प्रबन्धन परिचय, पशुओं के विभिन्न नस्ल, पशुओं के आवास एवं राशन व्यवस्था, गाय एवं भैंस में उन्नत विधि से प्रजनन, तुरन्त ब्याये बछड़ों के देखभाल में बरती जाने वाली सावधानियां, स्वच्छ दुग्ध उत्पादन एवं दुग्ध से बनने वाले विभिन्न उत्पाद तथा विपणन, कृषक स्तर पर डेयरी प्रबन्धन सम्बन्धी चुनौतियां एवं समाधान, पशुओं में टीकाकरण, विभिन्न रोग तथा उपचार, डेयरी व्यवसाय की आर्थिकी जैसे विषयों पर व्याख्यान आयोजित किये गये। डा0 सुश्री रेखा दास, मैनेज फेलो ने भी प्रशिक्षण एवं मैनेज द्वारा कृषकोपयोगी संचालित होने वाले अनेक कार्यक्रमों के

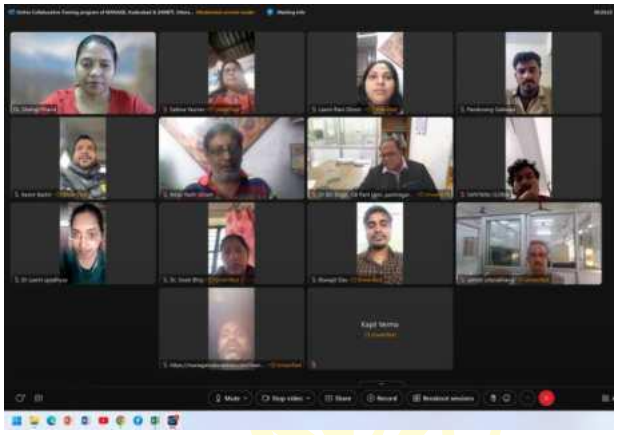

डेयरी प्रबन्धन पर ऑनलाइन प्रशिक्षण

बारे में अपने विचार साझा किये। इस ऑनलाइन प्रशिक्षण में विभिन्न राज्यों जैसे उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, पश्चिम बंगाल, तेलंगाना, कर्नाटक, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, बिहार इत्यादि से सहायक प्राध्यापक, विषय वस्तु विशेषज्ञ, स्टार्टअप के प्रतिनिधि, कृषि आधारित उद्यमी, विभागीय अधिकारी व प्रगतिशील कृषक प्रतिभाग किये। इस प्रशिक्षण में कुल 44 प्रशिक्षणार्थी भाग लिये।

S.No.	Date	Time	Topic	Expert Speaker and Designation
1.	26-02-2024	9.30-10.00AM	**Inauguration** Dr. Jitendra Kwatra, Director, Extension Education & SAMETI and Senior Officers from MANAGE	
2.	26-02-2024	10.00-11.15AM	Dairy farming- An overview and breeds of cattle and buffaloes	Dr. R.K. Sharma, Prof. & Head LPM, College of Veterinary, GBPUA&T, Pantnagar
3.	26-02-2024	11.15-12.30AM	Housing management in cattle and buffaloes	Dr. S.K. Singh, Prof., LPM College of Veterinary, GBPUA&T, Pantnagar
4.	26-02-2024	12.30-1.45PM	Feeding management in cattle and buffaloes	Dr. Jyoti Palod, Prof. LPM College of Veterinary, GBPUA&T, Pantnagar
5.	27-02-2024	10.00-11.15AM	Reproduction management in dairy cattle and buffaloes	Dr. Sunil Kumar, Asstt. Prof. Vet. Gyanecology, College of Veterinary, GBPUA&T, Pantnagar
6.	27-02-2024	11.15-12.30AM	Management of newly born calves, heifers, dry and lactating cows. Care during pasteurization	Dr. Sanjay Chaudhary, Professor (Ani. Hus.), DEE GBPUA&T, Pantnagar

7.	27-02-2024	12.30-1.45PM	Hygienic milk production, milk processing/ preparation of milk products & their marketing	Dr. Anita, Assoc. Prof. LPM, College of Veterinary, GBPUA&T, Pantnagar
8.	28-02-2024	10.00-11.15AM	Challenges and opportunities in dairy farming at farmers field	Dr. Sushrirekha Das MANAGE Fellow
9.	28-02-2024	11.15-12.30AM	Important diseases of dairy animals and vaccination	Dr. Nidhi Arora, Professor Medicine, College of Veterinary, GBPUA&T, Pantnagar
10.	28-02-2024	12.30-1.45PM	Economics of dairy farming	Dr. Shahji Sambhaji Phand, Dy. Director (Allied Extension), MANAGE
11.	28-02-2024	1.45-2.30PM	Major extension activities for livelihood support of farming community	Dr. B.D. Singh, Professor (Agronomy), Directorate of Extension Education GBPUA&T, Pantnagar
12.	28-02-2024	3.30-4.15PM	Post evaluation Test	
13.	28-02-2024	4.15-4.30PM	Concluding Remarks	

प्रतिभागियों को उपलब्ध करायी गयी प्रशिक्षण पुस्तिका

Training Compendium

Extension Methodology and Social Media Skills in Transfer of Technology

August 22-25, 2023

Dr. M.S. Chauhan

Vice-Chancellor, G.B.P.U.A.& T., Pantnagar

Dr. Jai Prakash Jaiswal

Director, Extension Education & SAMETI-Uttarakhand

Dr. Satyakaam Malik

Course Coordinator

Dr. B.D. Singh

Course Internal Coordinator & Professor (Agronomy)

Extension Education Institute

(Northern-Region)

Ministry of Agriculture and Farmers' Welfare

Govt. of India

CCSHAU, Nilokheri (Haryana)

In Collaboration with

SAMETI-Uttarakhand

(Directorate of Extension Education)

G.B. Pant University of Agriculture & Technology, Pantnagar (Uttarakhand)

प्रशिक्षण में प्रतिभागियों के उपस्थिति का तुलनात्मक विवरण

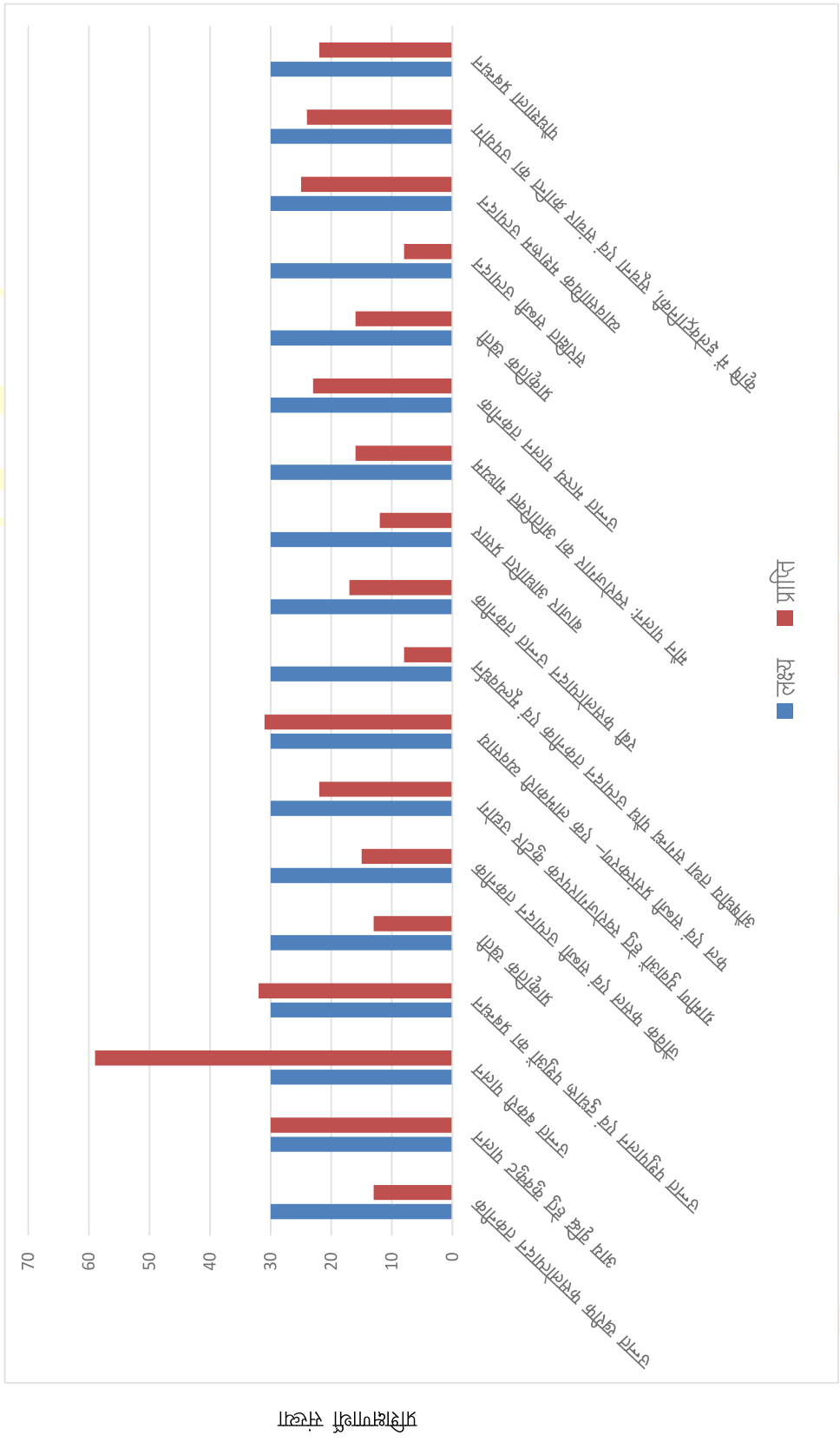

6. विभिन्न प्रशिक्षणों के दौरान कृषकों की प्रतिक्रिया/फीडबैक

"जैविक फसल एवं सब्जी उत्पादन तकनीक" प्रशिक्षण हमारे लिये बहुत ही ज्ञानवर्धक रहा। साथ ही मैं उन प्राध्यापकों को नमन करना चाहूँगा, जिन्होंने हमें जैविक फसल एवं बेमौसमी सब्जी उत्पादन तकनीक के बारे में प्रायोगिक एवं व्यावहारिक जानकारी उपलब्ध कराई। गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय में प्रशिक्षण के लिए अवसर प्रदान हेतु सभी महोदयों का आभार।

श्री पंकज कुमार, ग्राम–मातोली, विकास खण्ड–कनालीछीना, जनपद–पिथौरागढ़

"उन्नत बकरी पालन" प्रशिक्षण के दौरान हमें ऐसा लगा, जैसे हमारे जीवन भर प्राप्त की गयी शिक्षा में से ये तीन दिन सर्वोत्तम हैं, जो हमारी आर्थिक स्थिति को बेहतर बना सकते हैं। ऐसे ज्ञानवर्धक प्रशिक्षण आयोजन हेतु टीम समेटी का हार्दिक धन्यवाद।

श्री कैलाश चन्द्र, ग्राम–मदपुरी कुल्हा, विकास खण्ड–गदरपुर, जनपद–ऊधम सिंह नगर

मैं कृषि कार्य एवं पशुपालन के तहत गाय, भैंस, बैल तथा बकरी पालन करता हूँ। मैने विगत वर्षों में समेटी, पंतनगर से जुड़कर महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त कर इन्हें कार्यरूप में परिवर्तित कर रहा हूँ। मैं इस ज्ञान को अपने साथी एवं आस–पड़ोस के किसानों के साथ साझा करता रहता हूँ।

श्री दयाल नाथ, ग्राम–पाड़ासों सेरा, विकास खण्ड–बाराकोट, जनपद–चम्पावत

नोटबंदी के कारण मेरा व्यापार ठप पड़ गया। तब पहली बार मैं विभाग के माध्यम से समेटी, पंतनगर में चल रहे प्रशिक्षण में भाग लिया। मशरूम उत्पादन, मधुमक्खी पालन और बेमौसमी सब्जी उत्पादन आदि विषयों के प्रशिक्षण मेरे लिए बड़े कारगर साबित हुए। वर्तमान में मैं मधुमक्खी पालन, मशरूम उत्पादन और मत्स्य उत्पादन का कार्य कर रहा हूँ। इन प्रशिक्षणों के बदौलत मैरे परिवार की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति दिनों दिन सुधर रही है।

श्री हरीश सजवान, ग्राम–डोलमार, विकास खण्ड–भीमताल, जनपद–नैनीताल

यह दौर व्यावसायिक खेती का है, जिसमें कि आधुनिक संसाधनों का प्रयोग व वैज्ञानिकों के सहयोग की महत्ती भूमिका रहेगी। कुक्कुट पालन व मत्स्य पालन के प्रशिक्षण में समेटी के तहत मुझे पंतनगर विश्वविद्यालय परिवार का हिस्सा बनने का अवसर मिला तथा वैज्ञानिक शोधों व विषय के बारे में बेहतरीन जानकारी प्रदान की गयी। दोनों प्रशिक्षणों के पश्चात मेरा वर्तमान उद्यम काफी फल–फूल रहे हैं।

श्री पृथ्वीराज सिंह, ग्राम–बोहराकोट, विकास खण्ड–रामगढ़, जनपद–नैनीताल

मैंने पंतनगर में मशरूम का प्रशिक्षण प्राप्त किया, जिनसे मुझे विभिन्न प्रकार की मशरूम व उनसे जुड़ी रोचक जानकारी प्राप्त हुई। यह प्रशिक्षण मेरे लिए प्रमुख रोजगार का स्रोत बना। प्रशिक्षण के पश्चात मैंने मशरूम के कई उत्पाद जैसे मशरूम का अचार, पाउडर और मशरूम की बड़िया इत्यादि बनवाती हूँ। वर्तमान में मैं इन सारे उत्पादों को पंतनगर किसान मेला एवं आवश्यकतानुसार अपने आस–पास के ग्रामीण क्षेत्रों में विक्रय कर अपनी आजीविका में निरन्तर सुधार कर रही हूँ। मैं विभागीय सहयोग से इस व्यवसाय को लघु उद्यम के रूप में अपनाकर स्वरोजगार प्रारम्भ करना चाहती हूँ।

श्रीमती ममता पानू, ग्राम–भटभोज, विकास खण्ड–गदरपुर, जनपद–ऊधम सिंह नगर

समेटी, पंतनगर द्वारा दिया गया चार दिवसीय प्रशिक्षण हमारे लिए अत्यधिक लाभप्रद रहा एवं हमें हमारी सभी समस्याओं का निवारण भी प्राप्त हुआ। विश्वविद्यालय के सभी गुरूजनों की पढ़ाने की पद्धति बहुत ही आसान एवं रोचक थी। मैं विश्वविद्यालय का हमेशा ऋणी रहूँगा तथा यहाँ से सीखे हुए ज्ञान को सभी के साथ साझा करूगाँ। भविष्य में भी मैं समेटी, पंतनगर के साथ जुड़कर प्रशिक्षणों में भाग लेना चाहूँगा।

श्री विकास ओली, ग्राम–ओली गाँव, विकास खण्ड–कनालीछीना, जनपद–पिथौरागढ़

7. कृषकों के आर्थिक समृद्धि में अहम भूमिका निभाती समेटी–उत्तराखण्ड

(सफलता की कहानियाँ)

7.1 पशुपालन से आय अर्जन

कृषक का नाम : श्री कमल सिंह उनियाल
ग्राम–ग्वीन छोटा, विकास खण्ड–द्वारीखाल, जनपद–पौड़ी गढ़वाल

परिचय– बावन वर्षीय श्री कमल सिंह उनियाल दिल्ली में प्राइवेट कम्पनी में नौकरी किया करते थे। शहर की अत्यधिक मंहगाई होने के कारण उनके वेतन से घर का किराया, बच्चों की शिक्षा व अन्य घरेलू खर्चे पूर्ण नहीं होते थे, जिसके कारण वर्ष 2016 में उन्होंने वापस अपने गांव की तरफ आने का संकल्प लिया। श्री उनियाल का बचपन से ही पशुपालन विषय में रूचि थी, अपने उस सपने को साकार करने के लिए आपने यह उद्यम प्रारम्भ करने की सोची और ब्लाक स्तरीय पशुपालन विभाग से सम्पर्क कर अपनी इच्छा जाहिर की। अधिकारियों ने उन्हें सर्वप्रथम पशुपालन विषयक प्रशिक्षण लेने की सलाह दी। बी.टी.एम. आतमा परियोजना ने उन्हें समेटी (पंतनगर) द्वारा आयोजित होने वाले प्रशिक्षणों की जानकारी दी। वर्ष 2017 से आपने राज्य कृषि

प्रबन्धन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान (समेटी), पंतनगर तथा जनपद स्तरीय प्रशिक्षणों में भाग लेना प्रारम्भ किये। पंतनगर में आपने पशुपालन तथा उसके बाद मत्स्य पालन एवं कुक्कुट पालन का प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस प्रकार वर्ष 2018 में ''जहाँ चाह वहाँ राह'' की कहावत को चरित्रार्थ करते हुए दो साहीवाल नस्ल की गाय से पशुपालन व्यवसाय प्रारम्भ कर दिये। शुरूआत में आपके पांव डगमगाये, परन्तु प्रशिक्षण से आपको बहुत लाभप्रद जानकारी मिली, जो आपको आगे बढ़ने हेतु प्रेरित किया। वर्तमान में आपके पास दो साहीवाल, एक सिंधी, एक बद्री तथा एक पहाड़ी नस्ल की भैंस है, जिससे आप प्रतिदिन 20–25 लीटर दूध बेचकर स्वरोजगार कर रहे हैं। आप हर्ष के साथ बताते है कि दूध के विपणन की कोई समस्या नहीं होती और पूरा दूध घर से ही विक्रय हो जाता है।

समेटी द्वारा किया गया योगदान–

1. समेटी पंतनगर द्वारा आयोजित विभिन्न प्रशिक्षणों यथा् पशुपालन, कुक्कुट पालन, मौन पालन, संरक्षित कृषि इत्यादि में भाग लेकर अपना क्षमता विकास किये। पंतनगर से मिले विषय से सम्बन्धित साहित्य पढ़कर ये वैज्ञानिक विधि से कार्य आगे बढ़ाये।
2. प्रशिक्षणों के दौरान सम्पूर्ण उत्तराखण्ड के कृषकों के बीच उनके द्वारा किये जा रहे कृषि

कार्यों के बारे में पारस्परिक वार्ता एवं वीडियो के माध्यम से एक–दूसरे का कृषि कार्य देखकर बेहतर करने की प्रतिस्पर्धा।

3. समेटी, पंतनगर नामक व्हाट्सऐप ग्रुप में आपको जोड़ दिया गया, जिससे वैज्ञानिकों से सीधे जुड़ाव के साथ–साथ अन्य कृषकों से वार्ता कर अपने कृषि सम्बन्धी समस्या का समाधान करते हैं। इस ग्रुप के माध्यम से अन्य पशुपालन सम्बन्धी कृषकों द्वारा प्रभावी विपणन की राह भी दिखायी गयी।
4. एटिक हेल्पलाईन संख्या 05944–234810 का अधिकाधिक प्रयोग करते हुए कृषि सम्बन्धी समस्याओं का निराकरण।

परिणाम एवं प्रभाव–

- वर्ष 2018 में आपको आतमा द्वारा ब्लाक स्तर पर पशुपालन तथा वर्ष 2020 में सब्जी उत्पादन के क्षेत्र में ''किसान श्री'' पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
- आपने मत्स्य का एक तालाब बनवाया है, जिसमें आपने सिल्वर कॉर्प, ग्रास कॉर्प एवं पंगास प्रजाति की मछली के बच्चे डाले हैं। शीघ्र ही इस उद्यम से आपको आय प्रारम्भ होगी।
- आपने मशरूम उत्पादन इकाई भी शुरू की, जिसके तहत राज्य सरकार ने स्वायत्त सहकारी किसान बहुउद्देशीय भवन का निर्माण करवाया, जिसमें स्थानीय क्षेत्र के किसानों के उत्पादों का विक्रय आसानी से हो सके और कृषकों के आर्थिकी की मजबूती हो।
- आप खेती के साथ–साथ ''जल संरक्षण'' के क्षेत्र में जागरूकता फैलाते रहते हैं। जल संरक्षण सम्बन्धी स्लोगन जैसे ''जल है तो कल है'' तथा ''जल के प्रत्येक बूंद का प्रभावी उपयोग'' का नारा देते रहते हैं। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर आपको जिलाधिकारी द्वारा आपके इस पुनीत कार्य हेतु सम्मान से नवाजा गया।

अन्त में आप बताते है कि दिल्ली से वापस आने का आपका निर्णय हितकारी साबित हुआ और जहाँ प्रारम्भ में लगभग ₹ 30 हजार वार्षिक आय हुआ जो वर्तमन में कृषि के उद्यमों यथा् पशुपालन, मत्स्य पालन, मशरूम उत्पादन, बेमौसमी सब्जी उत्पादन इत्यादि से लगभग ₹ 1. 25 लाख वार्षिक आय होता है।

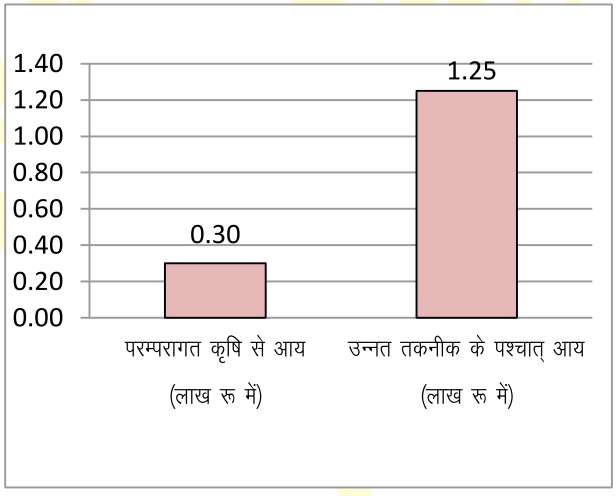

7.2 आधुनिक कृषि से सफलता की राह

कृषक का नाम : श्री पुष्कर सिंह चौधरी
ग्राम–बिसराड़ी, विकास खण्ड–बाराकोट, जनपद–चम्पावत

परिचय– श्री पुष्कर सिंह चौधरी उम्र 68 वर्ष पेशे से किसान है और शुरू से ही परम्परागत ढंग से मोटे अनाजों की खेती करते हैं। यद्यपि कम उपज और अंततः आय कम होने के कारण उनका मन व्यथित रहता था। वर्ष 2002 में आपके जीवन में एक बड़ा बदलाव आया जब आपको आतमा परियोजना से जोड़ा गया और आपने वैज्ञानिक विधि से खेती प्रारम्भ किया। तब से आप पीछे मुड़कर नहीं देखे और मंडुवा, झंगोरा, कुट्टू जैसे फसलों की खेती और उनसे बने उत्पाद के क्षेत्र में अनेक नये आयाम स्थापित किये। वर्ष 2014–15 में आपको आतमा परियोजना द्वारा गो0ब0 पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर में कृषक प्रशिक्षण केन्द्र, समेटी में भेजा गया, जिसमें आपने सब्जियों और आगे चलकर मत्स्य पालन एवं मशरूम उत्पादन का प्रशिक्षण प्राप्त किया। पर्वतीय क्षेत्रों में सिंचाई के पानी की उचित व्यवस्था न होने के कारण आपने उद्यान विभाग से सम्पर्क किया तथा विभागीय मदद से दो सिंचाई टैंक, दो पॉलीहाउस एवं एक मछली का तालाब बनाया। प्रशिक्षण से आपके कार्यक्षमता में सुधार हुआ,

जिससे आप मशरूम उत्पादन, पशुपालन के क्षेत्रों में भी कार्य शुरू कर दिये हैं।

समेटी द्वारा किया गया योगदान–

1. समेटी पंतनगर द्वारा आयोजित विभिन्न प्रशिक्षणों यथा् कुक्कुट पालन, मौन पालन, संरक्षित कृषि, जैविक खेती, मत्स्य पालन इत्यादि में भाग लेकर अपना क्षमता विकास किये। पंतनगर से मिले कृषि साहित्य पढ़कर ये वैज्ञानिक विधि से कृषि कार्यों को आगे बढ़ाये।
2. पंतनगर प्रवास के दौरान आप मत्स्य पालन, मशरूम उत्पादन, उद्यान एवं सब्जी अनुसंधान केन्द्रों का भ्रमण कर व्यावहारिक ज्ञान अर्जित किये, जिससे इन्हें सब्जी उत्पादन, मत्स्य पालन इत्यादि क्षेत्रों में कार्य प्रारम्भ करने की प्रेरणा मिली।
3. प्रशिक्षणों के दौरान सम्पूर्ण उत्तराखण्ड के कृषकों के बीच उनके द्वारा किये जा रहे कृषि कार्यों के बारे में पारस्परिक वार्ता एवं वीडियो के माध्यम से एक–दूसरे का कृषि कार्य देखकर बेहतर करने की प्रतिस्पर्धा।
4. समेटी, पंतनगर नामक व्हाट्सऐप ग्रुप में आपको जोड़ दिया गया, जिससे वैज्ञानिकों से सीधे जुड़ाव के साथ–साथ अन्य कृषकों से वार्ता कर अपने कृषि सम्बन्धी समस्या का समाधान करते हैं। इस ग्रुप के माध्यम से

अन्य पशुपालन सम्बन्धी कृषकों द्वारा प्रभावी विपणन की राह भी दिखायी गयी।

5. एटिक हेल्पलाईन संख्या 05944–234810 का अधिकाधिक प्रयोग करते हुए कृषि सम्बन्धी समस्याओं का निराकरण।

परिणाम एवं प्रभाव–

- कृषि के क्षेत्र में उत्कृश्ट कार्यों को देखते हुए वर्ष 2014–15 में आपको आतमा द्वारा ''किसान श्री'' पुरस्कार प्रदान किया गया। इसी क्रम में वर्ष 2018–19 में उद्यान के क्षेत्र में ''किसान श्री'' पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
- विगत तीन वर्शों से आप मशरूम का उत्पादन करते हुए स्थानीय बाजार में विपणन करते हैं।
- वर्तमान में आप आपके पास दुधारू भैंस, एक जोड़ी बैल तथा 06 बकरियां है, जिनसे भी लघु स्तर पर आय में निरन्तरता बनी रहती है। इसी प्रकार आपके तालाब में नैन, रोहू एवं कतला जैसी प्रजातियाँ हैं, जिनके विक्रयसे भी आपको आय होती रहती है।
- वर्तमान में आपकी कृषि से कुल वार्षिक आय ₹ दो लाख है, जिसमें बीज, खाद एवं श्रमिक इत्यादि की लागत का खर्चा ₹ 25–30 हजार आ जाता है और इस प्रकार शुद्ध लाभ ₹ 1,75,000.00 हो जाता है। आप यहीं पर बताना नहीं भूलते कि जहाँ पूर्व में उनकी आय लगभग ₹ 40,000.00 होती थी वहीं उन्नत कृषि तकनीक अपनाने से उनके जीवन में बहुत बड़ा बदलाव आया है और आने वाले समय में आप इन तकनीकों का और विस्तार करने की योजना बना रहे हैं।

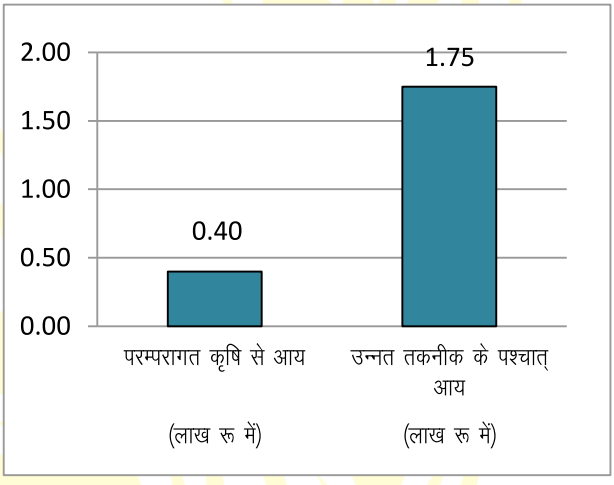

7.3 ड्रैगन फ्रूट लायी खुशहाली

कृषक का नाम : श्री विजय कुमार शर्मा
ग्राम–विक्रमपुर, विकास खण्ड–बाजपुर, जनपद–ऊधमसिंहनगर

परिचय– चालीस वर्षीय श्री विजय कुमार शर्मा, बचपन से ही अपने पिताजी को खेती करते देखते थे। अतः वे भी शहर में छोटी–मोटी नौकरी करने के बजाय अपनी पैतृक जमीन में खेती करने की इच्छा रखते थे। अपनी इच्छा को मूर्तरूप देने के लिए उद्यान जो इनका प्रिय क्षेत्र था, में विभागीय सहयोग से माली का प्रशिक्षण प्राप्त किया और वर्ष 2006 में एक नर्सरी खोली। बाजपुर क्षेत्र में उस समय नर्सरी में प्रतिस्पर्धा कम होने के कारण उनका पौधशाला का व्यापार खूब फला फूला। उद्यान विभाग द्वारा आपके उत्कृष्ट औद्यानिक गतिविधियों को देखते हुए एक पॉलीहाउस लगवाया। इसी क्रम में इन्होंने अपने कार्यकुशलता में वृद्धि करने हेतु समेटी–उत्तराखण्ड द्वारा जैविक कृषि प्रशिक्षण के साथ–साथ अन्य प्रशिक्षणों में प्रतिभाग किया। शीघ्र ही आपने ड्रेगन फ्रूट की खेती प्रारम्भ करते हुए इसे अपने रोजगार का प्रमुख जरिया बनाया। वर्तमान में आप ड्रैगन फ्रूट के साथ–साथ मौन पालन, रेशम कीट पालन, हाइड्रोपोनिक्स तकनीकी, मत्स्य पालन एवं जैविक विधि से सब्जियां उगा रहे हैं। आपके प्रक्षेत्र को यह कहना

अतिश्योक्ति नहीं होगा कि यह कृषि प्रणाली का आदर्श नमूना है। आपके जैविक ड्रेगन फ्रूट्स की बाजार में अत्यधिक मांग है, जो इनके आय का प्रमुख आधार है। आतमा द्वारा आपको राज्य के विभिन्न भागों में एक्सपोजर विजिट हेतु भेजा गया, जो आपके क्षमता विकास में कई गुना वृद्धि करने में मददगार साबित हुआ। आपको आतमा सहित अनेक संस्थानों से अलग–अलग पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं।

समेटी द्वारा किया गया योगदान–

1. मत्स्य पालन, संरक्षित खेती एवं बाजार आधारित प्रसार प्रशिक्षणों के बारे में तकनीकी जानकारी के साथ–साथ कृषक के आवश्यकतानुरूप अनेक जानकारी व कृषि साहित्य प्रदान की गई।
2.. प्रशिक्षण अवधि में सब्जी अनुसंधान केन्द्र, जैविक कृषि इकाई, उद्यान अनुसंधान केन्द्र एवं मछली तालाब के भ्रमण के दौरान जैविक कृषि एवं जैविक सब्जी उत्पादन सम्बन्धी प्रायोगिक जानकारी दी गई।
3. विभिन्न कृषि उत्पादों के विक्रय हेतु ऑनलाइन प्लेटफार्म, इन्टरनेट का उपयोग एवं विक्रय सम्बन्धी अनेक पोर्टल के बारे में

जानकारी दी गई।

4. प्रशिक्षण के दौरान आप अपने अनेक जैविक उत्पाद साथ लायें और प्रतिभाग करने वाले प्रशिक्षणार्थियों और विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को विक्रय कर अतिरिक्त आय अर्जित की।

परिणाम एवं प्रभाव–

- आप ड्रेगन फ्रूट, सब्जी की नर्सरी एवं जैविक सब्जी विक्रय से प्रतिवर्ष लगभग ₹ 4.50 लाख आय अर्जित कर रहे हैं। वहीं पूर्व में परम्परागत विधि से खेती करते हुए आप प्रतिवर्ष लगभग ₹ 1.00 लाख की ही आय प्राप्त करते थे।

वर्ष 2020–21 में आपको आतमा द्वारा जिला स्तर पर ''किसान भूषण'' पुरस्कार प्रदान किया गया तथा पंतनगर किसान मेले में आपको ''प्रगतिशील कृषक सम्मान'' से सम्मानित किया गया।

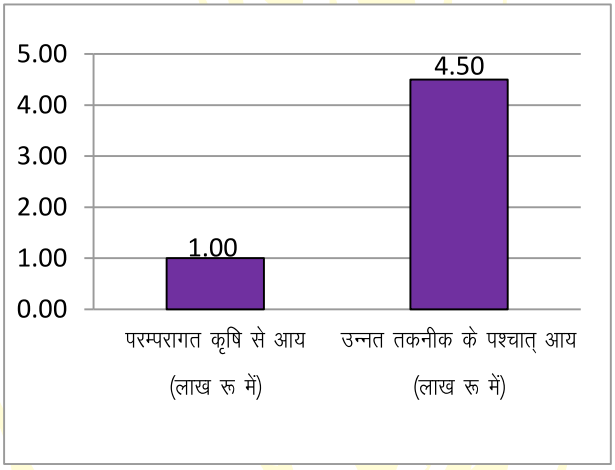

7.4 उन्नत कृषि से खुशियों की उड़ान

कृषक का नाम : श्री केदार सिंह
ग्राम–दाड़िमी, विकास खण्ड–लमगड़ा, जनपद–अल्मोड़ा

परिचय– श्री केदार सिंह इण्टर पास करने के बाद जनकपुरी डिस्ट्रिक सेन्टर, दिल्ली में रू. 10,000.00 की नौकरी करने लगे। परन्तु वहाँ का वातावरण उन्हें रास नहीं आ रहा था और अंततः वे गांव लौट आये। युवा कृषक श्री केदार सिंह ने गांव आने के बाद परम्परागत धान और गेहूं की खेती को दरकिनार करते हुए बेमौसमी सब्जियों का उत्पादन प्रारम्भ करने की ठानी। सब्जी उत्पादन की सही जानकारी न होने के कारण आपको बार–बार दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा था और कृषि विभाग व उद्यान विभाग का सहारा लेना पड़ रहा था। आप विपरीत परिस्थितियों से जुझते हुए धीरे–धीरे शिमला मिर्च, टमाटर और प्याज जैसी फसलों से सब्जी उत्पादन शुरू किये। इनके रूझान को देखते हुए पंत विश्वविद्यालय द्वारा तकनीकी सलाह एवं रेखीय विभागों द्वारा पर्याप्त सहयोग दिया गया, जो इन्हें कृषि के क्षेत्र में पारंगत बना दिया। इसी बीच आपको आतमा परियोजना के माध्यम से समेटी, पंतनगर में आयोजित होने वाले प्रशिक्षणों में जाने का मौका मिला। वहां सब्जी उत्पादन, बकरी पालन, मुर्गी पालन तथा पौधशाला प्रबन्धन जैसे अनेक प्रशिक्षणों में भाग लिया। वर्तमान में अपनी नर्सरी से आप स्थानीय बाजार में प्याज, शिमला मिर्च, बैंगन, टमाटर इत्यादि की पौध का विक्रय करने के साथ–साथ जैविक सब्जी का उत्पादन भी करते हैं। आमदनी बढ़ा तो आपने दो मत्स्य तालाब तथा बगीचे में कागज़ी नीबू, अमरूद, सेब तथा आड़ू के पौधे लगाये हैं, जिनमें आने वाले वर्षों में फलत होगी।

समेटी द्वारा किया गया योगदान–

1. समेटी पंतनगर द्वारा आयोजित विभिन्न प्रशिक्षणों यथा् सब्जी उत्पादन, कुक्कुट पालन, जैविक खेती, मत्स्य पालन इत्यादि में भाग लेने के साथ–साथ विभिन्न कृषि साहित्य प्रदान किया गया।
2. उत्तराखण्ड के कृषकों के बीच उनके द्वारा किये जा रहे कृषि कार्यों के बारे में पारस्परिक वार्ता एवं वीडियो के माध्यम से एक–दूसरे का कृषि कार्य देखकर बेहतर करने की प्रतिस्पर्धा।
3. समेटी, पंतनगर नामक व्हाट्सऐप ग्रुप में आपको जोड़ दिया गया, जिसके माध्यम से आप अपने कृषि सम्बन्धी समस्याओं का वैज्ञानिकों से सुझाव, आयोजित होने वाले प्रशिक्षणों की जानकारी एवं अन्य कृषकों से वार्ता कर बेहतर बाजार की जानकारी लेते रहते हैं।
4. एटिक हेल्पलाईन संख्या 05944–234810 का अधिकाधिक प्रयोग करते हुए कृषि सम्बन्धी समस्याओं का निराकरण।

परिणाम एवं प्रभाव–

- प्रशिक्षण के बाद फल एवं सब्जी उत्पादन में वैज्ञानिक विधियों का समावेश कर अधिक उपज मिलना प्रारम्भ हुआ।
- आपने अपने घर में ''किसान गृह उद्योग'' नामक मसाला यूनिट स्थापित की है, जिससे समय–समय पर लघु स्तर पर आय होती रहती है।
- आप स्थानीय बाजार में एक रेस्टोरेंट भी चलाते हैं, जिसमें अपने खेत की उत्पादित सब्जियों का प्रयोग कर अतिथियों को स्वादिष्ट व्यंजन परोसते हैं। रेस्टोरेंट से आपने लगभग चार–पाँच लोगों को रोजगार प्रदान किया है।
- आपको आतमा द्वारा वर्ष 2023 में मत्स्य पालन के क्षेत्र में ''किसान श्री'' पुरस्कार प्रदान किया गया।
- कार्य आरम्भ करने से पहले आपको आस–पास के लोग हतोत्साहित करते थे, परन्तु आपने हिम्मत नहीं हारी और फलस्वरूप आज आपकी सालाना आय ₹ 4 लाख तक हो जाती है। यही आप बताना नहीं भूलते हैं कि 6–7 वर्ष पूर्व जब कृषि प्रारम्भ किये थे उस समय इनकी वार्षिक आय मुश्किल से ₹ 30 हजार होती थी।
- गांव और आसपास की युवा पीढ़ी के लिए आज आप एक मिसाल बन गये हैं। आप कहते हैं कि ''कुछ किये बिना ही जय–जयकार नहीं होती, कोशिश करने वालो की कभी हार नहीं होती''।

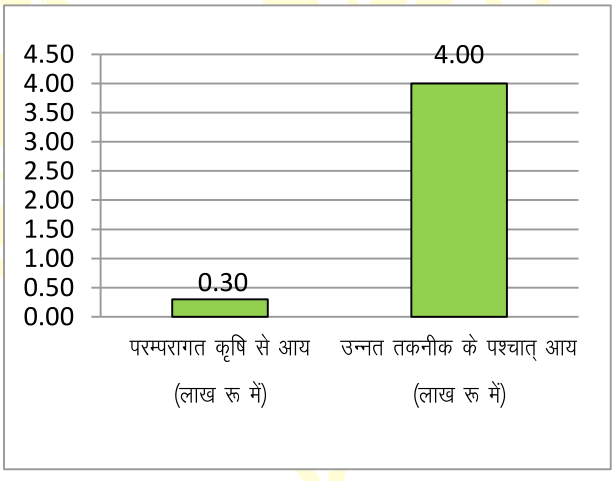

7.5 जीरो से हीरो बनने का सफर

कृषक का नाम : श्री जीवन सिंह बिष्ट
ग्राम–दीनी तल्ली तोक दड़माने, विकास खण्ड–धारी, जनपद–नैनीताल

परिचय– श्री जीवन सिंह बिष्ट जनपद–नैनीताल के रहने वाले 40 वर्षीय कृषक हैं। समुद्र तल से लगभग 2000 मीटर की ऊँचाई पर स्थित आपके गांव की कृषि पूर्णतया वर्षा आधारित है। श्री बिष्ट अपनी पुश्तैनी जमीन पर परम्परागत खेती जैसे धान, गेहूं, मंडुवा आदि की खेती कर अपना और परिवार का भरण–पोषण करते थे। यद्यपि इस परम्परागत खेती से आप बिलकुल खुश नहीं थे और वैज्ञानिक विधि से खेती करना चाहते थे। आप प्रायः सोशल मीडिया, अखबार इत्यादि से उन्नत बागवानी, सब्जी उत्पादन, बद्री गाय के महत्व के बारे में सुना करते थे। इसी क्रम में आप विकास खण्ड स्तरीय कृषि एवं उद्यान विभाग के अधिकारियों से मुलाकात हुई और आपने उनसे अपनी उन्नत कृषि सम्बन्धी जिज्ञासा व्यक्त करते हुए विभागीय प्रदर्शन संचालित करने का अनुरोध

किया। विभाग ने सहयोग करते हुए प्रशिक्षण हेतु समेटी, पंतनगर में नामांकित किया। यहाँ आपने अनेक प्रशिक्षणों में भाग लिया। ये प्रशिक्षण व विश्वविद्यालय के शोध केन्द्रों का भ्रमण जहाँ नवीनतम कृषि तकनीक प्रदर्शित थे, इनके लिए पथ प्रदर्शक बनें। वर्तमान में आप बागवानी, बेमौसमी सब्जी उत्पादन, बद्री गाय, भैंस, मौन पालन जैसे कृषि के घटकों से कुल शुद्ध लाभ लगभग ₹ 01 लाख वार्षिक प्राप्त करते हैं, जो आगामी दो वर्षों में तीन लाख से ऊपर होगी ऐसा आप बताते हैं।

समेटी द्वारा किया गया योगदान–

1. समेटी पंतनगर द्वारा आयोजित विभिन्न प्रशिक्षणों यथा् कुक्कुट पालन, मौन पालन, संरक्षित कृषि, जैविक खेती, मत्स्य पालन इत्यादि का साहित्य प्रदान किया गया।
2. सम्पूर्ण उत्तराखण्ड के कृषकों के बीच उनके द्वारा किये जा रहे कृषि कार्यों के बारे में पारस्परिक वार्ता एवं वीडियो के माध्यम से एक–दूसरे का कृषि कार्य देखकर बेहतर करने की प्रतिस्पर्धा।

3. व्हाट्सऐप ग्रुप द्वारा तकनीकी जानकारी का आदान–प्रदान, विषय से सम्बन्धित लेख की उपलब्धता।
4. एटिक हेल्पलाईन संख्या 05944–234810 का अधिकाधिक प्रयोग करते हुए कृषि सम्बन्धी समस्याओं का निराकरण।

परिणाम एवं प्रभाव–

- विभागीय सहयोग से सर्वप्रथम आपने कीवी, सेब, आड़ू, प्लम, खुबानी जैसे फल पौध अपने बगीचे में लगाये। बगीचे में ही सह फसल के रूप में सब्जी मटर, लहसुन, आलू, चना जैसे फसलों की भी खेती प्रारम्भ की।
- आपने बेमौसमी सब्जी उत्पादन, मौन पालन के साथ बद्री गाय की भी एक इकाई शुरू की, जिससे आपकी वार्षिक आय में अच्छा मुनाफा हुआ।
- आपकी सोच है कि अगर ग्रामीण युवा शहरों की ओर पलायन न कर गांव में ही कृषि सम्बन्धित छोटी–छोटी इकाई शुरू करें तो गांव का वास्तविक विकास होगा।
- प्रशिक्षण से प्राप्त कृषि सम्बन्धित आधुनिक तकनीकी ज्ञान को आप साथी किसानों के साथ साझा कर ग्रामीण युवा को प्रेरित करते रहते हैं।
- श्री जीवन सिंह बिष्ट बताते है कि पूर्व में जहाँ परम्परागत खेती से आपकी वार्षिक आय बमुश्किल ₹ 10–15 हजार होती थी, अब कृषि के विभिन्न उद्यमों से लगभग ₹ एक लाख वार्षिक लाभ होता है।

अन्त में कहा जा सकता है कि ये कहानी है श्री बिष्ट के ''जीरो से हीरो'' बनने की।

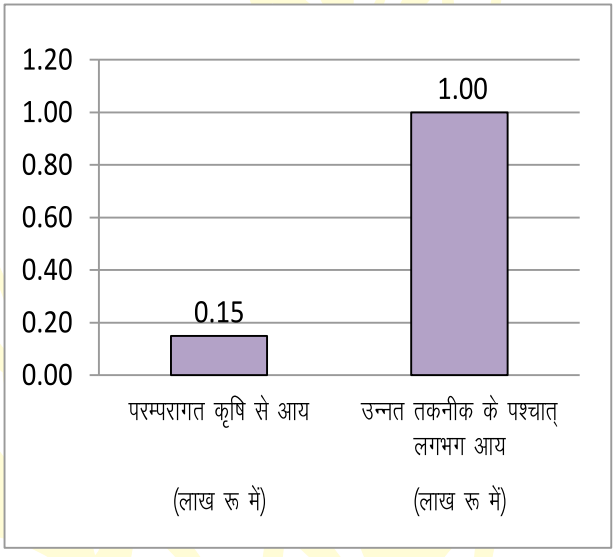

8. डिप्लोमा कोर्स–डेसी
(डिप्लोमा इन एग्रीकल्चरल एक्सटेंसन सर्विसेज फॉर इनपुट डीलर्स)

परिचय :

पूरे भारत में लगभग 2.82 लाख कृषि निवेश वितरक (इनपुट डीलर्स) हैं जो कृषकों को विभिन्न निवेश उपलब्ध कराने एवं उनके बीच नवीनतम कृषि तकनीक को लोकप्रिय बनाने के माध्यम होते हैं। कृषक समुदाय का प्रथम सम्पर्क केन्द्र कृषि निवेश वितरक ही होता है, जहाँ से वह विभिन्न निवेश क्रय के साथ ही उसकी प्रयोग विधि, कहाँ, कब, कैसे प्रयोग किया जाये आदि अनेक जिज्ञासाओं का समाधान जानने का प्रयास करता है। परन्तु निवेश वितरक अपने सीमित कृषि ज्ञान के कारण समुचित जानकारी नहीं दे पाता है, जिससे कृषक को कभी–कभी क्षति झेलनी पड़ जाती है। इस अतिमहत्वपूर्ण स्थिति को दृष्टिगत रखते हुए मैनेज, हैदराबाद द्वारा यह परिकल्पना किया गया कि यदि इन कृषि निवेश वितरकों को कृषि की मूलभूत तकनीक उपलब्ध करा दिया जाये तो ये तकनीक को कृषक समुदाय के मध्य लोकप्रिय बनाने में जागरूक पुल की भाँति काम कर सकते हैं।

मैनेज, हैदराबाद ने वर्ष 2003 में एक वर्शीय डिप्लोमा कोर्स प्रारंभ किया जो डेसी (डिप्लोमा इन एग्रीकल्चरल एक्सटेंसन सर्विसेज फॉर इनपुट डीलर्स) के नाम से जाना जाता है। वर्तमान में लगभग 63640 कृषि निवेश वितरक यह कोर्स पूरा कर कृषि तकनीक के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है। इसके अतिरिक्त वर्तमान में लगभग 21280 वितरक यह कोर्स कर रहे है जो भविष्य में कृषकों के लिए पथ प्रदर्शक बनेगें।

उद्देश्य :

1. क्षेत्र विशेषानुसार कृषि निवेश वितरकों को फसल / सब्जी / फल उत्पादन तकनीक / प्रक्षेत्र भ्रमण करा कर कीट–रोग के लक्षण, पहचान एवं नियंत्रण आदि से रूबरू कराना।
2. कृषि निवेश के समुचित उपयोग के बारे में क्षमता विकास कराना।
3. विभिन्न कृषि निवेशों संबंधी एक्ट / कानून के बारे में जानकारी / जागरूक करना।
4. गाँव अथवा कृषक स्तर पर इन वितरकों को कृषि के बारे में इतना दक्ष कर देना कि ये पैरा एक्सटेंशन प्रोफेशनल के रूप में कृषकों के बीच कार्य कर सकें।

क्रियान्वयन :

डेसी कोर्स की महत्ता एवं इसके बढ़ते लोकप्रियता को देखते हुए कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार ने यह निर्णय लिया है सभी राज्यों के कृषि निवेश वितरक यह कोर्स करें। इस कोर्स का शुल्क ₹ 20,000.00 है जिसका आधा यथा ₹ 10,000.00 / डीलर जबकि शेष आधा ₹ 10,000.00 मंत्रालय वहन करेगा। यद्यपि अनुदान का लाभ सिर्फ उन वितरको / डीलर को मिलेगा जिनके पास लाइसेंस होगा। अन्य को पूरा शुल्क ₹ 20,000.00 वहन करना होगा। कोर्स करने हेतु आवेदक को 10वीं पास होना चाहिए। प्रत्येक बैच में 40 डीलर पंजीकृत होते हैं। कोर्स में 40 दिन कक्षा एवं 08 दिन प्रायोगिक भ्रमण (कुल 48 दिन) कार्यक्रम निर्धारित रहता है। यह कोर्स संस्था एवं वितरकों के आपसी सहमति के आधार पर सप्ताह में किसी एक दिन जैसे रविवार अथवा बाजार बन्दी के दिन चलाया जाता है। कोर्स की क्रियान्वयन संस्था नोडल प्रशिक्षण संस्थान जैसे कृषि संस्थान, कालेज, कृषि विज्ञान केन्द्र, आत्मा, स्वयं सेवी संस्था हो सकती है, जिनका चयन राज्य स्तरीय गठित समिति द्वारा किया जाता है। इन संस्थाओं में कृषि के विशेषज्ञ होने चाहिए जो कृषि के विभिन्न विषयों पर डीलर्स को प्रशिक्षित कर सकें। ऐसे वितरक / डीलर जो यह कोर्स करना चाहते हों, वे कृषि विभाग, समेटी, मैनेज हैदराबाद इत्यादि से सम्पर्क कर विस्तृत

जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

कोर्स से आने वाला सम्भावित सकरात्मक बदलाव :

यह कार्यक्रम कृषि निवेश वितरक/डीलर हेतु एक वरदान की तरह है जो न सिर्फ उनके कृषि के कार्य कुशलता में वृद्धि करेगा बल्कि उनके स्वंय के खेती में लाभ प्रद होगा। देश में ज्यादातर डीलर जो कृषक समुदाय से होते हैं, अपने परिवार, गाँव व आस–पास के लोगों को कृषि संबंधी समुचित जानकारी देकर पैदावार एवं आर्थिक बढ़ोत्तरी में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकेंगे। इस कार्यक्रम से डीलरों का रेखीय विभाग के अधिकारी एवं कृषि वैज्ञानिकों से सम्पर्क बढ़ेगा जो परोक्ष एवं अपरोक्ष रूप में अनेक कृषि के विभिन्न तकनीकी ज्ञान, कृषि निवेश विक्रय संबंधी कानून/नियम आदि बढ़ाने में मददगार होगा। अन्ततः डीलर, विभागीय अधिकारी और वैज्ञानिकों का यह गठजोड़ कृषकों की समृद्धि बढ़ाने, आय दोगुनी करने एवं भविष्य उज्जवल करने में मददगार होगा।

समेटी–उत्तराखण्ड द्वारा संचालित डिप्लोमा कोर्स–डेसीः

संस्थान द्वारा डेसी के चार बैच क्रमशः प्रसार शिक्षा निदेशालय, पंतनगर द्वारा दो एवं कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर द्वारा दो बैच संचालित किये जा चुके हैं। चारों बैच से कुल 142 बीज, कीटनाशी एवं उर्वरक विक्रेताओं को प्रशिक्षित किया गया है।

9. प्रकाशित लेख

9.1 मैनेज पत्रिका–डेसी समाचार में प्रकाशित सफलता की कहानी

DAESI SAMACHAR

VOL. III ISSUE: II March-April, 2023

Inside the issue

- Review meeting on progress of DAESI programme and AUC submission with SAMETI Directors/SNOs of DAESI
- State level workshop for DAESI programme implementation at SIAET, Bhopal, Madhya Pradesh
- Orientation and review meeting for DAESI facilitators in Telangana State
- Visit of DAESI input dealers at MANAGE, Hyderabad
- Success story : DAESI – A path finder for input dealers

Director General's Message

The input dealers are an important means of information and input delivery to farmers. Integrating the input dealers into the mainstream extension by training them through a diploma program is a unique extension strategy demonstrated successfully in India. I am happy that every diploma holder is sensitized to engage themselves in serving the farmers with higher enthusiasm and motivation. Highlighting the importance of input dealers as para extension workers, there is a need of covering 50 thousand input dealers of the country under DAESI Diploma Programme in a span of one year.

I applaud the efforts of SAMETI Directors, State Nodal Officers for the wide reach of the programme. May the year 2023-24 will be more productive and rewarding in the implementation of DAESI Program in all the states.

Best wishes

[P. Chandrashekara]
Director General

VOL. III ISSUE: II March-April, 2023

MANAGE

Success Story : DAESI – A Path finder for Input Dealers

Rajkumar Huria, started his venture with the name 'Huria Khad Bhandar' in Lalpur, P.O. - Lalpur, Tehsil- Rudrapur, Distt: US Nagar, Uttarakhand in year 1999. He finished DAESI Diploma in Agriculture Extension Service for Input Dealers in the year 2021-22 from Govind Ballabh Pant University of Agriculture and Technology, Pantnagar (Uttarakhand). Previously, he was only running a retail shop of pesticides and was selling agricultural inputs. As an untrained input seller he was facing various types of problems on giving proper advice to farmers coming to his unit.

After getting enrolled and trained in DAESI, he learnt various practices on production technology of crops, vegetables and fruits, Mushroom production, Bee keeping, Organic farming, Seed act and Integrated Pest Management, Schemes of department of agriculture, horticulture and animal husbandry etc. He started working as an active para extension worker in the dissemination of agricultural knowledge in his village and started attracting more farmers to his shop by spreading the knowledge. Farmers in his area who were completely dependent on chemicals to control insect/pest or disease infestation, started following IPM techniques and there is a balance in use of chemicals to control disease and pest infestation.

Mr. Rajkumar Huria in his input shop

This course has been proved a boon to him with a rise in his income by 20 per cent. DAESI has enhanced his economic status as well as social status. Rajkumar expressed his gratitude towards DAESI course which is a key for the successful running of business and also thanked Govind Ballabh Pant University of Agriculture and Technology for their efforts in educating the input dealers in a righteous manner.

5

VOL. III ISSUE: II March-April, 2023

9.2 e-book jointly published by SAMETI-Uttarakhand and MANAGE, Hyderabad (ISBN No. 978-81-19663-41-5, available at www.manage.gov.in)

Dairy Management for Livelihood Support of Farmers

Edition 2024

Edited by
Dr. B.D. Singh
Dr. Jitendra Kwatra
Km. Jyoti Kanwal
Dr. Shahaji Phand
Dr. Sushrirekha Das

Directorate of Extension Education (SAMETI-Uttarakhand),
G.B. Pant University of Agriculture and Technology, Pantnagar
&
National Institute of Agricultural Extension Management, MANAGE, Hyderabad

Dairy Management for Livelihood Support of Farmers

Editors: Dr. B.D. Singh, Dr. Jitendra Kwatra, Km. Jyoti Kanwal, Dr. Shahaji Phand and Dr. Sushrirekha Das

Edition: 2024

ISBN: *978-81-19663-41-5*

Citation: Dr. B.D. Singh, Dr. Jitendra Kwatra, Km. Jyoti Kanwal, Dr. Shahaji Phand and Dr. Sushrirekha Das (2024). Dairy Management [E-book] Hyderabad: SAMETI, Uttarakhand & National Institute of Agricultural Extension Management, Hyderabad, India

Copyright © 2024, SAMETI, Uttarakhand, G.B. Pant University of Agriculture and Technology, Pantnagar & National Institute of Agricultural Extension Management & National Institute of Agricultural Extension Management, Hyderabad, India

This e-book is a compilation of resource text obtained from various subject experts of MCC, Chennai & MANAGE, Hyderabad, on "Dairy Management". This e-book is designed to educate extension workers, students, research scholars, academicians related to agriculture extension about the Women Entrepreneurship. Neither the publisher nor the contributors, authors and editors assume any liability forany damage or injury to persons or property from any use of methods, instructions, orideas contained in the e-book. No part of this publication may be reproduced or transmitted without prior permissionof the publisher/editors/authors. Publisher and editors do not give warranty for any error or omissions regarding the materials in this e-book.

Published for Dr. P. Chandra Shekara, Director General, National Institute of Agricultural Extension Management (MANAGE), Hyderabad, India by Dr. Srinivasacharyulu Attaluri, Program Officer, MANAGE and printed at MANAGE, Hyderabad as e-publication.

9.3 किसानों के लिए उपयोगी कृषि एडवायजरी

शहर ऊधमसिंह नगर

इस बार लीची का उत्पादन कम होने के आसार

उद्यान विशेषज्ञों ने उद्यान प्रबंधन व कीट बचाव की दी जानकारी

कृषि कार्यों के लिए दिशा-निर्देश जारी

अमर उजाला पंतनगर-खटीमा

गन्ने की सिंचाई के बाद टॉप ड्रेसिंग करें

वैज्ञानिकों ने प्रमुख कृषि कार्यों के लिए जारी की एडवाइजरी

इन बातों का ध्यान रखें किसान

खेती

पंत विवि के वैज्ञानिकों ने कृषि कार्यों के लिए जारी की एडवाइजरी

जेठी धान के लिए खेत तैयार करें किसान

ये भी महत्वपूर्ण

अमर उजाला खटीमा-पंतनगर-रुद्रपुर-काशीपुर

मंडुवा की बुवाई का ये सही समय

खेती किसानी

र-काशीपुर-पंतनगर-सितारगंज amarujala.com नैनीताल बुधवार, 19 अप्रैल 2023

आम झड़ने से बचाएं, अल्फानैप्थलीन का छिड़काव क

वैज्ञानिकों ने अप्रैल में दूसरे पखवाड़े के प्रमुख कृषि कार्यों के लिए जारी की एडवाइजरी

खेती किसानी

संवाद न्यूज एजेंसी

पंतनगर। जीबी पंत कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने अप्रैल के दूसरे पखवाड़े में किए जाने वाले प्रमुख कृषि कार्यों की एडवाइजरी जारी की है। निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ. अनिल कुमार शर्मा ने बताया कि आम के फलों को झड़ने से बचाने के लिए पानी में घोल बनाकर अल्फानैप्थलीन का छिड़काव करें। आम के गुम्मा रोग (मैंगो मॉलफारमेशन) से ग्रस्त पुष्प मंजरियों को काटकर जला दें।

डॉ. शर्मा ने बताया कि लीची आम, अमरूद, नीबू, अंगूर, बेर और पपीता की सिंचाई करते रहें। फली बेधक कीट के लिए डाईक्लोरोवास का घोल बनाकर छिड़काव करें। भिंडी और लोबिया में पत्ती खाने वाले कीट नियंत्रण के लिए क्यूनालफॉस का घोल बनाकर छिड़काव करें। लहसुन-प्याज को खोदने से 10-12 दिन पहले सिंचाई बंद कर दें। वर्षाकालीन बैगन के फसल की नर्सरी में बीज की बुवाई करें। कद्दूवर्गीय सब्जियों में चार-पांच दिनों के अंतराल पर सिंचाई और यूरिया की टॉप ड्रेसिंग करें।

अदरक, हल्दी और सूरन की बुवाई के बाद खेत को सूखे पुआल से ढक दें। अदरक और हल्दी के बीज को बुवाई पूर्व कॉपर ऑक्सीक्लोराइड के घोल में उपचारित करें। भिंडी, फ्रासबीन, खीरा, करेला, मिर्च, टमाटर, शिमला मिर्च में यूरिया की दूसरी मात्रा डालें। पर्वतीय क्षेत्र में टमाटर, शिमला मिर्च, खीरा, करेला, कद्दू, तीखी मिर्च, बैगन की तैयार पौध की रोपाई करें। भिंडी और फ्रासबीन की बौनी किस्मों की बुवाई करें। बीज वाली फूलगोभी में तना सड़न रोग की रोकथाम के लिए डायथेन के घोल का 15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें।

फसलों में यह करें किसान

पंतनगर। शरदकालीन गन्ना और पेड़ी में निराई-गुड़ाई, सिंचाई करें। जो किसान इस समय गन्ना लगाना चाहते हों वे इसकी बुवाई कूड़ से कूड़ की दूरी 60 सेमी रखते हुए शीघ्र पूरी करें। परिपक्व गेहूं, चना, मसूर, मटर, जौ की कटाई, मड़ाई, भंडारण करें। मूंग की बुवाई इस पखवाड़े में पूरी करें। इसे गन्ने के साथ सहफसल के रूप में भी लिया जा सकता है। फसल में तना मक्खी कीट की समस्या के लिए इमिडाक्लोप्रिड का घोल बनाकर छिड़काव करें। बरसीम और रिजका में चारे की कटाई कर लें। दो फीट की हो चुकी मक्का में सिंचाई बाद यूरिया की टॉप ड्रेसिंग करें। चारे वाला मक्का और ज्वार की बुवाई रबी फसलों की कटाई के तुरंत बाद कर लें। इनके साथ लोबिया की मिश्रित खेती की जा सकती है। ऊंचे पर्वतीय क्षेत्र में किसान धान की नर्सरी लगा सकते हैं। संवाद

10. कार्ययोजना–वर्ष 2024–25

अ. प्रस्तावित प्रशिक्षण कार्यक्रम

क्र. सं.	विषय	दिनांक/अवधि	विभाग	प्रतिभागियों की संख्या	प्रतिभागी
			अप्रैल, 2024		
1.	उन्नत खरीफ फसलोत्पादन तकनीक	अप्रैल 24–26, 2024 (तीन दिन)	कृषि विभाग	30	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 अधिकारी/प्रसार कार्यकर्ता/प्रगतिशील कृषक
			मई, 2024		
2.	आय वृद्धि हेतु कुक्कुट पालन	मई 08–11, 2024 (चार दिन)	पशुपालन विभाग	30	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 कुक्कुट फार्म स्कूलों के संचालक, पशुधन प्रसार अधिकारी, बी.टी.एम., कुक्कुट पालक
3.	उन्नत बकरी पालन	मई 29–31, 2024 (तीन दिन)	कृषि/उद्यान/पशुपालन विभाग	30	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 प्रगतिशील कृषक एवं विभागीय अधिकारी
			जून, 2024		
4.	जैविक फसल एवं सब्जी उत्पादन तकनीक	जून 05–08, 2024 (चार दिन)	कृषि/उद्यान विभाग	30	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 विभागीय अधिकारी, आतमा के अधिकारी एवं प्रगतिशील कृषक आदि
			जुलाई, 2024		
5.	उन्नत पशुपालन एवं दुधारू पशुओं का प्रबन्धन	जुलाई 10–13, 2024 (चार दिन)	पशुपालन/दुग्ध विकास विभाग	30	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 प्रगतिशील पशुपालक, आतमा/पशुपालन विभाग के अधिकारी
			अगस्त, 2024		
6.	मूल्यवर्धन से आय अर्जन	अगस्त 08–10, 2024 (तीन दिन)	उद्यान विभाग	30	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 नर्सरी पालक, आतमा के अधिकारी, उद्यान/कृषि विभाग के अधिकारी एवं प्रगतिशील कृषक
			सितम्बर, 2024		
7.	रबी फसलोत्पादन उन्नत तकनीक	सितम्बर 26–28, 2024 (तीन दिन)	कृषि/उद्यान विभाग	30	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 कृषि विभाग/आतमा के अधिकारी एवं प्रगतिशील कृषक
			अक्टूबर, 2024		
8.	बाजार आधारित प्रसार	अक्टूबर 23–25, 2024 (तीन दिन)	कृषि/उद्यान विभाग	30	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 प्रगतिशील कृषक/उद्यान/कृषि/आतमा के अधिकारी
			नवम्बर, 2024		
9.	ग्रामीण युवाओं हेतु स्वरोजगारपरक कुटीर उद्योग	नवम्बर 20–23, 2024 (चार दिन)	कृषि/उद्यान/सहकारी विभाग	30	कृषि/उद्यान/सहकारी विभाग के अधिकारी/आतमा एवं प्रगतिशील कृषक
10.	मौन पालनः स्वरोजगार का अतिरिक्त माध्यम	नवम्बर 27–30, 2024 (चार दिन)	कृषि/उद्यान विभाग	30	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 मधुमक्खी पालक/उद्यान/कृषि/आतमा के अधिकारी

क्र. सं.	विषय	दिनांक/अवधि	विभाग	प्रतिभागियों की संख्या	प्रतिभागी
			दिसम्बर, 2024		
11.	उन्नत मत्स्य पालन तकनीक	दिसम्बर 11–14, 2024 (चार दिन)	मत्स्य पालन विभाग	30	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 प्रगतिशील मत्स्य पालक/विभागीय अधिकारी
12.	उन्नत बकरी पालन	दिसम्बर 18–20, 2024 (तीन दिन)	कृषि/उद्यान/पशुपालन विभाग	30	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 प्रगतिशील कृषक एवं विभागीय अधिकारी
			जनवरी, 2025		
13.	व्यावसायिक मशरूम उत्पादन	जनवरी 15–18, 2025 (चार दिन)	कृषि/उद्यान विभाग	30	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 मशरूम उत्पादक, उद्यान, आतमा के अधिकारी एवं प्रगतिशील कृषक आदि
			फरवरी, 2025		
14.	डिजिटल कृषि	फरवरी 19–21, 2025 (तीन दिन)	कृषि विभाग	30	बागेश्वर, चम्पावत, रूद्रप्रयाग से 2–2 एवं शेष जनपदों से 3–3 कृषि विभाग के अधिकारी, प्रगतिशील कृषक आदि
			मार्च, 2025		
15.	पौधशाला प्रबन्धन	मार्च 05–07, 2025 (तीन दिन)	समस्त रेखीय विभाग	30	ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार एवं अल्मोड़ा से 3–3 व शेष जनपदों से 2–2 नर्सरी पालक एवं विभागीय अधिकारी

ब- Collaborative Training Programme with MANAGE: Year 2024-25

1- Goat farming-A profitable enterprise for farmers (June 20-22, 2024)

स- Collaborative Training Programme with EEI-Nilokheri: Year 2024-25

1- Role of Motivation and Communication in Transfer of Technology

समेटी–उत्तराखण्ड द्वारा आयोजित प्रशिक्षण, प्रदर्शन एवं भ्रमण कार्यक्रमों की यात्रा

उत्तराखण्ड के मुख्य कृषि अधिकारी/परियोजना निदेशक 'आतमा' की सूची

क्र.सं.	राज्य/जनपद स्तर	नोडल ऑफिसर का नाम	पदनाम	दूरभाष संख्या	ई–मेल आई.डी.
1.	राज्य स्तर	डा0 दिनेश कुमार	संयुक्त निदेशक एवं राज्य समन्वयक 'आतमा'	9412413372	dir.agri.uttarakhand@gmail.com dir-agri-ua@nic.in
2.	नैनीताल	श्रीमती लतिका सिंह	मुख्य कृषि अधिकारी / परियोजना निदेशक 'आतमा'	8979270239	caonainital@yahoo.co.in
3.	ऊधम सिंह नगर	डा0 अभय सक्सेना	मुख्य कृषि अधिकारी / परियोजना निदेशक 'आतमा'	9412017464	caousnagar@gmail.com
4.	अल्मोड़ा	श्री विनोद कुमार शर्मा	मुख्य कृषि अधिकारी / परियोजना निदेशक 'आतमा'	9758078891	caoalmora@gmail.com
5.	पिथौरागढ़	श्री अमरेन्द्र कुमार चौधरी	मुख्य कृषि अधिकारी / परियोजना निदेशक 'आतमा'	9412319543, 8171128778	caopithoragarh@yahoo.in
6.	बागेश्वर	श्री राजेन्द्र उप्रेती	मुख्य कृषि अधिकारी / परियोजना निदेशक 'आतमा'	8755330909	caobageshwar@yahoo.in
7.	चम्पावत	डा0 धनपत कुमार	मुख्य कृषि अधिकारी / परियोजना निदेशक 'आतमा'	8171419609	caochampawat@yahoo.co.in, caochp-agri-uk@gov.in
8.	देहरादून	डा0 देवेन्द्र सिंह राणा	मुख्य कृषि अधिकारी / परियोजना निदेशक 'आतमा'	9456601211	cao.deh.uk@gmail.com
9.	पौड़ी गढ़वाल	डा0 विकेश कुमार सिंह यादव	मुख्य कृषि अधिकारी / परियोजना निदेशक 'आतमा'	9412987380	cao.pauri00@gmail.com
10.	टिहरी गढ़वाल	डा0 विजय देवराड़ी	मुख्य कृषि अधिकारी / परियोजना निदेशक 'आतमा'	9412120961	caotehri@gmail.com
11.	चमोली	श्री लोकेन्द्र बिष्ट	मुख्य कृषि अधिकारी / परियोजना निदेशक 'आतमा'	9675477120	caocmi@gmail.com
12.	उत्तरकाशी	श्री जय प्रकाश तिवारी	मुख्य कृषि अधिकारी / परियोजना निदेशक 'आतमा'	9454768810	caouki.agri2011@gmail.com
13.	रूद्रप्रयाग	श्री लोकेन्द्र बिष्ट	मुख्य कृषि अधिकारी / परियोजना निदेशक 'आतमा'	9675477120	caorpg@gmail.com
14.	हरिद्वार	श्री गोपाल सिंह भण्डारी	मुख्य कृषि अधिकारी / परियोजना निदेशक 'आतमा'	9412922856	atmaharidwar2018@gmail.com

उत्तराखण्ड के विभिन्न कृषि विज्ञान केन्द्रों की सूची

क्र. सं.	जनपद का नाम	केन्द्र का नाम एवं पता	प्रभारी अधिकारी का नाम	सम्पर्क सूत्र		ई–मेल
				कार्यालय	मोबाइल नं0	
1.	चमोली	कृ.वि.के., ग्वालदम, जनपद–चमोली–246441	डा. एस.एस. सिंह, प्रभारी अधिकारी	01363-274287	9761969696 8475001596	kvkchamoli@rediffmail.com
2.	अल्मोड़ा	कृ.वि.के., मटेला (कोसी), जनपद–अल्मोड़ा–263643	डा. आर.के. शर्मा, प्रभारी अधिकारी	05962-241248	9412995904 8475001596	kvkalmora@gmail.com
3.	देहरादून	कृ.वि.के., ढकरानी, पो.–हर्बटपुर, जनपद–देहरादून–248001	डा. ए.के. शर्मा, प्रभारी अधिकारी	01360-224378	8475002277	kvkdehradun@gmail.com
4.	हरिद्वार	कृ.वि.के., धनौरी, जनपद–हरिद्वार–247667	डा. पुरूषोत्तम कुमार, प्रभारी अधिकारी	--	9411177299 8475002233	kvkharidwar@gmail.com
5.	नैनीताल	कृ.वि.के., ज्योलीकोट, जनपद–नैनीताल–263135	डा. सी. तिवारी, प्रभारी अधिकारी	05942-224547	7500241505 9412966838	kvknainital@rediffmail.com, vijaydoharey@gmail.com
6.	पिथौरागढ़	कृ.वि.के., गैंना–एंचोली, जनपद–पिथौरागढ़–262530	डा. जी.एस. बिष्ट, प्रभारी अधिकारी	--	9412344527	kvkpithoragarh@yahoo.com
7.	चम्पावत	कृ.वि.के., लोहाघाट, पो. –गलचौरा, जनपद–चम्पावत–262524	डा. दीपाली टी. पाण्डे, प्रभारी अधिकारी	--	8958737598	officerinchargekvklohaghat@gmail.com
8.	रूद्रप्रयाग	कृ.वि.के., जाखधार, वाया गुप्तकाशी, जनपद–रूद्रप्रयाग–246439	डा. संजय सचान, प्रभारी अधिकारी	--	9450410994	kvkjakh@rediffmail.com
9.	ऊधमसिंहनगर	गन्ना शोध एवं कृ.वि.के., बाजपुर रोड, काशीपुर, जनपद–ऊधमसिंहनगर–244713	डा. जितेन्द्र क्वात्रा, प्रभारी अधिकारी	--	7500241509	kvkkashipur@gmail.com
10.	बागेश्वर	कृ.वि.के., सिंदूरी बसखोला, काफलीगैर, जनपद–बागेश्वर–263628	डा. राजकुमार, प्रभारी अधिकारी	05963-255150	9558277433 6352035704	kvk.bageshwar@icar.gov.in
11.	उत्तरकाशी	कृ.वि.के., चिन्यालीसौंड़, जनपद–उत्तरकाशी–249196	डा. चित्रांग्द सिंह राघव, प्रभारी अधिकारी	01371-237198	9971290881 9012366559	kvk.uttarkashi@icar.gov.in
12.	पौड़ी गढ़वाल	वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली औद्यानिकी एवं वानिकी कृषि विष्वविद्यालय, कृ.वि.के., भरसार, वाया चिपलघाट, जनपद–पौड़ी गढ़वाल–246123	डा. रश्मि लिंबू, प्रभारी अधिकारी	01348-226076	9756388201	kvkpaurigarhwal@gmail.com
13.	टिहरी गढ़वाल	कृ.वि.के., रानीचौरी, वाया चम्बा, जनपद–टिहरी गढ़वाल–249199	श्री आलोक जी. येवले, प्रभारी अधिकारी	01376-252101	7302230101	kvktehrigarhwal@gmail.com

कृषि सूचना प्रौद्योगिकी केन्द्र, पंतनगर–हेल्पलाइन : 05944–234810 एवं 235580

एवं किसान कॉल सेन्टरः 1800–180–1551